हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● सोमवार ● 28.04.2025 ● वर्ष : 15 ● अंक : 274 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

एक नजर

कांग्रेस नेता राहुल गांधी 30 अप्रैल को करेंगे अमेठी का दौरा

अमेठी : कांग्रेस नेता और अमेठी के पूर्व सांसद राहुल गांधी अपने एकदिवसीय दौरे पर आगामी 30 अप्रैल बुधवार को अमेठी जनपद पहुंचेंगे। वे यहां कई कार्यक्रमों में भाग लेंगे और दोपहर बाद लखनऊ पहुंचेंगे और जहां से वे शाम को दिल्ली के लिए रवाना होंगे। यह जानकारी रविवार को अमेठी क्षेत्र के सांसद किशोरी लाल शर्मा ने दी है। उन्होंने बताया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी 30 अप्रैल को दोपहर पौने 1 बजे अमेठी जनपद के मुंशीगंज स्थित इंडो रशियन राइफल प्राइवेट लिमिटेड गन फैक्टरी पहुंचेंगे। यहां वे ऑर्डिनेंस फैक्टरी का करीब 1 घंटे तक भ्रमण करेंगे। इसके उपरांत राहुल गांधी का मुंशीगंज स्थित संजय गांधी अस्पताल के गेस्ट हाउस में 1 घंटे का रिजर्व कार्यक्रम है। ऐसा माना जा रहा है कि इस दौरान वह लंच और विश्राम करेंगे। उन्होंने बताया कि राहुल गांधी दोपहर 2 बजकर 50 मिनट से लेकर 3 बजकर 50 मिनट तक संजय गांधी अस्पताल में रहेंगे। यहां वे ओपन हार्ट सर्जरी ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन करेंगे। इसी के साथ वह इंदिरा गांधी नर्सिंग कॉलेज की नई एंबुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

मणिपुर में प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े 12 उग्रवादी गिरफ्तार

इंफाल : मणिपुर में सुरक्षा बलों और पुलिस ने इंफाल ईस्ट और इंफाल वेस्ट जिलों में अलग-अलग अभियानों में 12 उग्रवादियों को गिरफ्तार किया है। संयुक्त राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा (पाम्बेई धड़ा) के चार कैडर और एक सहयोगी वांगखई थांगपट मापन से पकड़े गए हैं। पुलिस मुख्यालय के बयान के अनुसार गिरफ्तार आरोपितों की पहचान वांगमयुम अजीजुर रहमना (52), शेख वसीम राजा (30), मो. फारुक खान (19), फुशम अजमीर (24) और खुल्लकपम इबोसाना (44) के रूप में हुई है। ये सभी जबरन वसूली और स्थानीय लोगों को डराने-धमकाने में शामिल थे। आरोपितों के पास से जिंदा कारतूस, मोबाइल फोन और एक चार पहिया वाहन बरामद किया गया।

यूक्रेन ने बम से उड़ाया रूसी जनरल को एक गिरफ्तार

मास्को : रूसी जनरल को बम विस्फोट में उड़ाने के मामले में सनसनीखेज खुलासा हुआ है। पता चला है कि यूक्रेन के एक खुफिया अधिकारी ने ही रूसी जनरल की कार में विस्फोट करके उड़ा दिया था। यह विस्फोट रिमोट कंट्रोल के जरिए किया गया था। इस मामले में रूस की जांच एजेंसियों ने यूक्रेन की खुफिया एजेंसी के अधिकारी इग्नात कुजिन को गिरफ्तार कर लिया है। पुतिन के करीबी मेजर जनरल यारोस्लाव मोस्कालिक शनिवार को अपनी कार में बैठने जा रहे थे। तभी कार में भारी विस्फोट हो गया, जिसमें मेजर जनरल की मौके पर ही मौत हो गई थी। यह घटना रूस के बाल सिखा इलाके में हुई। रूस की फेडरल सिक्योरिटी सर्विस के मुताबिक यह हमला यूक्रेन से ही रिमोट कंट्रोल के जरिए किया गया। इस वारदात में यूक्रेन की खुफिया एजेंसी के अधिकारी इग्नात कुजिन का हाथ पाया गया। उसे शनिवार की देर रात गिरफ्तार कर लिया गया। मामले की तफ्तीश जारी है।

मन की बात : पहलगाम में हुए आतंकी हमले के पीड़ित परिवारों को मिलेगा न्याय : पीएम

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के पीड़ित परिवारों को न्याय अवश्य मिलेगा और हमले के साजिशकर्ताओं को कठोरतम दंड दिया जाएगा। पूरा देश पीड़ित परिवारों के साथ खड़ा है और आतंकवाद के खिलाफ 140 करोड़ भारतीयों की एकजुटता इस लड़ाई की सबसे बड़ी ताकत है। मन की बात के 121वें में एपिसोड में प्रधानमंत्री ने कहा, आज दुनिया देख रही है कि इस हमले के बाद भारत एक स्वर में आतंक के खिलाफ खड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि वैश्विक नेताओं ने भी भारत के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करते हुए हमले की कठोर निंदा की है। मोदी ने आतंकी हमले को जम्मू-कश्मीर में लौटती शांति और विकास को बाधित करने की नाकाम कोशिश करार दिया।

उन्होंने कहा कि कश्मीर में हो रहे सकारात्मक बदलाव आतंकवाद के समर्थकों को रास नहीं आए, इसलिए इस प्रकार की कायरतापूर्ण साजिश रची गई। इतिहास से प्रेरणा लेते हुए प्रधानमंत्री ने 'चंपारण सत्याग्रह' की गाथा साझा की, जिसमें महात्मा गांधी और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में किसानों के अधिकारों के लिए ऐतिहासिक संघर्ष हुआ था। उन्होंने युवाओं से 'सत्याग्रह इन चंपारण' पुस्तक पढ़ने का आग्रह भी किया। उन्होंने कहा कि 1917, अप्रैल और मई के दो महीने - देश में आजादी की एक अनोखी लड़ाई लड़ी जा रही थी। अंग्रेजों के अत्याचार उफान पर थे। गरीबों, वंचितों और किसानों का शोषण अमानवीय स्तर को भी पार कर चुका था। बिहार की उपजाऊ धरती पर ये अंग्रेज किसानों को नील की खेती के लिए मजबूर कर रहे थे। प्रधानमंत्री ने 'सचेत ऐप' के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं में सतर्कता बढ़ाने की पहल की जानकारी भी साझा की। यह एप्लिकेशन लोगों को बाढ़, भूकंप, चक्रवात जैसी आपदाओं के समय अलर्ट भेजता है। सेवा और मानवीयता की भावना को रेखांकित करते हुए प्रधानमंत्री ने म्यांमार में भूकंप के बाद भारत द्वारा चलाए गए 'ऑपरेशन ब्रह्मा' का उल्लेख किया। साथ ही इथियोपिया में भारतीय प्रवासियों द्वारा हृदय रोग से पीड़ित बच्चों के इलाज के प्रयासों की भी प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि भारत ने अफगानिस्तान और नेपाल को जीवनरक्षक वैक्सीन और दवाओं की आपूर्ति कर अपनी वैश्विक मानवता में भूमिका को निभा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में देश के महान वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और कहा कि देश की निःस्वार्थ सेवा और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने भारत की सफल अंतरिक्ष कार्यक्रम का एक बार फिर सराहना की। उन्होंने बताया कि भारत आज गगनयान, स्पैडेक्स, चंद्रयान-4, वीनस ऑर्बिटर मिशन और मार्स लैंडर मिशन जैसी परियोजनाओं में सक्रियता से कार्य कर रहा है। उन्होंने इसरो और भारत के स्पेस स्टार्टअप्स की भी सराहना की जो देश को एक वैश्विक स्पेस पावर बनाने में योगदान दे रहे हैं। विज्ञान और नवाचार पर बात करते हुए उन्होंने छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा विज्ञान केंद्र और गुजरात साइंस सिटी का उल्लेख किया, जहां विज्ञान के प्रति बच्चों और युवाओं में नया उत्साह भरने का काम किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रधानमंत्री ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के बारे में बताया, जिसके तहत देशभर में 140 करोड़ से अधिक पेड़ लगाए गए हैं। उन्होंने गुजरात के अहमदाबाद में हरियाली के बढ़ते क्षेत्र और ग्लोबल वॉर्मिंग से लड़ने में उसकी भूमिका को सराहाना की। खेती में नवाचार का उदाहरण देते हुए प्रधानमंत्री ने कर्नाटक के बागलकोट के श्रीशैल तेली का उल्लेख किया, जिन्होंने मैदानों में सेब की सफल खेती कर मिसाल पेश की है।

चतरा में दर्दनाक सड़क हादसा तीन महिलाओं की हुई मौत

शादी के चार दिन बाद होमगार्ड जवान ने पत्नी को खोया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चतरा : चतरा जिले के इटखोरी-चतरा मुख्य मार्ग पर एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ, जिसमें तीन महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो बच्चों समेत सात लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। यह हादसा राजपुर थाना क्षेत्र के गंधरिया गांव के पास हुआ, जहां भद्रकाली मंदिर से पूजा कर लौट रहे श्रद्धालुओं से भरी एक स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। हादसे के बाद घायलों को ग्रामीणों और पुलिस की मदद से सदर अस्पताल लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें रांची रिम्स रेफर कर दिया गया। सभी की हालत गंभीर बनी हुई है। हादसे में मारे गए और घायल हुए लोग एक ही परिवार से थे, जो लावालौंग थाना क्षेत्र के रखेद गांव के निवासी हैं। इस हादसे के बारे में बताया जा रहा है कि चालक को नींद आ गई थी, जिसके कारण गाड़ी अनियंत्रित हो गई। गाड़ी चला रहे चालक ओडिशा पुलिस में होमगार्ड जवान हैं, जिन्होंने इस हादसे में अपनी पत्नी को खो दिया। यह जवान चार दिन पहले ही शादी के बंधन में बंधे थे और ससुराल वालों के साथ भद्रकाली मंदिर दर्शन के लिए गए थे। अब इस जवान के लिए यह हादसा एक गहरे सदमे से कम नहीं है। स्थानीय पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है और हादसे के कारणों की गहराई से जांच की जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि स्कॉर्पियो की रफ्तार तेज थी, और संभावना है कि चालक को झपकी आने के कारण यह दुर्घटना हुई। इस हादसे ने पूरे गांव में शोक का माहौल पैदा कर दिया है, और गंभीर रूप से घायल लोगों की हालत को लेकर परिवार में चिंता बनी हुई है।

मध्य प्रदेश में बाइक को टक्कर मारकर कुएं में गिरी वैन, 10 लोगों की मौत

एजेंसी

मंदसौर : मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में नारायणगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम काचरिया चौपाटी के पास रविवार दोपहर श्रद्धालुओं से भरी एक तेज रफ्तार ईको वैन मोटरसाइकिल को टक्कर मारने के बाद कुएं में जा गिरी। इस हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई है, जबकि चार घायल हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से रेस्क्यू शुरू किया। एसडीईआरएफ की टीम को भी मौके पर बुलाया गया। टीम रस्सियों के सहारे कुएं में उतरी और क्रेन की मदद से वैन को निकाला। रविवार को रतलाम जिले के ग्राम जोगिपिपलिया और खोजनखेड़ा से

वैन में 13 लोग सवार होकर सभी नीमच जिले के मनासा क्षेत्र के आंतरी माता मंदिर दर्शन के लिए जा रहे थे। इस दौरान नारायणगढ़ थाना क्षेत्र में दोपहर करीब सवा एक बजे ग्राम काचरिया चौपाटी के पास बूढ़ा-टकरावत फंटे पर वैन बेकाबू होकर एक बाइक को टक्कर मारते हुए कुएं में जा गिरा। हादसे में बाइक सवार एक यात्री की मौके पर मौत हो गई। बाइक सवार की पहचान आबाखेड़ी निवासी गोबर सिंह के तौर पर हुई है। हादसे में कुल 10 लोगों की मौत हुई है। मृतकों में कार सवारों को बचाने के लिए कुएं में उतरा ग्रामीण मनोहर सिंह भी शामिल है। हादसे में चार लोग घायल हैं, जिन्हें रेस्क्यू कर मंदसौर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलने पर उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, कलेक्टर अदिति गर्ग, एसपी अभिषेक आनंद, एसडीओपी नरेंद्र सोलंकी मौके पर पहुंच गए थे।

झारखंड के युवा बना सकते हैं देश और दुनिया में अपनी एक अलग पहचान : दीपिका पांडेय

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : ग्रामीण विकास मंत्री, दीपिका पांडेय ने कहा कि, झारखंड के युवाओं ने यह साबित कर दिया है कि यदि अवसर और उचित मार्गदर्शन मिले, तो वे देश और दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना सकते हैं। हम सभी को आप पर गर्व है। सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह न केवल आपके कौशल विकास में सहयोग करे, बल्कि आपकी सुरक्षित और सम्मानजनक आजीविका सुनिश्चित करने में भी हर संभव मदद करे। इस अवसर पर उन्होंने सभी अभ्यर्थियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी। कार्यक्रम में डीडीयू-जीकेवाई पर आधारित विशेष पुस्तक कौशल विकास से आत्मनिर्भरता की ओर का विमोचन किया गया। दीपिका

पांडे ने कहा कि झारखंड सरकार राज्य के युवाओं की कौशल विकास और उन्नति के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि सरकार हर कदम पर उनके साथ है, चाहे वे झारखंड में हों या देश के किसी अन्य हिस्से में। दीपिका पांडेय रविवार को झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी, ग्रामीण विकास विभाग, द्वारा बेंगलुरु में आयोजित डीडीयू-जीकेवाई के अंतर्गत प्लेस्ड अभ्यर्थियों के लिए एक एलुमनी मिलन समारोह-2025 को संबोधित कर रही थीं। मंत्री पांडेय ने जेएसएलपीएस द्वारा डीडीयू-जीकेवाई योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की सराहना करते हुए कहा कि इस फ्लैगशिप कार्यक्रम ने झारखंड के हजारों युवाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया है। मंत्री महोदया ने विशेष रूप से बेंगलुरु में जेएसएलपीएस द्वारा स्थापित माइग्रेशन सपोर्ट सेंटर का उल्लेख किया, जो झारखंड के बाहर कार्यरत युवाओं को सहयोग प्रदान करने में अहम भूमिका निभा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश के विभिन्न भागों में कार्यरत झारखंड के युवाओं को एक साझा मंच प्रदान करना था, जहां वे अपने अनुभव साझा कर सकें, एक-दूसरे से संवाद कर सकें और अपने विकास की यात्रा का उत्सव मना सकें। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के कुशल और संवेदनशील नेतृत्व में झारखंड सरकार अपने हर युवा विशेषकर महिलाओं को कौशल विकास के जरिए आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है, इसी कड़ी में जेएसएलपीएस द्वारा अबतक 85 हजार से ज्यादा युवाओं को निःशुल्क कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया गया है।

फेसबुक पर दोस्ती कर दो बच्चों की मां ने युवक को बनाया हनीट्रैप का शिकार, अबतक लाखों की उगाही

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : जमशेदपुर के टेल्को थाना क्षेत्र की रहने वाली एक विवाहित दो बच्चों की मां ने सऊदी अरब में काम कर रहे एक युवक को हनीट्रैप का शिकार बनाया है। महिला ने युवक को अपने जाल में फंसा कर अबतक लाखों रुपये की उगाही की है। युवक ने इस पूरे मामले को लेकर आदित्यपुर थाने में लिखित शिकायत दर्ज करायी है। शिकायत के अनुसार, फेसबुक के माध्यम से

महिला ने पहले युवक से दोस्ती की। इसके बाद उसे हनीट्रैप का शिकार बनाया गया। दरअसल, आदित्यपुर थाना क्षेत्र के रहने वाले मांझीटोला निवासी शुभम दास ने 6 माह पूर्व बीटेक की पढ़ाई पूरी कर सऊदी अरब के एक बड़े कंस्ट्रक्शन कंपनी में नौकरी हासिल की। इस बीच टेल्को की रहने वाली शादीशुदा महिला ने उसे अपना फेसबुक फ्रेंड बनाया। फिर हनीट्रैप का जाल बिछाकर युवक को अपने चंगुल में फांस लिया। इसके बाद महिला ने युवक से 2.30 लाख की उगाही की। करीब 58,000 की ऑनलाइन शॉपिंग भी की। फिर महिला के दबाव में आकर युवक ने 4 जनवरी को सऊदी अरब में नौकरी छोड़ दी। उसके सेटलमेंट के रूप में 2.30 लाख रुपये मिले थे। इसे भी महिला ने अपने पास रख लिया। इतना ही नहीं, 4 जनवरी को कोलकाता एयरपोर्ट से युवक को महिला जबरन अपने साथ होटल ले गयी। वहां साथ में रहकर उसके पैसे ले लिए और एक साथ रहने के कुछ तस्वीरें अपने मोबाइल फोन में कैद कर ली।

महाराष्ट्र से 5023 पाकिस्तानी नागरिकों को बाहर निकाला जाएगा : देवेंद्र फडणवीस

एजेंसी

मुंबई : मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रविवार को पुणे में कहा कि महाराष्ट्र में रह रहे 5023 पाकिस्तानी नागरिकों को आज रात तक बाहर निकाल दिया जाएगा। इन सभी पाकिस्तानियों को महाराष्ट्र से बाहर निकालने की प्रक्रिया युद्ध स्तर पर जारी है। गृह विभाग के सूत्रों के अनुसार महाराष्ट्र के कुल 48 शहरों में कुल 5023 पाकिस्तानी नागरिक पाए गए हैं। सबसे अधिक 2,458 पाकिस्तानी नागपुर शहर में और 1,106 पाकिस्तानी नागरिक ठाणे शहर में पाए गए हैं। जबकि मुंबई में 14 पाकिस्तानी नागरिक रह रहे हैं। महाराष्ट्र में रह रहे इन पाकिस्तानियों में से केवल 51 पाकिस्तानियों के पास ही वैध दस्तावेज प्राप्त हुए हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि महाराष्ट्र आए 107 पाकिस्तानी नागरिक लापता हैं। बताया गया कि पुलिस या अन्य संस्थाएं 107 पाकिस्तानियों का कोई पता नहीं लगाया जा सका। हालांकि मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस इसे नकार दिया है। उन्होंने कहा कि मैं गृह मंत्री के तौर पर आपसे कह रहा हूं कि इस बारे में झूठी खबरें न फैलाएं। एक भी पाकिस्तानी नागरिक लापता नहीं था। सभी पाकिस्तानी मिल गये हैं। सभी को बाहर निकालने की व्यवस्था कर दी गई है। राज्य में कोई भी पाकिस्तानी नागरिक नहीं बचेगा। मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने स्पष्ट किया कि सभी को आज शाम या कल तक वापस भेज दिया जाएगा।

भारत से 537 नागरिक पाकिस्तान लौटे, 850 भारतीय आए वापस

एजेंसी

चंडीगढ़ : भारत में वीजा अवधि समाप्त होने के बावजूद रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की वापसी का सिलसिला जारी है। रविवार शाम तक 537 पाकिस्तानी नागरिक अटारी-वाघा बार्डर के रास्ते पाकिस्तान वापस गए हैं। वहीं आज तक 850 भारतीय पाकिस्तान से वापस आ चुके हैं। केंद्र सरकार ने पाकिस्तानी नागरिकों की वापसी के लिए दो दिन का समय और बढ़ा दिया है। पिछले चार दिन से अटारी-बाघा बार्डर पर लोगों का जमघट लगा है। अपने मुल्क लौटने वाले हरेक के मन में

पीड़ा-टीस और आक्रोश है। पीड़ा-टीस इसलिए कि कुछ लोगों के कारण दोनों मुल्कों के रिश्ते खराब हुए और उसका खामियाजा आम लोगों को भुगतना पड़ रहा है। दिल्ली की रहने वाली और पाक में ब्याही राबिका वतन वापसी के दौरान काफी आक्रोशित दिखाई दी। वह बीते पांच सालों से मायके आने के लिए वीजा अप्लाई करती रहीं लेकिन नहीं दिया गया। इस बीच उनकी मां, दो भाई और भतीजे की मौत हो गई, लेकिन उस दौरान भी उनको नहीं आने दिया गया। उन्होंने बताया कि इस बार उनको 45 दिन का वीजा मिला और मायके आईं लेकिन दो दिन में ही वापसी करनी पड़ रही है। वह दोनों ही सरकारों को कोसती हुई वापस चली गईं। उधर, पाकिस्तान के सिंध प्रांत से आए हिंदुओं का एक दल रविवार को भारत लौट आया। सिंध प्रांत के रहने वाले इस दल में 45 व्यस्क व 15 बच्चे थे। दल में शामिल कांति लाल, किशन लाल और चूनी ने बताया कि वह लोग दो महीने पहले घूमने आए थे। गुरदासपुर, अमृतसर, फिरोजपुर और पंजाब के अन्य सीमावर्ती जिलों से भी कई पाकिस्तानी नागरिक आज सीमा की ओर रवाना हुए हैं। अधिकारियों ने हर स्थान पर दस्तावेजों की जांच की ताकि कोई भी बिना अनुमति भारत में न रह सके। अटारी बार्डर पर तैनात पंजाब पुलिस के प्रोटोकॉल ऑफिसर अरुण कुमार के अनुसार रविवार, को 237 के करीब पाकिस्तानी नागरिक अटारी- बाघा बार्डर के रास्ते पाकिस्तान वापस हुए हैं। 116 भारतीय आज इस रास्ते से भारत वापस लौटे हैं। अभी तक कुल 537 के करीब पाकिस्तानी नागरिक वापस जा चुके हैं और 850 के करीब भारतीय नागरिक भी वापस लौट चुके हैं।

ईरान के प्रमुख बंदरगाह पर भीषण विस्फोट, 25 की मौत, 800 घायल

एजेंसी

ईरान : ईरान के एक प्रमुख बंदरगाह पर हुए भीषण विस्फोट में कम से कम 25 लोगों की मौत हुई है और 800 लोग घायल हुए हैं। यह विस्फोट शनिवार सुबह दक्षिणी शहर बंदर अब्बास के पास देश के सबसे बड़े वाणिज्यिक बंदरगाह शाहिद राजाई बंदरगाह में हुआ। ब्लास्ट से आस-पास की इमारतों की खिड़कियां और छतें उड़ गईं और कारें नष्ट हो गईं। स्थानीय निवासियों ने बताया कि विस्फोट का असर 50 किमी (31 मील) दूर तक महसूस किया गया। सरकारी मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, छह लोग लापता हैं। फारस की खाड़ी के किनारे और होर्मुज जलडमरूमध्य के पास स्थित, शाहिद राजाई बंदरगाह, ईरान का सबसे बड़ा कंटेनर हब है, जो देश की लगभग 80% कंटेनर गतिविधियों को संभालता है। क्षेत्र में मौजूद एक व्यक्ति ने ईरानी सरकारी टीवी को बताया, पूरा गोदाम धुएं, धूल और राख से भर गया। मुझे याद नहीं है कि मैं टेबल के नीचे गया या विस्फोट के कारण वहां फेंका गया।

एक नजर

शाबाश इंडिया के कलाकार सैयद नासिक ने बाल से खींचकर बोलेरो चलाया

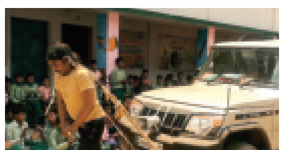

बड़कागांव : पीएम श्री मध्य विद्यालय में हजारीबाग वन पश्चिम प्रमंडल द्वारा बिरसा हरित चेतना का आयोजन किया गया। इसका नेतृत्व बड़कागांव वन समिति के अध्यक्ष बालेश्वर महतो ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधानाध्यापक अशोक कुमार ने किया। मौके पर बालेश्वर महतो ने कहा कि झारखंड सरकार द्वारा पूरे राज्य में बिरसा हरित चेतना अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत पूरे झारखंड के गांव देहात में नुक्कड़ नाटक ,भाषण के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है । प्रधानाध्यापक अशोक कुमार ने कहा कि जंगलों में आग नहीं लगाया जाए ।पौधे लगाकर एक देखभाल किया जाए ।इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र से आए हुए शाबाश इंडिया के सैयद नासिक ,साबिर सैय्यद ,सलीम सैयद, अलीम सैयद ने बाल से बोलोरो वाहन को खींचकर चलाया ।आंख की पुतली से कुर्सी एवं दांत से 30 किलो का पत्थर उठाया।

नो पार्किंग में खड़े वाहनों से वसूला गया जुर्माना

झुमरीतिलैया : नगर परिषद झुमरीतिलैया के द्वारा लगातार शहर में अतिक्रमण अभियान के साथ-साथ नो पार्किंग में खड़े वाहनों से जुमार्ना वसूला जा रहा है शनिवार को स्टेशन रोड से झंडा चौक ओवर ब्रिज के दोनों ओर नो पार्किंग में खड़े वाहनों से जुमार्ना वसूला गया। नगर प्रबंधक लेमांशु कुमार ने कहा कि शहर के जितने भी दुकानदार एवं संस्थान के मालिक हैं वह अपने दुकानों के आगे चार पहिया एवं दोपहिया वाहन ना लगने दे। वाहन खड़ी करने के लिए नगर परिषद द्वारा जगह-जगह पर पार्किंग स्थल निर्धारित किया गया है वही अपने वाहन को पार्क करें अन्यथा वाहन को जप्त करते हुए जुमार्ना वसूला जाएगा। यह अभियान देर रात तक चलाया गया । जिसमें दर्जनों दो पहिया ,चार पहिया वाहन एवं टोटो से जुमार्ना वसूला गया। अभियान में राजस्व निरीक्षक अभिषेक कुमार मेहता, मुकेश राणा,रौशन कुमार समेत नप के होमगार्ड के जवान मौजूद थे।

ऑपरेशन सतर्क के तहत शराब की हुई बरामदगी

कोडरमा : निरीक्षक प्रभारी/कोडरमा के नेतृत्व में सहायक उप निरीक्षक/वशिष्ठ नारायण यादव साथ आरक्षी/जितेंद्र कुमार 1 तथा आरक्षी/राजेश कुमार सभी रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट कोडरमा के बल सदस्य कोडरमा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म संख्या 4/5 पर समय करीब 12:50 बजे गश्त कर रहे थे गस्ती के क्रम में जब वह प्लेटफार्म पर कालका एण्ड स्थित यात्री शेड के पास पहुंचे तो एक हरा रंग का बैग संदिग्ध अवस्था में रखा हुआ देखा गया। उक्त बैग के बाबत आसपास बैठे यात्रियों से पूछा गया तो किसी भी यात्री के द्वारा उसे अपना दावा पेश नहीं किया गया लिहाजा शंका के आधार पर बैग को वहीं पर चेक किया गया, तो उसके अंदर रखा हुआ कुल 24 अदद जिसमें प्रत्येक की क्षमता 500 मिलीलीटर एवं प्रत्येक की कीमत 150 रुपए अंकित पाया गया इसके बाद मौके पर ही सहायक उप निरीक्षक/वशिष्ठ नारायण यादव रेलवे सुरक्षा बल पोस्ट कोडरमा के द्वारा उपलब्ध गवाहों के समक्ष उपयुक्त सभी बियर को समय 13:00 बजे जप्ती सूची बनाते हुए जप्त किया गया।

केंद्र सरकार समाज में वैमनस्य फैलाकर समाज को हिंदू मुस्लिम में विभक्त कर रही है : यशवंत सिन्हा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : अटल विचार मंच की बैठक डेमोटांड हजारीबाग स्थित ऋषभ वाटिका में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता अटल विचार मंच के वरिष्ठ कार्यकर्ता प्रकाश मिश्रा ने किया। बैठक का संचालन दीपक नाथ सहाय ने किया। इस महत्वपूर्ण बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में हजारीबाग लोकसभा के पूर्व सांसद सह भारत सरकार के पूर्व वित्त विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा उपस्थित हुए। सर्वप्रथम पहलगाम में हुए निदोर्षों की हत्या पर दुख जताते हुए मृत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना किया कि मृतक की आत्मा को शांति प्रदान करें और उनके परिवार को इस अपार दुख की घड़ी में दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें। आज की बैठक

संगठन के विस्तारी करण को लेकर हुई। इसमें अटल विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष को लेकर चर्चा हुई। अटल विचार मंच की वरिष्ठ नेत्री प्रियम्बदा ने राष्ट्रीय अध्यक्ष पद के लिए अटल विचार मंच के संस्थापक सह हजारीबाग के पूर्व सांसद सह पूर्व केंद्रीय वित्त एवं विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा के नाम का प्रस्ताव बैठक में रखा जिसे उपस्थित कार्यकताओं ने ध्वनि मत से पारित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में यशवंत सिन्हा को पूर्ण अधिकार दिया गया कि वह संगठन का विस्तार करते हुए अटल विचार मंच को राजनीतिक पार्टी के रूप में निबंध करवाने की अग्रतर कार्रवाई करें। इस अवसर पर प्रकाश मिश्रा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि अटल विचार मंच राष्ट्रीय स्तर पर अपने आप को स्थापित कर एक नया मुकाम यशवंत सिन्हा के नेतृत्व में हासिल करेगी। हमें आज एक ऐसा नेता मिला है जो कभी भी परिस्थिति से समझौता नहीं किया। अन्याय के खिलाफ सदैव खड़े रहकर मुखर विरोध किया जो जग जाहिर है। हमें गर्व है जो हमें ऐसे विकास के अग्रदूत के सानिध्य में कार्य करने का अवसर मिल रहा है। इस अवसर पर अटल विचार मंच के सभी महत्वपूर्ण कार्यकताओं ने बैठक को संबोधित किया, उनमें मुख्य रूप से विपिन कुमार सिन्हा, शैलेंद्र सिन्हा, दिवाकर प्रसाद साहू, रविंद्र प्रसाद शर्मा, राजेश सहाय, जगतार सिंह, सहित अन्य प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इस अवसर पर अटल विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष यशवंत सिन्हा ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि आप सबों ने मुझ पर विश्वास कर बहुत ही बड़ी जिम्मेवारी डाल दिया है। संगठन का विस्तार जल्द से जल्द कर आगे की कारवाई किया जाएगा ताकि पार्टी का निबंध शीघ्र हो सके। उन्होंने आगे कहा कि आज की वर्तमान स्थिति में हम एक ऐसे राजनीतिक दल की आवश्यकता है जो वर्तमान स्थिति में समाज को सही दिशा प्रदान कर एक साफ हर स्वच्छ समाज के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। उन्होंने बताया कि आज की वर्तमान सरकार से यह उम्मीद ही बेकार है यह सरकार समाज में वैमनश्य फैलाकर समाज को हिंदू मुस्लिम में विभक्त कर रही है।

सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह ने कोयला उत्पादन लक्ष्य पूरा करने का दिया निर्देश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : सीसीएल के सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह ने बरका सयाल क्षेत्र पहुंचकर विभिन्न खदानों का निरीक्षण किया। मौके पर जीएम अजय सिंह व अन्य अधिकारियों के साथ उन्होंने न्यू बरसा परियोजना उरीमारी में आशीर्वाद कंपनी, सयाल डी परियोजना में कार्यरत आउटसोर्सिंग कंपनी आर. ए. माइनिंग के कार्यों की जानकारी ली। तथा अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया।सीएमडी निलेंदु कुमार सिंह ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में बरका सयाल को जो टारगेट मिला है, उसे पूरा करने में हर संभव सहयोग किया जाएगा। उन्होंने बरसात से पूर्व निर्धारित वह भी उत्पादन के लिए हर संभव प्रयास करने का निर्देश जीएम को दिया। बरसात से पहले ज्यादा से ज्यादा कोयला का संप्रेषण करने की बात कहा। सीएमडी ने सयाल डी परियोजना को मिली 9 मिलियन टन

कोयला उत्पादन लक्ष्य को पूरा करने का निर्देश दिया। सीएमडी ने पिछले वर्ष बरका सयाल में रिकॉर्ड उत्पादन होने पर अधिकारियों को बधाई दी। कहा की सभी लोग टीम वर्क के साथ आगे भी टारगेट को पाने की पूरी कोशिश करें। मौके पर मुख्य रूप से बिरसा पिओ सुबोध कुमार, उरीमारी पिओ दिलीप कुमार, सयाल पिओ एसएस सिंह, सयाल पिओ रामेश्वर मुंडा, संजय कुमार, पमैनेजर पीके सेन गुप्ता मैनेजर राजेश प्रियदर्शी मैनेजर हसरत खान एरिया सुरक्षा पदाधिकारी क सिंह इमो और अमरेंद्र कुमार एवं आशीर्वाद के मैनेजर दिवाकर विश्वकर्मा उपस्थित थे।

झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सुशीला केरकेट्टा की 86 वीं जयंती मनायी गयी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : जिला कांग्रेस कार्यालय कृष्ण बल्लभ आश्रम में सयुंक्त बिहार के मंत्री, पूर्व सांसद, झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष सुशीला केरकेट्टा की 86 वीं जयंती उनके चित्र पर माल्यार्पण कर मनाई गई । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने कहा कि इनका जन्म सिमडेगा जिले में हुआ था । तब इनके पिता सिमडेगा कोर्ट में कार्यरत थे । बाद में सुशीला केरकेट्टा खूंटी चली गई और वहीं से उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि तैयार हुई । 1985-2000 तक लगातार तीन बार विधानसभा की सदस्य रहीं । 1885-1988 तक लघु सिंचाई विभाग के राज्यमंत्री रही । 14 लोकसभा का चुनाव जीत कर सांसद बनीं । बिहार विभाजन के बाद झारखंड

प्रदेश कांग्रेस कमिटी की प्रदेश अध्यक्ष जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत रहीं । कार्यक्रम में महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत जिला उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता निसार खान, अजय गुप्ता सेवादल अध्यक्ष गुड्डु सिंह, संजय तिवारी, सहकारिता विभाग के अध्यक्ष कृष्णा किशोर प्रसाद, दिलीप कुमार रवि, जावेद इकबाल, सदरूल होदा, अनिल कुमार भुईंया, सैयद अशरफ अली, मंसुर आलम, गोविंद राम, मुस्ताक अंसारी आदि उपस्थित थे ।

बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा का विधायक ने किया अनावरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जयनगर : प्रखंड स्थित ब्लॉक परिसर मैदान में आज भारत रत्न, संविधान निमार्ता, सामाजिक न्याय के अग्रदूत बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी की प्रतिमा का अनावरण मुख्य अतिथि माननीय विधायक अमित कुमार यादव द्वारा श्रद्धापूर्वक किया गया। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ तथा उपस्थित जनसमूह ने बाबा साहेब के विचारों और योगदान को स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर विधायक अमित कुमार यादव ने अपने संबोधन में कहा कि, बाबा साहेब का सम्पूर्ण

जीवन हमें समानता, न्याय और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। उनके विचार आज भी सामाजिक समरसता और सशक्त भारत के निर्माण हेतु मार्गदर्शन करते हैं। आइए, हम सभी मिलकर बाबा साहेब के सपनों के भारत को साकार करने के लिए संकल्पबद्ध हों। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक, जनप्रतिनिधि तथा स्थानीय निवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और पूरे आयोजन को गरिमा प्रदान की।

पतंजलि योगपीठ हरिद्वार युवा भारत संगठन के तत्वाधान में योग शिविर का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झुमरीतिलैया : पतंजलि योगपीठ हरिद्वार युवा भारत संगठन के तत्वाधान में तीन दिवसीय योग शिविर ग्रैंड सूर्या होटल में आयोजन किया गया। जिसमें युवा भारत के केंद्रीय प्रभारी परम पूज्य योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के शिष्य स्वामी विश्व देव स्वामी कोशल देव जी आए हैं शिविर का आयोजन प्रदीप कुमार सुमन योगाचार्य सुषमा सुमन के द्वारा किया गया। शिविर का प्रथम दिवस पूर्ण हुआ जिसमें स्वामी कौशल देव जी योग करवाये और कहा कि तन को मन को स्वस्थ रखने के लिए सुबह-सुबह 2 घंटे योगाभ्यास जरूर करें। जो 24 घंटे में से 2 घंटे अपने तन मन को देता है तो सभी यदि व्याधियों से निर्मित होकर 22 घंटे घर परिवार बिजनेस व्यापार वह सगे संबंधियों

को दे सकता है। शिविर में छोटे बच्चों के सराहनीय प्रदर्शन से उन्हें मोमेंटो देकर सम्मानित भी किया गया। जिसमें बच्चों में उत्साह और जागृति हुआ स्वामी विश्व देव जी ने कहा कि आज का युवा डिप्रेशन मानव मानसिक रोगों का शिकार होता जा रहा है इसलिए योग से जुड़कर अपनी समस्याओं रोगों से निजात हो सकता है और कहा कि युवा योग से अपनी शक्तियों को जाग कर स्वस्थ और समृद्धिशाली होकर घर परिवार मानवता की और राष्ट्र की सच्ची सेवा कर सकता है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए सेवा करती है सेवा भारती : रामेंद्र सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा/रांची : सेवा भारती, झारखंड के तत्वावधान में हितचिंतक सम्मेलन रांची के हरमू रोड स्थित काव्स रेस्टोरेंट के सभागार में संपन्न हुआ। सम्मलेन का उद्घाटन भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया। साथ ही मां दुर्गा की स्तुति पर भव्य नृत्य की प्रस्तुति हुई। समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सेवा भारती के राष्ट्रीय मंत्री रामेंद्र सिंह ने कहा कि सेवा भारती अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न सेवा आयामों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का कार्य कर रही है। समाज के वंचित, उपेक्षित,पीड़ित और अभावग्रस्त वर्गो में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन,सामाजिक संस्कारों का अलख जगा कर समरस समाज का निर्माण किया जा रहा है। अपने ही समाज के कई लोग मूलभूत सुविधाओं, अधिकारों और व्यवस्थाओं से विमुख हैं। ऐसे समाज में सेवा कार्यों को और गति

देने की आवश्यकता है। आज सम्पूर्ण समाज में सेवा भारती की प्रतिष्ठा स्थापित हुई है। संस्था के निःस्वार्थ सेवा कार्यों में समाज की सज्जनशक्ति,हितचिंतकों का बड़ा योगदान रहता है। हितचिंतक सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि महेश पोद्दार, पूर्व सदस्य,राज्यसभा ने कहा कि समाज में सेवा के नाम पर कई अवांछित स्वयंसेवी संस्थाएं चल रही है और सिर्फ कमाने - खाने के लिए सरकारी संसाधनों का उपयोग करते हैं। स्वयं का स्वार्थ त्याग कर सेवा कार्य करने से सही मायने में समाज का उन्नयन होगा। मौके पर सेवा भारती के संरक्षक डॉ एच पी नारायण ने सेवा कार्य के लिए उत्प्रेरित किया। कार्यक्रम में सेवा भारती की वार्षिक उपलब्धियों को साझा करते हुए संस्था के सचिव ऋषि पाण्डेय ने बताया कि सेवा कार्यों से बस्ती परिवर्तन हुए हैं। पिछड़े वर्गो में शिक्षा, संस्कार,आरोग्य के प्रति जागृति आई है और स्वावलंबन की दृष्टि से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है। आगामी वर्षों में सेवा भारती द्वारा प्रखंड स्तर तक समस्याओं का अध्ययन कर समस्यापूरक सेवा कार्य विस्तार करने का लक्ष्य तय किया गया है। इसके पूर्व कार्यक्रम में सेवा भारती के सेवा कार्यों की डाक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया साथ ही राष्ट्रीय सेवा साधना पत्रिका की वार्षिक अंक आपदा प्रबंधन विशेषांक का विमोचन किया गया। मौके पर आपदा प्रबंधन विशेषांक सापेक्ष विषय सेवा भारती, रांची महानगर के सचिव श्याम टोरका ने रखा। मौके पर हितचिंतक सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र संघचालक देवव्रत पाहन का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ जबकि धन्यवाद ज्ञापन सेवा भारती के न्यासी चंद्रकांत रायपत ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा भारती के न्यासी गुरुशरण प्रसाद, सिद्धनाथ सिंह,सह प्रांत संघचालक अशोक श्रीवास्तव, पवन मंत्री, राधेश्याम अग्रवाल, गोपाल सिंह, अभिजीत घोष,शंभू ठाकुर, निर्मला कौर, शुभेंदु भट्ट, नंदलाल साहू, रमाशंकर बगड़िया, राजकुमार साहू, सुष्मिता पाण्डेय, कंचन प्रभा,डॉ निधि सहाय, निशि जयसवाल,कमल केडिया, परमानंद कुजारा, रमाकांत दुबे सहित रांची, बोकारो, धनबाद, हजारीबाग सेवा भारती के हितचिंतक, शुभचिंतक व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के निःशुल्क स्वास्थ्य कैंप में 48 मरीजों ने कराया जांच

धनबाद : रविवार को भारतीय रेडक्रास समिति धनबाद के द्वारा पूर्वी टुंडी के मनियाडीह में आयोजित नि:शुल्क स्वास्थ्य कैंप में डॉ.प्रमोद कुमार सिन्हा एवं नोडल पदाधिकारी डॉ. जिम्मी अभिषेक एवं जी. एन. ओझा ने मरीजों की जांच सुचारू रूप से शुरू की। जिसमें 48 मरीजों को परामर्श एवं मुफ्त में दवा आवश्यकता एवं उपलब्धता अनुसार दिया गया ।कैंप में नि:शुल्क ब्लड शुगर एवं बीपी की जांच की गई ।इस नि:शुल्क स्वास्थ्य कैंप में चेयरमैन कौशलेंद्र कुमार सिंह, संयुक्त सचिव दिलीप सिंह, कोषाध्यक्ष श्वेताम्बरा पाठक, कार्यकारिणी सदस्य सह चेयरमैन सलाहकार कुमार मधुरेन्द्र सिंह, डा. प्रमोद कुमार सिन्हा, डा. जिम्मी अभिषेक,जी. एन. ओझा समेत अन्य उपलब्ध रहें।

कांग्रेस सरकार में होती तो पहलगाम मामले में पाकिस्तान के टुकड़े कर दिए होते : साजिद

हजारीबाग : जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हाल ही में हुई आतंकी घटना को लेकर हजारीबाग जिला कांग्रेस कमेटी अल्पसंख्यक विभाग के जिलाध्यक्ष सह कांग्रेस नेता साजिद अली खान ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने आंतकी घटना को ह्रदय विदारक नरसंहार करार देते हुए केंद्र सरकार से बडी कार्रवाई की मांग कि है साजिद अली ने अपने बयान में कहा कि पहलगाम में निर्दोष नागरिकों पर हुआ यह हमला सिर्फ एक आतंकी वारदात नहीं बल्कि इन्सानियत के खिलाफ किया गया जघन्य अपराध है किसी भी मजहब में इस तरह के कायराना हरकत स्वीकार्य नही है। ऐसी विकट परिस्थिति मे पूरा देश एकजुट है काग्रेस पार्टी और और नेताप्रतिपक्ष राहुल गांधी ने विपरीत परिस्थिति मे देशवासियो के साथ मजबूती से खडे है उनका यह चरित्र देश के प्रती समर्पण भावना दशार्ता है उन्होंने पुन: साबित कर दिया कि इस देश को गांधी परिवार ही चला सकता है जिस प्रकार से गांधी परिवार की महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो टुकडे कर 93000 हजार पाकिस्तानी सेना को घुटने पर लाने का कार्य किया था जिसके पश्चात बीजेपी नेता पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने इंदिरा गाँधी को इस गौरवपूर्ण कार्य के लिए दुर्गा का अवतार कहा था उसी प्रकार से देश की भावना को देखते हुए केंद्र कि मोदी सरकार को अब तक पाकिस्तान पर हमले कर देनी चाहिए थी इतनी बडी घटनाक्रम पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का मौन उनके कार्यशैली पर प्रश्न चिह्न उत्पन्न करती है।

4 मई को होगा भगवान श्री चित्रगुप्त प्रकट उत्सव, तैयारी को लेकर हुई बैठक

हजारीबाग : छठ तालाब प्रांगण स्थित भगवान चित्रगुप्त मंदिर में आगामी 4 मई 2025 को भगवान श्री चित्रगुप्त का भव्य प्रकट उत्सव मनाया जाएगा। इस आयोजन की तैयारी को लेकर एक बैठक आयोजित की गई, जिसमें समाज के कई प्रमुख सामाजिक कार्यकताओं, समिति सदस्यों और श्रद्धालुओं ने भाग लिया। बैठक में कार्यक्रम की रूपरेखा तय की गई, जिसमें साज सज्जा,भजन-कीर्तन, पूजन-अर्चन, और भंडारा शामिल हैं। श्रद्धालुओं से आयोजन में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की अपील की गई। समिति ने साफ-सफाई, सुरक्षा और सुव्यवस्थित व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्णय लिया। अंत में कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी से सहयोग की अपेक्षा की गई। इस बैठक में अनुपम सिन्हा, राज प्रकाश, संजीव सिन्हा, बप्पी करण ,अनुज सिन्हा,शुभम प्रकाश,दीप प्रकाश, विवेक प्रकाश, शशिकांत श्रीवास्तव आदि लोग उपस्थित रहे।

आईसेक्ट विश्वविद्यालय में आईटी तकनीक और संभावनाओं पर सेमिनार का हुआ आयोजन

हजारीबाग : आईसेक्ट विश्वविद्यालय में शनिवार को ₹आईटी उद्योग में विभिन्न तकनीकें और संभावनाएं विषय पर एकदिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्रीकांत कुमार मोहापात्रा रहे, जो टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में क्लाउड सर्विसेज और डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के डिलीवरी हेड हैं। सेमिनार में श्री कुमार ने क्लाउड डिलीवरी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी नवीनतम तकनीकों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे ये तकनीकें आज व्यवसायों को अधिक स्मार्ट और प्रतिस्पर्धी बना रही हैं। क्लाउड टेक्नोलॉजी के जरिए कंपनियां अपने डाटा को सुरक्षित रखती हैं और संचालन में तेजी लाती हैं। श्री मोहापात्रा ने ग्राहक संचार की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि ग्राहकों से सही संवाद बनाए रखना हर व्यवसाय के लिए आवश्यक है। साथ ही उन्होंने उद्यमिता के महत्व पर भी बल दिया और छात्रों को इस दिशा में अपने कौशल को निखारने के लिए प्रेरित किया।

ऑपरेशन अमानत के तहत यात्री का छूटा हुआ बैग और 20 हजार नगद किया गया सुपुर्द

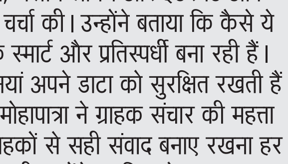

कोडरमा :- निरीक्षक प्रभारी कोडरमा को सूचना प्राप्त हुआ कि गाड़ी संख्या 18623 उद्ध (पटना हटिया एक्सप्रेस) कोच संख्या इ-5 बर्थ नंबर 1 पर एक यात्री का बैग छूट गया है, सूचना प्राप्ति पर कोडरमा में तैनात बल सदस्यों द्वारा निरीक्षक प्रभारी कोडरमा के निर्देशन में त्वरित कार्यवाही कर उक्त कोच को अटेंड किया गया तथा कंप्लेंट में दिए गए शिकायतकर्ता के मोबाइल पर बैग के बारे में पूरी जानकारी प्राप्ति के पश्चात बैग को उतारकर समक्ष जीआरपी के अवर निरीक्षक जय किशोर सिंह के आरपीएफ पोस्ट कोडरमा पर प्रधान आरक्षी नवीन कुमार और आरक्षी आनंद कुमार द्वारा वीडियोग्राफी करते हुए खोल कर देखा गया जिसमें अन्य वस्तुओं के अलावा कुल 20000/- नकद बरामद हुआ। शिकायतकर्ता रजनीश कुमार के परिवार के चंदन कुमार पिता मनोज सिंह ग्राम धनगांव थाना फतेहपुर जिला गया ने लगभग 9:00 बजे पोस्ट पर उपस्थित हुए और उन्होंने पिट्ठू बैग और 20,000 रुपए का मांग किया।

एक नजर

संविधान जलाने की साजिश रच रही है भाजपा : इरफान अंसारी

रांची : कांग्रेस पार्टी ने 3 मई को रांची के धुर्वा मैदान में आयोजित होने वाली संविधान बचाओ रैली की तैयारी शुरू कर दी है। रविवार को स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी के नेतृत्व में हुई रणनीतिक बैठक में कांग्रेस के नेताओं और कार्यकताओं ने यह तय किया कि अब भाजपा के झूठ और तानाशाही को जनता के सामने उजागर किया जाएगा। बैठक में पूर्व मंत्री बादल पत्रलेख, पूर्व सांसद फुरकान अंसारी, जिला अध्यक्ष दीपिका बेसरा, कार्यकारी अध्यक्ष विजय दुबे, पूर्व जिलाध्यक्ष प्रभु मंडल सहित सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद थे। सभी ने संकल्प लिया कि 3 मई की रैली को इतना ऐतिहासिक बनाया जाएगा कि सत्ता में बैठे संविधान विरोधियों की नींद उड़ा दी जाएगी। पूर्व सांसद फुरकान अंसारी ने कहा, भा.ज.पा. देश को तानाशाही की ओर धकेल रही है। संविधान और लोकतंत्र को कुचलने की हर साजिश का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। बाबा साहेब के बनाए संविधान की रक्षा करना हमारी जिम्मेदारी है। 3 मई की रैली से नई क्रांति की शुरूआत होगी। डॉ. इरफान अंसारी ने भाजपा पर हमला करते हुए कहा, भा.ज.पा. संविधान को चीरने पर तुली है। सर्वोच्च न्यायालय जैसी संस्थाओं पर उंगली उठाना लोकतंत्र का गला घोंटने की साजिश है। अब देश चुप नहीं बैठेगा। संविधान की रक्षा के लिए कांग्रेस आखिरी सांस तक संघर्ष करेगी। पूर्व मंत्री बादल पत्रलेख ने कहा, ॑संविधान बचाने के लिए अब हमें आर-पार की लड़ाई लड़नी होगी। भा.ज.पा. देश को मनमानी की आग में झोंकना चाहती है, लेकिन कांग्रेस उसे माफ नहीं करेगी। यह सिर्फ एक रैली नहीं, जनक्रांति की शुरूआत है। बैठक के अंत में सभी नेताओं और कार्यकताओं ने एक स्वर में हुंकार भरी: संविधान बचाओ, लोकतंत्र बचाओ, देश बचाओ! कांग्रेस ने यह भी ऐलान किया कि जो भी संविधान से टकराएगा, उसे चूर-चूर कर दिया जाएगा।

भारतीय मजदूर संघ की दो दिवसीय बैठक संपन्न

रांची : भारतीय मजदूर संघ झारखंड प्रदेश कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक रविवार को विशालाक्षी बैंक्विट हॉल रातू रोड में सम्पन हुई। बैठक की शुरूआत में पहलगाम में हुए आतंकी घटना की संघ के झारखंड प्रदेश ने कड़ी निंदा की। साथ ही पहलगाम में आंतकी घटना में शहीद हुए नागरिकों के प्रति दो मिनट का श्रद्धांजलि सभा रखी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे बलिराम यादव ने कहा कि संघ पूरे प्रदेश में मजदूरों के हित के लिए लगातार अच्छे पहल कर रही है। वहीं प्रदेश महामंत्री राजीव रंजन सिंह ने इस बैठक मे मजदूरों के हित से जुड़े कई गंभीर समस्याओं को रखा। इसमे कोयला, एचईसी, साहिया, आंगनवाड़ी, ऑटो- ई रिक्शा, ठेका श्रमिक सहित अन्य कई विषयों पर भी चर्चा की गयी। इस दौरान भारत माता की जय बोल कर कई प्रस्ताव पारित किये गये। वहीं भारतीय मजदूर संघ झारखंड प्रदेश में कार्य को गति देने के लिए दो पदाधिकारियों का चयन किया गया। इसमे एचईसी के महामंत्री रमा शंकर प्रसाद और केनरा बैंक के सीनियर मैनेजर संतोष साहू को प्रदेश मंत्री का नई जिम्मेदारी दी गई । झारखंड प्रदेश में ठेका श्रमिकों के बीच काम कर रहे यूनियन का महासंघ बनाने का निर्णय लिया गया। यह महासंघ राज स्तरीय महासंघ कहलाएगा। झारखंड प्रदेश के संगठन मंत्री बृजेश कुमार ने कहा कि कुटुंब प्रबोधन के तहत आज हम लोग परिवार और समाज के अंदर कुरीतियां आ गई है। इसमें सुधार करने की आवश्यकता है। अपने परिवार के बीच आज के भाग दौड़ में समय देने की आवश्यकता है। बच्चों को संस्कार दिया जाए इसलिए बड़ों को सामाजिक परिवेश और परिवेश प्रवेश के बारे में बताना है। जो पहले परिवार हुआ करता था। उसे परिवार के परिभाषित अनुसार फिर से एक माहौल तैयार करना है ताकि भारत की संस्कृति और संस्कार बचा रहे।

रांची में साइबर अपराधी ने पुलिसकर्मी को बनाया अपना शिकार, ठगे 3.20 लाख रुपये

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राजधानी रांची में साइबर ठगों ने एक पुलिसकर्मी को अपना शिकार बना लिया है। साइबर ठगों ने पीड़िता के दुबई में रह रहे भाई के नाम पर उनसे 3.20 लाख रुपये ठग लिए। घटना के बाद पीड़ित पुलिसकर्मी ने साइबर थाना में मामला दर्ज कराया है और पुलिस जांच में जुट गयी है। मिली जानकारी के अनुसार रांची के लालपुर ट्रैफिक थाना में पदस्थापित पीड़ित मदन सिंह, को फेसबुक मैसेंजर के माध्यम से एक मैसेंज आया। मैसेंज में उनके दुबई में रहने वाले भाई आनंद सिंह के नाम और फोटो का इस्तेमाल किया गया था। शुरूआत में मैसेंज में सामान्य बातचीत की गई, हालचाल पूछा गया, फिर कहा गया कि वह भारत आ रहे हैं और उसके लिए क्या लेकर आए। मदन सिंह को कोई शक नहीं हुआ और उन्होंने एक घड़ी लाने की बात कही। इसके बाद, मैसेज भेजने वाले ने मदन सिंह से बैंक खाता नंबर मांगा, यह कहते हुए कि वे कुछ पैसे ट्रांसफर करना चाहते हैं ताकि भारत आकर वह पैसे वापस ले सकें। जैसे ही मदन सिंह ने अपना बैंक खाता नंबर साझा किया, साइबर ठगों ने अगला कदम उठाया। एक वॉट्सऐप कॉल के माध्यम से ठग ने बताया कि वह दुबई में ट्रैवल एजेंसी वालों के चंगुल में फंस गया है। उसने दावा किया कि यदि पैसे तुरंत नहीं मिले तो उसे जेल भेज दिया जाएगा और आत्महत्या की धमकी भी दी। आरोपी ने भारत में एक कथित ट्रैवल एजेंट का नंबर भी दिया, जिस पर कॉल करने पर जवाब आया कि वॉट्सऐप कॉल करें। वॉट्सऐप कॉल के जरिए ठगों ने 3.20 लाख रुपये की तत्काल मांग की। भाई के संकट में होने के डर से मदन सिंह ने अलग-अलग खातों में यह पैसे ट्रांसफर कर दी। पैसे ट्रांसफर करने के बाद, मदन सिंह ने अपने असली भाई आनंद सिंह से सीधे कॉल किया और तब जाकर उन्हें पता चला कि उनके भाई के साथ कोई घटना नहीं हुई है। वह पूरी तरह सुरक्षित थे और दुबई में सामान्य जीवन जी रहे थे। इसके बाद मदन सिंह को समझ में आया कि वे साइबर ठगी का शिकार हो चुके हैं। पीड़ित ने तरंत साइबर थाना में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में ठगों द्वारा उपयोग किए गए मोबाइल नंबर और वॉट्सऐप कॉल के विवरण भी दिए गए हैं। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि ठगों ने सोशल मीडिया प्रोफाइल की नकल कर यह ठगी रची थी।

कपड़े की दुकान में आग दम घुटने से बुजुर्ग की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के लोअर बाजार थाना क्षेत्र स्थित कांटाटोली चौक के पास रविवार को एक कपड़े की दुकान में आग लगने से अफरा-तफरी मच गई। आग लगने की वजह से दुकान के पीछे स्थित एक घर में छह से ज्यादा लोग फंस गए। तेज धुआं और आग की वजह से कोई भी घर से बाहर नहीं निकल पा रहा था। हालांकि कुछ लोगों को स्थानीय लोगों के जरिये एस्बेस्टस की सीट को तोड़कर बाहर निकाला गया। दम घुटने की वजह से 59 वर्षीय बुजुर्ग एनुल आलम की मौत हो गई। मौके पर पहुंची फायर बिग्रेड की टीम ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। बताया जा रहा है कि आलम गारमेंट्स नामक कपड़े की दुकान में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। आग लगने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। लोअर बाजार थाना प्रभारी दयानंद ने बताया कि आग में दम घुटने से एक बुजुर्ग की मौत हुई है। आग पर काबू पा लिया गया और घर में फंसे सभी लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया है।

पहलगाम हमला खड़े कर रहा सुरक्षा पर सवाल और मंत्री मांग रहे देशभक्ति का प्रमाण : कैलाश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रदेश राजद महासचिव सह मीडिया प्रभारी कैलाश यादव ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा किए गए कायराना हमले में 28 निर्दोष पर्यटकों की निर्मम हत्या पूरे देश को झकझोर गई है। इस घटना की निंदा देश ही नहीं, दुनिया भर में हो रही है। यादव ने कहा कि भारत सरकार आतंकवाद के खिलाफ कूटनीतिक और राजनीतिक स्तर पर पाकिस्तान से बातचीत कर रही है। बीते वर्षों में जम्मू-कश्मीर के हालातों में कुछ सुधार हुआ था, लेकिन 22 अप्रैल को हुए इस हमले ने फिर से सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। लेकिन बीजेपी के मंत्री देशभक्ति का प्रमाण मांगते फिर रहे हैं। उन्होंने कहा, यह हमला सिर्फ सैलानियों पर नहीं, बल्कि भारत की आत्मा पर चोट है। पूरे देश के लोग आक्रोश में हैं और विपक्षी दल भी सरकार के साथ एकजुटता दिखा रहे हैं। इस बीच, यादव ने सत्ताधारी दल के कुछ नेताओं के बयानों पर तीखी प्रतिक्रिया जताई। उन्होंने कहा, ऐसे संवेदनशील समय में केंद्रीय मंत्री पियूष गोयल यह कहकर कि जब तक देश के 140 करोड़ लोग देशभक्त नहीं बनते, ऐसी घटनाएं होती रहेंगी – देशवासियों की भावना को आहत कर रहे हैं। यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा के कई प्रदेश इकाइयों के ट्विटर हैंडल भी लगातार हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव को हवा दे रहे हैं, जिससे सामाजिक सौहार्द बिगड़ रहा है। उन्होंने झारखंड के भाजपा नेता बाबूलाल मरांडी पर भी आरोप लगाया कि वह भी इसी एजेंडे के तहत समाज को बांटने की कोशिश कर रहे हैं। कैलाश यादव ने कहा, बीजेपी के कुछ नेता इस दर्दनाक घटना को राजनीतिक अवसर में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें याद रखना चाहिए कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है, जहां हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी और बौद्ध – सभी धर्मों के लोग साथ रहते हैं। ऐसी घिनौनी राजनीति देश की एकता को चोट पहुंचाती है।

राज्य में आतंकियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करें राज्य सरकार : बाबूलाल मरांडी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पूरा देश इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहा है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारें कंधे से कंधा मिलाकर आतंकवाद के सफाए के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मरांडी ने रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सभी मुख्यमंत्रियों से अपने-अपने राज्यों में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों की पहचान कर उन्हें देश से बाहर करने का निर्देश दिया था, लेकिन झारखंड में हेमंत सरकार आतंकवाद के विरुद्ध ठोस कदम उठाने के प्रति गंभीर नजर नहीं आ रही है। इसके विपरीत, झामुमो के मंत्री और प्रवक्ता गैर-जिम्मेदाराना और संवेदनहीन बयान दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन राजनीति करने के लिए आपको कई अवसर मिलेंगे, लेकिन इस कठिन समय में साढ़े तीन करोड़ झारखंडवासियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ राज्य में आतंकियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई सुनिश्चित कीजिए।

नाइजर में झारखंड के 5 प्रवासी मजदूरों का अपहरण, परिजनों ने लगाई मदद की गुहार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : पश्चिमी अफ्रीकी देश नाइजर से झारखंड के पांच प्रवासी मजदूरों के अपहरण की खबर सामने आई है। अगवा किए गए मजदूरों में गिरिडीह जिले के बगोदर थाना क्षेत्र के दोंदलो पंचायत निवासी संजय महतो, फलजित महतो, राजू महतो, चंद्रिका महतो और मुंडरो पंचायत के उत्तम महतो शामिल हैं। बताया जा रहा है कि ये सभी मजदूर 'कल्पतरु पावर ट्रांसमिशन लिमिटेड' कंपनी में काम कर रहे थे। घटना शुक्रवार दोपहर की है। मजदूरों के परिजनों ने सरकार से अपनों की सकुशल रिहाई की गुहार लगाई है। वहीं, प्रवासी मजदूरों के हित में काम करने वाले समाजसेवी सिकंदर अली ने केंद्र सरकार से मामले में तत्काल हस्तक्षेप करने और सभी मजदूरों को सुरक्षित वापस लाने की मांग की है।

सामाजिक परिवर्तन के लिए सेवा करती है सेवा भारती : रामेंद्र सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रविवार को सेवा भारती, झारखंड के तत्वावधान में हितचिंतक सम्मेलन रांची के हरमू रोड स्थित काव्स रेस्टोरेंट के सभागार में संपन्न हुआ। सम्मलेन का उद्घाटन भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया गया। साथ ही मां दुर्गा की स्तुति पर भव्य नृत्य की प्रस्तुति हुई।समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सेवा भारती के राष्ट्रीय मंत्री रामेंद्र सिंह ने कहा कि सेवा भारती अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न सेवा आयामों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का कार्य कर रही है। समाज के वंचित, उपेक्षित, पीड़ित और अभावग्रस्त वर्गो में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलंबन, सामाजिक संस्कारों का अलख जगा कर समरस समाज का निर्माण किया जा रहा है। अपने ही समाज के कई लोग मूलभूत सुविधाओं, अधिकारों और व्यवस्थाओं से विमुख हैं। ऐसे समाज में सेवा कार्यों को और गति देने की आवश्यकता है। आज सम्पूर्ण समाज में सेवा भारती की प्रतिष्ठा स्थापित हुई है। संस्था के निस्वार्थ सेवा कार्यों में समाज की सज्जनशक्ति, हितचिंतकों का बड़ा योगदान रहता है। हितचिंतक सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि महेश पोद्दार, पूर्व सदस्य,राज्यसभा ने कहा कि समाज में सेवा के नाम पर कई अवांछित स्वयंसेवी संस्थाएं चल रही है और सिर्फ कमाने - खाने के लिए सरकारी संसाधनों का उपयोग करते हैं। स्वयं का स्वार्थ त्याग कर सेवा कार्य करने से सही मायने में समाज का उन्नयन होगा। मौके पर सेवा भारती के संरक्षक डॉ एच पी नारायण ने सेवा कार्य के लिए उत्प्रेरित किया। कार्यक्रम में सेवा भारती की वार्षिक उपलब्धियों को साझा करते हुए संस्था के सचिव ऋषि पाण्डेय ने बताया कि सेवा कार्यो से बस्ती परिवर्तन हुए हैं। पिछड़े वर्गो में शिक्षा, संस्कार,आरोग्य के प्रति जागृति आई है और स्वावलंबन की दृष्टि से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण हुआ है। आगामी वर्षों में सेवा भारती द्वारा प्रखंड स्तर तक समस्याओं का अध्ययन कर समस्यापूरक सेवा कार्य विस्तार करने का लक्ष्य तय किया गया है। इसके पूर्व कार्यक्रम में सेवा भारती के सेवा कार्यों की डाक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन किया गया साथ ही राष्ट्रीय सेवा साधना पत्रिका की वार्षिक अंक आपदा प्रबंधन विशेषांक का विमोचन किया गया। मौके पर आपदा प्रबंधन विशेषांक सापेक्ष विषय सेवा भारती, रांची महानगर के सचिव श्याम टोरका ने रखा। मौके पर हितचिंतक सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्र संघचालक देवव्रत पाहन का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

संक्षिप्त खबरें

रांची सहित कई जिलों में छाए बादल, प्रचंड गर्मी से राहत

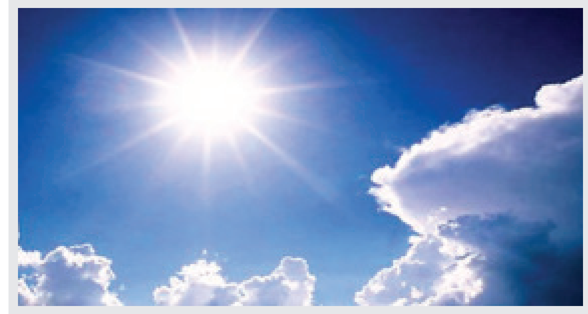

रांची : राजधानी रांची सहित राज्य के कई जिलों में बादल छाए हुए हैं। बादल छाने से प्रचंड गर्मी से लोगों को राहत मिली है। मौसम विभाग ने 29 अप्रैल तक विभिन्न जिलों में गर्जन, वज्रपात और 30-50 किमी की गति से तेज हवा चलने की आशंका व्यक्त की है। इसे लेकर मौसम विभाग ने 28 अप्रैल को ऑरेन्ज अलर्ट और 29 अप्रैल के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। वहीं रविवार को रांची और आसपास ईलाकों में बादल छाए रहे और ठंडी हवाएं चलीं। बादल छाने और हवा चलने से मौसम काफी सुहावना हो गया है। रविवार को रांची में अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इसी तरह अन्य शहरों के तापमान में पांच से छ्ह डिग्री की कमी दर्ज की गई।

झारखंड में हैं पाकिस्तान के 10 नागरिक वापस भेजने पर फैसला जल्द

रांची : भारत सरकार ने देश में रह रहे पाकिस्तानी नागरिकों को जल्द भारत छोड़ने का आदेश दिया है। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों द्वारा 28 पर्यटकों की हत्या के बाद यह सख्त कदम उठाया गया है। झारखंड में फिलहाल 10 पाकिस्तानी नागरिक रह रहे हैं, जिनमें से 3 नाबालिग हैं। तीनों के उम्र 2 से 10 सालके बीच की है। ये लोग रांची, धनबाद, जमशेदपुर और हजारीबाग में निवास कर रहे हैं। इन 10 में से 7 पाक नागरिकों के पास लॉन्ग टर्म वीजा है। मिली जानकारी के अनुसार एलटीवी वाले नागरिकों को फिलहाल भारत छोड़ने की जरूरत नहीं है। इसलिए झारखंड में मौजूद ये 7 लोग यहीं रहेंगे। लेकिन 3 नाबालिग बच्चे हाल ही में कराची से रांची आए हैं। चूंकि वे नाबालिग हैं, उनकी मां को भारत छोड़ने का वीजा नहीं मिलेगा और न ही उनके पिता को भारत आने का वीजा मिलेगा, इसलिए इन्हें अकेले पाकिस्तान भेजना बड़ा सवाल बन गया है। झारखंड का गृह मंत्रालय इस मुद्दे पर केंद्रीय गृह मंत्रालय से निर्देश मांग रहा है। निर्देश के बाद तय होगा कि बच्चों को भारत में ही रखा जाएगा या फिर पाकिस्तान भेजा जाएगा। बता दें कि रांची की 3 लड़कियों की शादी पाकिस्तान में हुई है। ये महिलाएं लॉन्ग टर्म वीजा पर झारखंड में रह रही हैं। वहीं उनके बच्चे गर्मी की छुट्टियों में पाकिस्तान से झारखंड आए हैं। अब इन्हीं बच्चों के पाकिस्तान लौटने को लेकर केंद्र को फैसला लेना है।

रांची के बियर बार में 2 गुटों के बीच मारपीट पुलिस ने मैनेजर को किया गिरफ्तार

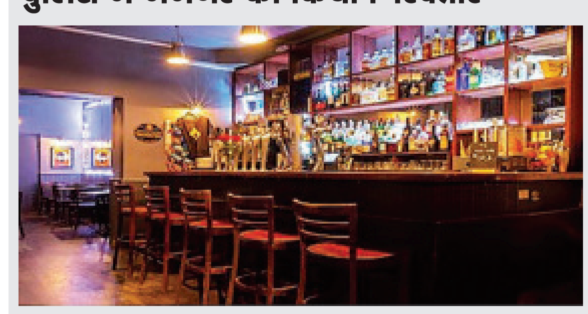

रांची : राजधानी रांची के मेन रोड स्थित जेडी हाई स्ट्रीट मॉल के`डक बियर बार में शनिवार देर रात हंगामा मच गया। बार में चल रही पार्टी के दौरान 2 गुटों में किसी बात को लेकर कहासुनी हुई, जो देखते ही देखते मारपीट में बदल गई। सूचना मिलने पर कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस टीम रात करीब 2 बजे मौके पर पहुंची और हालात को काबू में किया। पुलिस ने दोनों पक्षों को शांत कराया और जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने देर रात तक बार खुला रखने और माहौल बिगड़ने के मामले में इवेंट मौनेजर और बार मैनेजर को गिरफ्तार कर लिया है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की छानबीन कर रही है और यह पता लगाने की कोशिश में है कि विवाद की असली वजह क्या थी।

वरीयता से ग्रेड-4 वेतनमान का रास्ता साफ होने पर संघ ने जतायी खुशी

रांची : जेपीएससी प्राथमिक शिक्षक संघ झारखंड की बैठक रविवार को जिला कार्यालय, रातू रोड चौक स्थित कार्यालय में आयोजित हुई। बैठक का माहौल हर्षोल्लासपूर्ण रहा। इसका मुख्य कारण झारखंड उच्च न्यायालय द्वारा वर्ष 2003-04 एवं उसके बाद नियुक्त प्रशिक्षित प्राथमिक शिक्षकों को नियुक्ति नियमावली 2012 के आधार पर 2016 में नियुक्त वर्ग 6-8 से वरीय मानते हुए वर्ष 2015 से ग्रेड-4 (ग्रेड पे 4600 रुपये) का लाभ देने का निर्णय था। यह महत्वपूर्ण फैसला झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश संजय प्रसाद द्वारा धनबाद जिले के शिक्षक संघ सदस्यों द्वारा दायर वाद पर सुनाया गया। सभी याचिकाओं को निष्पादित करते हुए अदालत ने शिक्षकों की वरीयता को स्वीकार किया। बैठक में मौजूद कोर ग्रुप के सदस्यों ने निर्णय लिया कि अगला कदम सरकार और विभागीय सचिव और निदेशक से इस आदेश को शीघ्र लागू कराने का आग्रह करना होगा। कोर्ट के इस निर्णय से लंबे समय से लंबित वरीयता की मांग पूरी हुई और 2016 में नियुक्त वर्ग 6-8 के शिक्षकों पर वरीयता का दावा मजबूत हुआ। इसके लिए धनबाद जिला संघ के प्रयासों को विशेष रूप से धन्यवाद दिया गया। बैठक में राज्य स्तर से सगुना तिर्की, शिवकुमार सिंह और जिला स्तर से अध्यक्ष सुदीप कुमार, सचिव शमीम अहमद अंसारी, शमीम रजा, मधुमिता, जया मलिक, विभा कुमारी, सचिंद्र समेत कई अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

मन की बात में पीएम ने दोहराई आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई की प्रतिबद्धता : मरांडी

रांची : भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने रविवार को अपने-अपने क्षेत्रों के बूथों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम को सुना। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में भी आतंकवाद के खिलाफ भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने आज फिर एक बार कहा कि आतंकवाद और उसके संरक्षकों पर कठोर कार्रवाई करने के लिए भारत संकल्पित है, जिसमें भारत के 140 करोड़ जनता का भरोसा और विश्वास प्राप्त है। उन्होंने कहा कि इस लड़ाई में पूरा विश्व भारत के साथ खड़ा है। मरांडी ने कहा कि झारखंड की जनता प्रधानमंत्री के साथ खड़ी है। आतंकवाद व उग्रवाद विकास का दुश्मन है।

एक नजर

पहलगाम में आतंकी हमले में मारे गए पर्यटकों को दी गई श्रद्धांजलि

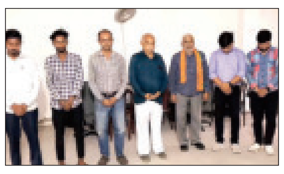

चांडिल : रविवार को नारायण प्राइवेट आईटीआई चांडिल में भाजपा प्रदेश कार्य समिति सदस्य जटाशंकर पांडे के नेतत्व में जम्मू कश्मीर के अनंतनाग के पहलगाम में आतंकी हमले में जो निर्दोष पर्यटकों की हत्या हुई उनलोगों की आत्मा शांति के लिए दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि दी गई। भाजपा नेता जटाशंकर पांडे ने कहा कि जम्मू कश्मीर के अनंतनाग के पहलगाम में आतंकी हमले में जो निर्दोष पर्यटको की हत्या हुई उसके लिए हमलोग प्रधानमंत्री जी से आग्रह करते है कि खून के एक एक कतरा का हिसाब पाकिस्तान से लिया जाय और अब समय आ गया है कि भारत सरकार को इस आतंकी हमले के खिलाफ सरकार को सख्त करवाई करना चाहिए और संभव हो तो पाकिस्तान के ऊपर चढ़ाई भी करना चाहिए। प्रधानमंत्री जी के उस कदम का जो सिंधु जल समझौता को स्थगित किया गया है उसकी हमलोग सराहना करते है। सरकार जो भी कर रहा है आतंकबाद के खिलाफ इसके लिए पूरी देश की जनता उनके साथ है और आशा ही नहीं पूरा विश्वास है प्रधानमंत्री और उनकी सरकार इस अभियान में सफल होगी और आतंकबाद को गृहमंत्री तथा प्रधानमंत्री के नेतृत्व में जड़ से मिटा दिया जाएगा।

बैसाखी काली पुजा में उमड़ी श्रदालुओं की भीड़

चास : प्रखण्ड पंचायत बेलुंजा के उसरडीह गांव में तीन दिवसीय आयोजित बैसाखी काली पुजा के दुसरे दिन रविवार को श्रदालु निर्जला उपवास कर सींधीबांध मे स्नान कर व्रती दण्ड देकर मां काली मंदिर पहुंचे तथा पुजा अर्चना कर मन्नत पुरी किया। पुराना मंदिर मुख्य पुजा पुजारी संजय तिवारी, अशेष कुमार तिवारी तथा नया मंदिर मे गगन ठाकुर ने श्रदालुओं को पुजा अर्चना कराया। मन्नत पुरी होने पर श्रदालुओं ने मां के दरवार में चढावा चढाये। मंदिर में बकरे की बली दी गयी।कमिटी ने महाप्रसाद खिचड़ी भोग का वितरण किया। 28 अप्रैल को पारण के साथ शाम को ढाक के ताल नाचते गाते हुए मां काली मुर्ति का सींधीबांध पर विसर्जन के साथ संपन्न होगा। इस अवसर पर रात्रि मे संस्कृतिक कार्यक्रम बांगला नाटक प्रेमेर समाधी तिरे₹ कोलकाता का आयोजन किया जायेगा। पुजा को लेकर पुजा कमिटी व ग्रामीण जुटे हुए है।

आरपीएफ ने बचाया नाबालिग लड़के को चाइल्ड लाइन को सौंपा

बोकारो : रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ पोस्ट बोकारो के अधिकारियों और कर्मचारियों ने एक नाबालिग लड़के को बचाया, जो अपने घर से भाग गया था। लड़के को चाइल्ड लाइन बोकारो को सौंप दिया गया है।

ट्रेन संख्या 07256 के बोकारो रेलवे स्टेशन पर पहुंचने पर आरपीएफ के अधिकारियों और कर्मचारियों ने एक नाबालिग लड़के को देखा, जो संदिग्ध रूप से ट्रेन के स्लीपर कोच के पास घूम रहा था। पूछने पर उसने अपना नाम और पता बताया और बताया कि वह अपने माता-पिता को सूचित किए बिना अपने घर से भाग गया था।

जनता के अधिकारों के लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा पूरी मजबूती से खड़ा रहेगा : मंटू यादव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चास के मारवाड़ी पंचायत भवन में झारखंड मुक्ति मोर्चा बोकारो महानगर के अध्यक्ष मंटू यादव के अध्यक्षता में विशाल कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। महानगर अध्यक्ष मंटू यादव ने सभी कार्यकताओं का तहे दिल से आभार प्रकट किया। कार्यक्रम की शुरूआत पहलगाम में हुए आतंकी हमले में शहीद शरणार्थियों को श्रद्धांजलि अर्पित कर की गई। इस अवसर पर श्री यादव ने कहा कि जब बात भारत की होती है तो संपूर्ण देश एकजुट है। जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर हर भारतीय देश की अखंडता और सम्मान की रक्षा के लिए एक साथ खड़ा है। सम्मेलन में जिला अध्यक्ष रतनलाल मांझी ने केंद्रीय अधिवेशन में झारखंड के मुख्यमंत्री माननीय श्री हेमंत सोरेन को झामुमो का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाए जाने पर बोकारो जिला इकाई की ओर से हार्दिक बधाई और आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में राज्य में झामुमो के नेतृत्व में अपनी सरकार है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम भ्रष्टाचार और जन समस्याओं पर आंख मूंद लेंगे। प्रत्येक कार्यकर्ता का दायित्व है कि वह अपने टोले-मोहल्ले, वार्ड एवं पंचायत स्तर पर निगरानी रखे कि राशन वितरण, स्कूलों का संचालन, आंगनबाड़ी केंद्रों की गतिविधियां और स्वास्थ्य सेवाएं समय पर और सही तरीके से हो रही हैं या नहीं। झारखंड मुक्ति मोर्चा बोकारो महानगर अध्यक्ष मंटू यादव ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जो भी अधिकारी या कर्मचारी जनता की समस्याओं की अनदेखी करेगा या भ्रष्टाचार करेगा, उसके खिलाफ झामुमो आंदोलन करेगा और आवश्यकतानुसार जिले से स्थानांतरण के लिए भी दबाव बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में गरीबों, दलितों, पीड़ितों और शोषितों की सरकार है, जिसका एकमात्र लक्ष्य है अंतिम व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाना। महानगर अध्यक्ष मंटू यादव ने बोकारो स्टील प्लांट से जुड़े विस्थापितों के मुद्दे पर कहा की केंद्र सरकार की नीतियों के चलते स्थानीय युवाओं और विस्थापितों के बीच तनाव पैदा किया जा रहा है। पिछले पांच वर्षों से 20 प्रतिशत रोजगार आरक्षण की मांग लंबित है, लेकिन अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। यदि समय रहते विस्थापितों को रोजगार से जोड़ा गया होता, तो आंदोलन की नौबत नहीं आती। झारखंड मुक्ति मोर्चा का हर कार्यकर्ता इस मुद्दे पर भी संघर्ष करेगा। मंटू यादव ने कार्यकताओं से आह्वान किया कि वे संगठन के प्रति निष्ठावान रहते हुए सरकार की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं और जिले में कानून का राज तथा जनता का सम्मान सुनिश्चित करें। कार्यकर्ता सम्मेलन का संचालन बोकारो महानगर सचिव मदन कुमार महतो ने किया। सम्मेलन में मुख्य रूप से केंद्रीय सदस्य हीरालाल मांझी, संतोष रजवार, जयनारायण महतो, मनोहर मुर्मू, अशोक मुर्मू, संजय केजरीवाल, नेयर जमाल, मनोज हेंब्रम, आकाश टुडू, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

किन्नरों ने कश्मीर में घटी घटना में मृत लोगों को दी श्रद्धांजलि

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

झरिया (धनबाद): जुम्मु कश्मीर के पहलगाम की घटना के बाद किन्नर समाज भी काफी मर्माहत है और वह मांग करती है की वे भारतीय सेना के साथ मिलकर बॉर्डर पर लड़ने के लिए तैयार हैं । उक्त बातें अखिल भारतीय किन्नर समाज के झारखण्ड प्रदेश अध्यक्ष छम छम देवी किन्नर ने कही। इस मौके पर छम छम देवी किन्नर ने कहा कि निहत्थों पर गोली चलाना यह सबसे कायरता का काम है अगर आतंकवादियों में थोड़ा सा भी हिम्मत है तो हमारे देश के जवानों से टकराकर देखें उन्हें उनकी औकात पता चल जाएगा, कश्मीर की घटना के बाद किन्नर समाज ने गहरा शोक वक्त करते हुए बताया कि सरकार मृतको के परिजनों पर भी ध्यान दें। साथ ही जिसने भी इस घटना को अंजाम दिया है उसे घसीटते हुए देश में ले और उन्हें उससे भी बड़ी सजा दें ताकि उनके आने वाले पीढ़ी भी भारत से टकराने के लिए सोचे, छम छम देवी किन्नर ने बताया कि हमारे भारतवर्ष के जितने भी किन्नर हैं वह भारत सरकार के साथ है अगर जरूरत पड़े तो हमारा किन्नर भी बॉर्डर पर जाकर लड़ने को तैयार है जो घटना पाकिस्तान ने किया है उसे करारा जवाब देने की जरूरत है। उक्त मौके पर प्रदेश अध्यक्ष छम छम देवी किन्नर, श्वेता किन्नर, निर्मला किन्नर,रेखा किन्नर, राखी किन्नर, काजल किन्नर, नैना किन्नर, पन्ना किन्नर, संगीता किन्नर, सोनम किन्नर आदि किन्नर शामिल थे।

दिवंगत वैज्ञानिक अभिषेक स्वर्णकार की स्मृति में विभिन्न अस्पतालों में व्हीलचेयर दान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : समाज में सेवा भाव और प्रेरणा का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए, दिवंगत वैज्ञानिक डॉ अभिषेक स्वर्णकार की स्मृति में उनके परिवार द्वारा आज विभिन्न अस्पतालों में व्हीलचेयर दान किए गए। इस पुनीत कार्य के माध्यम से न केवल अभिषेक स्वर्णकार की यादों को जीवंत किया गया, बल्कि जरूरतमंद मरीजों के लिए सुविधाएं भी बढ़ाई गईं। डॉ अभिषेक स्वर्णकार, जो अपने उत्कृष्ट वैज्ञानिक योगदान और समाजसेवा की भावना के लिए जाने जाते थे, का असमय निधन परिवार एवं समुदाय के लिए एक अपूरणीय क्षति रही। उनके आदर्शों और मूल्यों को आगे बढ़ाते हुए, उनके परिवार ने यह पहल की, जिससे जरूरतमंदों तक मदद पहुँचाई जा सके। आज आयोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में धनबाद के कई अस्पतालों में व्हीलचेयर वितरित किए गए। कार्यक्रम के दौरान अस्पताल प्रशासन और मरीजों ने इस सहयोग के लिए गहरी सराहना व्यक्त की। परिवार के सदस्यों ने कहा कि अभिषेक स्वर्णकार हमेशा मानवता की सेवा के पक्षधर थे और उनका मानना था कि चिकित्सा सुविधाओं तक सबकी समान पहुँच होनी चाहिए। डॉ स्वर्णकार के पिता बसुकी नाथ सोनार ने इस अवसर पर कहा, अभिषेक हमारा गर्व था। आज उसका सपना था कि समाज के जरूरतमंदों की मदद हो, वह हम सब मिलकर पूरा कर रहे हैं। यह कार्य उसके सपनों को साकार करने का एक छोटा सा प्रयास है। हम चाहते हैं कि उसकी स्मृति समाज की सेवा के माध्यम से जीवित रहे। डॉ स्वर्णकार के भाई स्वयं स्वर्ण ने भी भावुक होकर कहा, अभिषेक भैया ने अपने जीवन में हमेशा दूसरों की मदद करने पर विश्वास किया।

धनबाद जिला जनता दल यू. के जिला कार्यसमिति की बैठक में पांच प्रस्ताव पारित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : धनबाद जिला जनता दल यू. के जिला कार्य समिति प्रखण्ड अध्यक्ष नगर अध्यक्ष सहित जिले से आये सभी प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष की बैठक रविवार को धनबाद परिसदन में की गई। जिसकी अध्यक्षता पार्टी के जिला अध्यक्ष पिन्टु कुमार सिंह ने किया तथा संचालन प्रदेश सचिव राजु कुमार सिंह ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन धनबाद नगर अध्यक्ष धनलाल दुबे ने किया। सर्वप्रथम बैठक में विंगत दिनों आतंकवादियों द्वारा पहलगाम में जो सैलानियों की निर्मम हत्या कर दी गई उसे लेकर दो मिनट का मोन धारण किया गया और उनकी आत्मा को शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की गई।इस बैठक में मुख्य रूप से पाँच प्रस्ताव पारित किये गये। जून माह के आखिरी सप्ताह में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने जिसमें पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष सह केन्द्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह, पार्टी के राज्यसभा सांसद सह राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा एवं पार्टी के राज्यसभा सांसद सह झारखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष खीरू महतो मुख्य रूप से उपस्थित रहेंगे। बैठक के पांच प्रस्तावों में आगामी धनबाद में होने वाले नगर निगम का चुनाव में जनता दल यू. द्वारा अपना प्रत्याशी उतारने का निर्णय,धनबाद में एक हवाई अड्डा एवं एम्स अस्पताल बनाने हेतु चरणबद्ध तरीके से आंदोलन पार्टी द्वारा करने का निर्णय। जिले में विधि-व्यवस्था की चरमराई स्थिति एवं बिजली का भी चरमराई स्थिति को लेकर जिला मुख्यालय में एक दिवसीय धरना देने का निर्णय,संगठन को मजबूत करने के लिए सदस्यता अभियान जोर-शोर से प्रखण्ड स्तर पर चलाने का निर्णय गया लिया।इस बैठक में मुख्य रूप से पार्टी के जिला अध्यक्ष पिन्टु कुमार सिंह, प्रदेश महासचिव उदय कुमार सिंह, अति पिछड़ा के प्रकोष्ठ अध्यक्ष राम स्वरूप यादव, प्रदेश महासचिव दीप नारायण सिंह, प्रदेश महासचिव सुशील सिंह, प्रदेश उपाध्यक्ष हाजी हसीब खान, के.बी. सहाय, प्रदेश सचिव राजु कुमार सिंह, कपिलदेव यादव समेत सैकड़ो कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

ट्रक में बियर लोड कर बंगाल ले जाते तीन धराये, 1400 पेटी बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : बालिडीह बियाडा स्थित बियर फैक्ट्री से लोड कर निकली बियर की एक बड़ी खेप चोरी की कोशिश में धरी गई। पुलिस ने चेकिंग के दौरान ट्रक (संख्या- जेएच 13ई-9304) को पिण्ड्राजोरा थाना क्षेत्र में पकड़ा। ट्रक से कुल 1400 पेटी गॉड फादर बियर बरामद की गई। इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस को 26/27 अप्रैल की रात करीब 12:30 बजे सूचना मिली थी कि बियर से लदा ट्रक बंगाल ले जाया जा रहा है। सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर विशेष टीम गठित कर सीमावर्ती इलाकों में नाकाबंदी की गई। चेकिंग के दौरान संदिग्ध ट्रक को रोका गया। पूछताछ में चालक समेत तीनों आरोपितों ने फर्जी दस्तावेज के सहारे माल चोरी की साजिश कुबूल की। पकड़े गए आरोपितों में अब्दुल बारीक (गाजीपुर, यूपी), सहबाज आलम (रांची) और मुजफ्फर अंसारी (हजारीबाग) शामिल हैं। ट्रांसपोर्टर विवेक कुमार साहू ने बताया कि बसंत पासवान के माध्यम से माल लोड कराया गया था, लेकिन ट्रांसपोर्टिंग भुगतान के समय संदेह हुआ और मामले की जानकारी पुलिस को दी गई। पुलिस ने ट्रक, बियर के 1400 पेटी और दो मोबाइल फोन जब्त कर लिए हैं। बालीडीह थाना में मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। गिरोह से जुड़े अन्य सदस्यों की तलाश की जा रही है।

समाज सेवी ने बोकारो कब्बड्डी डिस्ट्रिक्ट एसोसिएशन टीम को किया किट वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : कब्बड्डी डिस्ट्रिक्ट एसोसिएशन , बोकारो के 24 खिलाड़ियों को समाज सेवी चंद्र शेखर सिंह, अनुराधा देवी, गौरांग पातर, बेहतर झारखंड के अजीत मौर्य ने किट प्रदान की। सेक्टर नाइन सी क्लब मैदान में आयोजित समारोह में चंद्र शेखर ने 12 लड़के और 12 लड़कियों को लोअर और अपर जर्सी प्रदान की। इस अवसर पर अजीत मौर्य ने कहा कि झारखंड सहित बोकारो में कब्बड्डी खेल को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। इसी के निमित वो बोकारो जिला कबड्डी एसोसिएशन के मनोज कुमार शर्मा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर सभी खिलाड़ियों को आए हुए अतिथियों ने सभी को शुभकामनाएं दी। ज्ञात हो सभी खिलाड़ी खूंटी के बिरसा मैदान में 28 से 30 अप्रैल तक आयोजित राज्यस्तरीय 10 वी जूनियर बालक बालिका कबड्डी प्रतियोगिता में भाग लेने को जायेंगे। कार्यक्रम में समाजसेवी चंद्रशेखर सिंह, अनुराधा देवी, अजीत मौर्य,गौरांग पातर, विक्की कुमार, अनिल कुमार, विकाश कुमार सहित अन्य उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

नीमडीह थाना के झिमड़ी में लड़की को उठा ले गया युवक, भड़के लोग

नीमडीह/चांडिल : सरायकेला – खरसावां जिला के नीमडीह थाना अंतर्गत झिमड़ी में कथित रूप से हथियार के बल पर एक लड़की को उठाकर ले जाने के विरोध में शनिवार को एक समुदाय के आक्रोशित लोगों ने जमकर हंगामा किया। इस दौरान आक्रोशित लोगों ने झिमडी बाजार में चार दुकानों को आग के हवाले कर दिया। पुलिस ने भीड़ को काबू करने के लिए पहले लाठी चार्ज किया, इसके बाद हवाई फायरिंग कर लोगों को हटाने का प्रयास किया। इस बीच आक्रोशित ग्रामीणों ने दूसरे समुदाय के आरोपी के मकान को भी आग के हवाले कर दिया। आक्रोशित लोगों ने चांडिल के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के वाहन को तोड़फोड़ कर नुकसान पहुंचाया। घटना के बाद क्षेत्र में तनाव की स्थिति बन गया है। युवती को अपहरण करने का आरोपी गिरफ्तार इस मामले में पुलिस ने तस्लीम अंसारी को गिरफ्तार कर लिया गया है। पीड़िता को भी सकुशल बरामद कर लिया गया है। आरोपी तस्लीम अंसारी पर नीमडीह थाना में धारा प्राथमिकी दर्ज करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

मुरी स्टेशन पर वाटर मशीन बंद यात्री परेशान

सिल्ली : मुरी स्टेशन परिसर एक नंबर प्लेटफॉर्म एवं दो नंबर प्लेटफार्म पर वाटर एटीएम मशीन कई महीनो से बंद पड़ा हुआ है जिससे यात्रियों को पानी की समस्या से परेशानी उठानी पड़ रही है। बताते चले की क्षेत्र में भीषण गर्मी शुरू हो चुकी है वही पानी को लेकर क्षेत्र में समस्या बनी हुई है दूसरी ओर मुरी स्टेशन परिसर में एक नंबर एवं दो नंबर पर पानी की समस्या बनी हुई है ट्रेन आते ही लोग पानी के लिए इधर-उधर भटकते नजर आते हैं अंत में स्टेशन पर स्टॉल के माध्यम से 20 रुपया बोतल पानी खरीद कर पीते हुए नजर आते हैं स्टॉल वाले का पानी ज्यादा सेल होता है जिससे मुनाफा अधिक कमाते हैं। स्टेशन परिसरों पर केंद्र सरकार के द्वारा यात्रियों को सुविधा के लिए वाटर एटीएम मशीन लगाया गया है जहां 5 रुपया में पानी दिया जाता है। मगर मुरी स्टेशन में वाटर मशीन बंद पड़ा हुआ है जिससे स्टॉल पानी बेचकर मुनाफा ज्यादा कमाने में लगे हुए हैं। वही रेलवे के अधिकारी द्वारा किसी प्रकार का कार्रवाई नहीं किया जाना समझ से परे बना हुआ है।

आजसू पार्टी पुरुलिया जिला कमेटी की हुई बैठक

सिल्ली: आजसू पार्टी पुरुलिया जिला कमेटी की एक बैठक रविवार को सिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय परिसर में जिला सभापति अतुल माहातो की अध्यक्षता में की गई। आजसू पार्टी प्रमुख सह पुर्व उप मुख्यमंत्री सुदेश कुमार महतो मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। बैठक में पार्टी की मजबूती एवं विस्तार को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।इस दौरान सुदेश महतो ने कहा कि सभी कार्यकर्ता पूरे बंगाल में संगठन को विस्तार देने की तैयारी शुरू कर दें। उन्होंने कहा कि बागमुंडी विधानसभा के लोगों का आजसू पर विश्वास बढ़ा है। इसे बरकरार रखने के लिए हमें एक जुटता से काम करना होगा। संगठन में अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर सरकार की ओर से बनाई जा रही हर गलत नीतियों को आवाज उठाने होंगे। उन्होंने सर्वसम्मति से पंचायत स्तर पर प्रभारी नियुक्त करने का निर्देश दिया। बैठक में राज्य कन्वेनर अजय महतो, धिरेन रजक, श्रीधर माहातो, झालदा प्रखंड अध्यक्ष बंकिम माहातो, जिला सचिव गोऊर माहातो, बागमुंडी प्रखंड अध्यक्ष आशुतोष पांडे आदि ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। इस मौके पर सिल्ली प्रमुख जितेंद्र बड़ाइक, राजेश माहातो, विकास माहातो, रिझु माहातो, बैद्यनाथ कुइरी, नितिश कुइरी, दिपक माहातो, हरे कृष्ण माहातो, महेश्वर कालिंदी, रतन माहातो, अम्बुज माहातो, जयपाल माहातो, अननुप गोस्वामी समेत आजसू कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भीम आर्मी ने कैंडल मार्च निकालकर आतंकी हमले के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

बोकारो : भीम आर्मी बोकारो महानगर के अध्यक्ष अजय कुमार के अध्यक्षता में नया मोर बिरसा मुण्डा चौक बोकारो में काश्मीर के पहलगाम मे हुए आतंकी हमले मे शहीद हुए शैलानियो को केंडल मार्च निकाल कर शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की गई!अजय कुमार ने कहा की इस तरह की कायराना हमला से मनवाता शर्मशार हुआ है, भारत इस तरह की कायराना हमला कभी भी बर्दास्त ना कीया है ना ही कभी करेगा, हम भीम आर्मी के सभी सदस्य इसकी घोर निंदा करते हैं और भारत सरकार से आतंकवादियों को जल्द से जल्द पकड़कर कठोर से कठोर सजा दे। और गृहमंत्री अमित शाह जी अपने पद से इस्तीफा दे। इस कार्यक्रम मे मुख्य रूप से सुनील प्रसाद, उदय शंकर, चंदन कुमार, दीपक रजक, रविशंकर प्रसाद, ध्रुव कुमार, मुकेश कालिंदी, आनंद कुमार, रंजीत कुमार, विनोद कालिंदी, धनंजय कुमार, प्रभु नाथ बौद्ध, अवधेश पासवान, विजय नाथ, हामिद खान आदि उपास्थि रहें।

चित्रगुप्त महापरिवार ने दी स्व. शैलेश्वर प्रसाद वर्मा को श्रद्धांजलि, पोते दर्श वर्मा ने संभाला सम्मान

बोकारो : चित्रगुप्त महा परिवार बोकारो द्वारा सेक्टर-4 में आयोजित चित्रांश सम्मान समारोह में गिरिडीह जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष, कसमार प्रखंड के प्रथम प्रमुख एवं चित्रगुप्त महा परिवार के संस्थापक सदस्य, बगदा निवासी स्वर्गीय शैलेश्वर प्रसाद वर्मा को मरणोपरांत सम्मानित किया गया। उनके अद्वितीय सामाजिक योगदान को याद करते हुए, उनका सम्मान उनके पोते दर्श वर्मा (पिता नितेश वर्मा) ने धनबाद विधायक राज सिन्हा के कर-कमलों से ग्रहण किया। महज 10 वर्ष की उम्र में जब दर्श ने यह सम्मान ग्रहण किया, तो उनकी आंखें नम थीं। चेहरे पर अपने दादा के योगदान पर गर्व झलक रहा था, वहीं दिल में उनके अभाव का गहरा दर्द भी था।

एक नजर

दुष्कर्म करने वाले युवक को पुलिस ने किया गिरफ्तार

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना क्षेत्र में दुष्कर्म के प्रयास मामले में एक केस दर्ज किया गया है। ग्रामीणों ने कथित आरोपी को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी को जेल भेजने की तैयारी कर रही है। जानकारी के अनुसार राधानगर थाना क्षेत्र के एक गांव का विवाहित युवक एक किशोरी के घर में घुसकर दुष्कर्म करने का प्रयास कर रहा था। इसी क्रम में ग्रामीणों ने उसे पकड़ लिया। उधर पीड़िता ने आरोप लगाया है कि तीन-चार महीने पहले भी युक्त युवक ने उसके साथ दुष्कर्म किया था।

24 प्रहर व्यापी हरिनाम संकीर्तन 6 मई से प्रारंभ

साहिबगंज/बोरियो : बोरिया प्राचीन दुर्गा मंदिर प्रांगण में 24 प्रहर व्यापी हरिनाम संकीर्तन सह पाला कीर्तन 6 मई से 9 मई तक आयोजित होगा। कीर्तन समिति बोरियों के सदस्यों ने बताया कि 6 मई से 8 मई तक कीर्तन होगा। 9 में को धूलाट एवं नगर परिभ्रमण होगा। जहां हिंदी दल में मुकेश पांडे (जमुई, बिहार), बिनोदानंद यादव (गोड्डा, झारखंड), बंगला दल में देवाशीष मंडल (मेदनीपुर, बंगाल), अर्पिता गांगुली, नमिता गोस्वामी के द्वारा कीर्तन प्रस्तुत किया जाएगा।

आग लगने से दो दुकान जलकर राख लाखो का नुकसान

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना क्षेत्र के जोंका पंचायत के मुहर्रम चौक पर बीती रात को अचानक आग लगने से दो दुकान पूरी तरह से जलाकर राख हो गया है। अग्निकांड में तौकिल खान और चानू शेख नामक दो दुकानदारों को नुकसान हुआ है। जानकारी के अनुसार, तौकिल खान मुहर्रम चौक पर चप्पल और गैस सिलेंडर की दुकान चलाते है। जबकि चानू शेख का वहीं पर एक पोल्ट्री फार्म था।रोजाना की तरह दोनों दुकानदार रात में अपनी दुकानें बंद करके घर चले गए थे। देर रात स्थानीय लोगों ने उन्हें उनकी दुकानों में आग लगने की सूचना दी। खबर मिलते ही तौकिल खान और चानू शेख घटनास्थल पर पहुंचे और स्थानीय लोगों की मदद से आग बुझाने का प्रयास किया गया। लेकिन आग इतनी तेजी से फैली थी कि दुकानों में रखा सारा सामान जलकर राख हो गया। अग्निकांड में दोनों दुकानदारों को लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। जिससे उनकी आजीविका बुरी तरह प्रभावित हुई है। आग लगने के वास्तविक कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है, लेकिन स्थानीय लोगों के बीच ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है।

खेल-खेल में आपसी झगड़ा में दो बच्चा घायल

साहिबगंज : मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत शोभनपुर दियारा में आपसी विवाद में मारपीट हो गई। मारपीट के दौरान दो बालक घायल हो गए दोनों बालक घायल को इलाज के लिए शनिवार की बीते रात अस्पताल में भर्ती कराया अस्पताल में चिकित्सक पिंकू चौधरी के द्वारा इलाज प्रारंभ किया गया। मिली जानकारी के अनुसार सोभनपुर दियारा निवासी नजीर हुसैन के 12 वर्षीय पुत्र मोहम्मद आसिफ व सोभनपुर दियारा निवासी माले कुस्तूर के 10 वर्षीय पुत्र सनाउल्लाह दोनों बालक खेल रहे थे। खेल-खेल में दोनों में लड़ाई झगड़ा हो गई जिसमें दोनों घायल हो गए,वही एक पक्ष के घायल बालक आसिफ के बड़े भाई मोहम्मद नसीम ने बताया कि हमारे भाई आ रहा था, उसके पॉकेट में पैसे था वह छीन लिया और गले के लॉकेट भी लेकर फरार हो गया।

संगठन मजबूती और संविधान बचाओ रैली को सफल बनाने के लिए जिला प्रवेक्षक ने की बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : जिले में रविवार को पाकुड़ कांग्रेस कार्यलय में एक बैठक प्रखंड अध्यक्ष प्रखंड प्रवेक्षक की बैठक में जिला प्रवेक्षक प्रदेश उपाध्यक्ष सुलतान अहमद मुख्याथित के रूप में उपस्थित हुए जिला अध्यक्ष श्री कुमार सरकार की अध्यक्षता में उपस्थित सभी प्रखंड अध्यक्ष से सुलतान अहमद जी ने संगठन से संबंधित जानकारी ली और सभी प्रखंडों में प्रदेश प्रभारी श्री के राजू जी के निर्देश पर प्रखंड कमिटी में 9 महासचिव 2 उपाध्यक्ष सहित मंडल पंचायत बूथ कमिटी को जल्द बनाकर पूरा करना है साथ ही जिला में 40 दिन तक संविधान बचाओ चलने वाले कार्यक्रमों को सुचारू रूप से करने का निर्देश श्री सुलतान अहमद ने दिया एवं आगामी 3 मई को रांची में संविधान बचाओ कार्यक्रम होना है जिसमे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मल्लिका अर्जुन खड़गे साहब सहित देश ओर राज्य के बड़े नेता शमिल होंगे इस कार्यक्रम में पाकुड़ जिले के सभी प्रखंडों से सैकड़ों कार्यकताओं को जाना है इसकी जिम्मेवारी प्रखंड अध्यक्ष और प्रखंड प्रवेक्षक को दिया गया है बैठक में जिला अध्यक्ष श्री कुमार सरकार हिरणपुर प्रखंड प्रवेक्षक मंजुला हंसदा गुलाम अहमद पाकुड़ प्रखंड अध्यक्ष मानसरुल हक हिरणपुर प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम पाकुड़ प्रवेक्षक अशोक दास अर्धेंदु गांगुली इस्लाम अंसारी मो कलीमुद्दीन नगर अध्यक्ष वंश राज गोप मुर्शीद आलम मौजूद थे।

सड़क दुर्घटना में एक की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : मुफस्सिल थाना क्षेत्र महादेवगंज अंतर्गत चौक के समीप मोटरसाइकिल सवार पति-पत्नी को 207 वाहन ने बीते दिनों 25 अप्रैल 2025 को जोरदार टक्कर मार दिया था, टक्कर लगने से पति-पत्नी घायल हो गए थे, घायल आधे घंटे तक रोड पर तड़पता रहा और राहगीरों ने तमाशा देखते रहे। लेकिन मानवता दिखाते हुए दो युवक चंदन कुमार ठाकुर व चुनचुन कुमार यादव ने दोनों घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया था। चिकित्सक मुकेश कुमार के द्वारा प्रारंभिक इलाज करते हुए दोनों घायल को हायर सेंटर रेफर कर दिया था। मिली जानकारी के अनुसार मिजाचौकी निवासी गर्जन प्रसाद यादव 61 वर्षीय व पत्नी 42 वर्षीय राजकुमारी देवी के बेटे अमित कुमार के शादी था और बारात साहिबगंज धर्मशाला शुक्रवार को आना था, जिसको लेकर शॉपिंग के लिए मिजाचौकी से मोटरसाइकिल में सवार होकर आया था, शॉपिंग करने के बाद, बैंक से पैसे निकालकर वापस मिजाचौकी घर जा रहा था। उसी दौरान 207 फोर व्हीलर वाहन ने जोरदार टक्कर मार दिया टक्कर इतनी भयानक थी कि दंपति घटनास्थल पर ही खून से लहू लोहान होकर बेहोश हो गए थे। आसपास के लोग मुख दर्शक बनकर देखते रहे लेकिन अस्पताल ले जाने वाला कोई नहीं था।

एएसआई सुमन बास्की की इलाज के दौरान मौत पुलिस पदाधिकारी व जवानो ने दी श्रद्धांजलि

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिले के मुफ्फसिल थाना में पदस्थापित एएसआई सुमन बास्की कि अचानक तबियत बिगड़ने पर उसे इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। इलाज के दौरान एएसआई सुमन बास्की की मौत हो गई। वही एएसआई सुमन बास्की के निधन की खबर सुनते ही पुलिस परिवार के बीच शोक का लहर दौड़ गया। शव का पोस्टमार्टम सदर अस्पताल के चिकित्सक डॉ ऋतुराज ने किया।पुलिस परिवार ने दुःख व्यक्त करते हुए मृत एएसआई सुमन बास्की को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। पुलिस परिवार ने मृतक सुमन बास्की के शव का दाह संस्कार के लिए पार्थिव शरीर को उनके पैतृक आवास गोड्डा जिले के पोड़ैयाहाट थाना क्षेत्र के बरगछा भेज दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार मृतक एएसआई सुमन बास्की पुलिस विभाग में वर्ष 2004 में भर्ती हुए थे। शोक सभा में वक्ताओं ने कहा कि उनका इस तरह का अचानक चला जाना पुलिस परिवार की बहुत बड़ी क्षति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे तथा उनके परिवारिक सदस्यों को इस असहनीय दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें। वही पुलिस लाइन मैदान में जिले के एसपी अमित कुमार सिंह सहित पुलिस पदाधिकारी ने मृतक एएसआई सुमन बास्की के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर नम आंखों से श्रद्धांजलि दी। इसके बाद उन्हे अंतिम विदाई दी गई। एसपी ने एएसआई सुमन बास्की के पार्थिव शरीर को कंधा देकर गृह क्षेत्र भेजा। पुलिस सूत्रो से मिली जानकारी के अनुसार मृतक एएसआई सुमन बास्की इसके पूर्व झारखंड के हजारीबाग थाना में पदस्थापित थे। मृतक एएसआई अपने पीछे चार पुत्री, एक पुत्र व पत्नी सहित भरा पुरा परिवार को छोड़ गए।

तिलकामांझी के प्रतिमा का हुआ अनावरण

पाकुड़/अमड़ापाड़ा : जिले के अमड़ापाड़ा प्रखंड के डुमरचीर पंचायत अंतर्गत पाकोडीह पहाड़िया टोला गांव में रविवार को अखिल भारतीय आदिम जनजाति विकास समिति के बैनर तले जबरा पहाड़िया उर्फ तिलकामांझी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। बीडीओ प्रमोद कुमार गुप्ता और शिवचरण मालतो ने संयुक्त रूप से फीता काटकर, पुष्प अर्पित कर और नारियल फोड़कर प्रतिमा का अनावरण किया। इसके बाद तिलकामांझी की प्रतिमा की पूजा-अर्चना कर माल्यार्पण किया गया। मौके पर बीडीओ ने कहा कि बाबा तिलकामांझी ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अदम्य साहस के साथ संघर्ष किया। उन्होंने अंग्रेज अधिकारी अगस्टस क्लीवलैंड को तीर मारकर ब्रिटिश सत्ता को झकझोर दिया था।

शादी का झांसा देखकर यौन शोषण करने के मामले में पुलिस ने एक युवक को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज/उधवा : राधानगर थाना क्षेत्र के एक गांव में शादी का झांसा देकर एक युवती के साथ यौन शौषण किए जाने के मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसे रविवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। पीड़िता के पिता ने थाना पुलिस को आवेदन दिया है। आरोपी आफताब आलम पर आरोप है कि उसने शादी का झांसा देकर युवती का यौन शोषण किया है। आरोपी उससे शादी का वादा किया था और इसी भरोसे पर उसने उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित किए। हालांकि, बाद में आफताब अपने वादे से मुकर गया और शादी करने से इनकार कर दिया। शिकायत के आधार पर, पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी आफताब आलम के विरुद्ध 142/25 भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा-69 के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी आफताब आलम को गिरफ्तार कर लिया।

अज्ञात महिला का मिला शव, पुलिस जांच में जुटी

साहिबगंज : बोरियो थाना क्षेत्र अंतर्गत एक अज्ञात महिला का शव पुलिस ने बरामद किया है। बोरियो थाना प्रभारी पंकज वर्मा ने बताया कि 27 अप्रैल 2025 को संध्या 4:30 बजे के लगभग बाडर पहाड़ी के नीचे एक अज्ञात महिला का शव पाया गया, जिसकी उम्र करीब 55 वर्षीय है। उक्त अज्ञात महिला का शव पुलिस ने अपने कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल साहिबगंज भेज दिया। जहां पोस्टमार्टम करने के उपरांत महिला का शव को तीन दिनों के लिए शव गृह में रखा गया है। पुलिस के अनुसार मृतक महिला का पहचान नहीं हो पाया है।

राज्यपाल से मिला एआईडीएसओ का प्रतिनिधिमंडल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

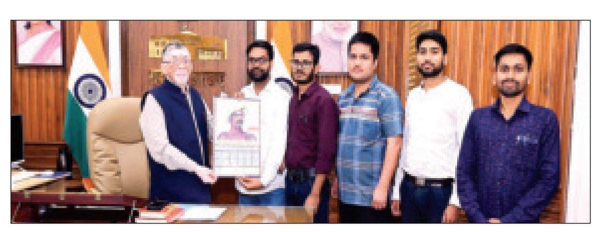

ईचागढ़ : रविवार को ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक स्टूडेंट ऑर्गनाइजेशन झारखंड राज्य कमिटी का प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल संतोष गंगवार से मिला ओर इस वर्ष बिरसा मुंडा की 150 वीं जन्म वार्षिकी और 125 वीं शहादत वार्षिकी के उपलक्ष्य में राज्य कमिटी द्वारा प्रकाशित बिरसा मुंडा के जीवन संघर्ष पर किताब एवं कैलेंडर भेंट की और राज्य के विभिन्न शैक्षिक समस्याओं पर वार्ता हुई। वर्ष 2016 के बाद से झारखंड शिक्षण पात्रता परीक्षा का आयोजन नही हुआ है,JTET परीक्षा का आयोजन अविलंब हो। सभी विश्विद्यालय में कुलपति ,प्रति कुलपति, वित्त अधिकारी की नियुक्ति की जाए। TGT/PGT के 8900 से अधिक सरेंडर किए गए पदों को पुनः बहाल किया जाए,और शिक्षक नियुक्ति प्रक्रिया जल्द शुरू किया जाए। कोल्हान विश्वविद्यालय के अंतर्गत जेनेरिक और मेथड पेपर की परीक्षा आयोजित की जाए। कोल्हान विश्वविद्यालय में एक साल पहले हुई ढलऊ परीक्षा की रिजल्ट जारी करने। कॉलेज में इंटर की पढ़ाई जारी रखने एवं आंदोलनरत इंटर के शिक्षक और कर्मचारियों की मांग पूरी करने। यूनिवर्सिटी/कॉलेज के गैर शैक्षणिक पदों पर जल्द नियुक्ति हो। छात्र संघ चुनाव की आयोजन कराया जाए। पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक पास फेल प्रथा शुरू करने । स्नातक और स्नातकोत्तर में नामांकन के लिए CUET की बाध्यता खत्म कर सबका नामांकन सुनिश्चित करने। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 रद्द की जाए। राज्यपाल के द्वारा सभी विषयों पर सकारात्मक आश्वासन दिया गया वह विभिन्न विभागों के स्तर पर समस्याओं के समाधान हेतु विषयों को अग्रसारित करने का आश्वासन दिया। साथ ही आगामी मई को राजधानी रांची में मुख्यमंत्री के समक्ष छात्रों का विशाल प्रदर्शन उपरोक्त विषय को लेकर की जाएगी। प्रतिनिधिमंडल में प्रदेश सचिव सोहन महतो, प्रदेश उपाध्यक्ष जीवन यादव, प्रदेश सचिव मंडली सदस्य शुभम झा, विशेश्वर महतो, सत्येन मोंहन्ता शामिल थें।

'मन की बात' कार्यक्रम को पाकुड़ जिले के बूथों स्तर पर कार्यकर्ताओं ने सुना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : जिले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात कार्यक्रम को पाकुड़ जिले के बूथों स्तर पर कार्यकताओं ने सुना। भाजपा जिलाध्यक्ष अमृत पाण्डेय ने पाकुड़ विधानसभा के बूथ संख्या 406 में सुना। इस कार्यक्रम को जिला महामंत्री रूपेश भगत, जिला उपाध्यक्ष धर्मेंद्र त्रिवेदी, विजय भगत, राजेंद्र शेखर सिंह, अनिता मुर्मू, सरिता मुर्मू सहित पाकुड़ नगर अध्यक्ष सोहन मंडल, बीचामहल मंडल अध्यक्ष धनेश्वर साह, गंधाईपुर मंडल अध्यक्ष मनोरंजन सरकार,दादपुर मंडल अध्यक्ष सुशांत घोष, नबीनगर मंडल अध्यक्ष मानसा तुरी,हिरणपुर मंडल अध्यक्ष सुकुमार मंडल, आमड़ापाड़ा मंडल अध्यक्ष आशीष हेंब्रम ,पाकुरिया मंडल अध्यक्ष विजय भगत, बीरकिट्टी मंडल अध्यक्ष फूल बाबू कोड़ा, महेशपुर मंडल अध्यक्ष सुखेन घोष, कैराछतर मंडल अध्यक्ष गौतम पाल के नेतृत्व में सभी कार्यकताओं ने अपने-अपने बूथों पर सुना। 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने एक बार फिर से पहलगाम हमले को लेकर दुख जताया और साथ ही पहलगाम के दोषियों को कड़ी सजा देने की बात दोहराई। उन्होंने कहा कि 'पहलगाम की घटना ने देशवासियों को पीड़ा पहुंचाई है और इसे लेकर देशवासियों के मन में गहरी पीड़ा है। लोग पीड़ित परिजनों के दर्द को महसूस कर सकते हैं। हर भारतीय का खून आतंक की तस्वीरों को देखकर खौल रहा है। ऐसे समय में जब कश्मीर में शांति लौट रही थी और लोकतंत्र मजबूत हो रहा था। पर्यटकों की संख्या में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हो रही थी और लोगों की कमाई बढ़ रही थी, लेकिन देश के दुश्मनों को और जम्मू कश्मीर के दुश्मनों को ये रास नहीं आया। आतंकी चाहते हैं कि कश्मीर फिर से तबाह हो जाए। इस मुश्किल वक्त में 140 करोड़ देशवासियों की एकता सबसे बड़ा आधार है।' उन्होंने कहा कि हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत हमारे 140 करोड़ नागरिक हैं, उनका सामर्थ्य है, उनकी इच्छा शक्ति है और जब करोड़ों लोग, एक-साथ किसी अभियान से जुड़ जाते हैं, तो उसका प्रभाव बहुत बड़ा होता है। इसका एक उदाहरण है ह्यएक पेड़ माँ के नामह्न झ्र ये अभियान उस माँ के नाम है, जिसने हमें जन्म दिया और ये उस धरती माँ के लिए भी है, जो हमें अपनी गोद में धारण किए रहती है। साथियो, 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर इस अभियान के एक साल पूरे हो रहे हैं। इस एक साल में इस अभियान के तहत देश-भर में माँ के नाम पर 140 करोड़ से ज्यादा पेड़ लगाए गए हैं। भारत की इस पहल को देखते हुए, देश के बाहर भी लोगों ने अपनी माँ के नाम पर पेड़ लगाए हैं। आप भी इस अभियान का हिस्सा बनें, ताकि एक साल पूरा होने पर, अपनी भागीदारी पर आप गर्व कर सकें। उन्होंने कहा कि मन की बात की इस लंबी यात्रा में आपने इस कार्यक्रम के साथ एक आत्मीय रिश्ता बना लिया है देशवासी जो उपलब्धियाँ दूसरों से साझा करना चाहते हैं उसे मन की बात के माध्यम से लोगों तक पहुंचाते हैं। अगले महीने हम फिर मिलकर देश की विविधताओं, गौरवशाली परंपराओं और नई उपलब्धियों की बात करेंगे।

संक्षिप्त खबरें

संत जॉन चर्च में 75 बच्चों का पहला परम प्रसाद संस्कार समारोह का हुआ आयोजन

चैनपुर : चैनपुर के संत जॉन चर्च में रविवार को 75 बच्चों का पहला परम प्रसाद संस्कार समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर, सफेद वस्त्र धारण किए हुए बच्चों ने हाथों में मोमबत्ती लेकर चर्च परिसर में प्रवेश किया, जहां उनका स्वागत किया गया। संत जॉन चर्च के डीन फादर जेवियरियानुस किंण्डो ने विशेष पवित्र मिस्सा पूजा कराई। अपने संदेश में, उन्होंने परम प्रसाद संस्कार के महत्व और प्रभु यीशु की महिमा का गुणगान किया। उन्होंने कहा कि परम प्रसाद संस्कार लेने से पवित्र आत्मा का वरदान मिलता है और अच्छे जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। फादर जेवियरियानुस किंण्डो ने बच्चों को संस्कारी और अच्छा व्यक्ति बनने का संदेश दिया। उन्होंने माता-पिता से कहा कि वे अपने बच्चों को अच्छे संस्कार दें, क्योंकि बच्चे उनके अनुसार ही आगे बढ़ते हैं। संस्कार करने वाले बच्चों ने ईश्वर का निवेदन किया और पाठ पढ़ा और ईश्वर का धन्यवाद देते हुए परम प्रसाद ग्रहण किया। उपस्थित सभी मसीही समुदाय के लोगों को भी परम प्रसाद दिया गया। यह समारोह न केवल बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। बल्कि उनके परिवारों और समुदाय के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवसर था। समारोह में उपस्थित सभी लोगों ने बच्चों को बधाई दी और उनके उज्वल भविष्य की कामना की। संत जॉन चर्च के डीन फादर जेवियरियानुस किंण्डो ने कहा कि चर्च भविष्य में भी इस तरह के समारोह आयोजित करता रहेगा। जिससे बच्चों को अपने धर्म और संस्कृति के बारे में जानने का अवसर मिल सके। उन्होंने कहा कि चर्च का उद्देश्य बच्चों को अच्छे संस्कार देना और उन्हें समाज के जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

श्री जगन्नाथ महाप्रभु मंदिर और मासी बाड़ी के निर्माण कार्य का हुआ शुभारंभ

पटमदा : श्री श्री जगन्नाथ महाप्रभु मंदिर निर्माण कमिटी की एक आवश्यक बैठक रविवार को समिति के अध्यक्ष गिरिजा प्रसाद मिश्रा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा एक निर्णय लिया गया। आगामी 3 मई शनिवार को प्रात: 9 बजे से मंदिर निर्माण कमिटी की बैठक निर्धारित किया गया। आगामी बैठक में कई महत्वपूर्ण विषयों चर्चा होगी। जिसमे कलश यात्रा,प्राण प्रतिष्ठा सहित कई बातों पर चर्चा होगी। वही श्री श्री जगन्नाथ महाप्रभु मंदिर निर्माण और मासी बाड़ी निर्माण कार्य का शुभारंभ कर दिया गया है ।मंदिर में कमिटी के सभी पदाधिकारी और सदस्य निर्माण कार्य को पूर्ण करवाने में भरपूर, सहयोग दे रहे हैं। वही क्षेत्र के सभी गांवों के ग्रामीणों में मंदिर निर्माण को लेकर काफी उत्साह देखा जा रहा हैं ।बैठक में अध्यक्ष गिरिजा प्रसाद मिश्रा, प्रदीप कुमार महतो,मृत्युंजय महतो,श्रीमंत मिश्रा, शंभू दास, मिथिलेश कुमार तिवारी, जवाहर लाल मिश्रा,कृष्णा पद सहिस, बिरिंची महतो,प्रेम चांद महतो आदि उपस्थित थे।

2 करोड़ 73 लाख की लागत से जी-थ्री जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र बनकर तैयार

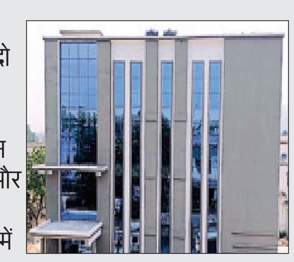

साहिबगंज : साहिबगंज सदर अस्पताल के मुख्य गेट के निकट दो करोड़ 73 लाख की लागत से बना जी-थ्री जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र बनकर तैयार है। तीन मंजिला भवन में बच्चों के लिए मल्टीप्ले स्टेशन और डबल आर्च स्विंग का निर्माण किया गया है। 15 कमरों वाले इस भवन में जिला शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र एक ऐसा केंद्र है जो 6 वर्ष तक के बच्चों को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों से उबरने में मदद करता है, खासकर विकलांगता के कारण होने वाली चुनौतियों से यह केंद्र मूल्यांकन, उपचार, परामर्श और विशेष शिक्षा प्रदान करता है, ताकि बच्चों के विकास में देरी या विकारों को दूर किया जा सके। भवन निर्माण निगम लिमिटेड, रांची द्वारा निर्मित इस केंद्र में बच्चों के खेलने के लिए खिलौने और झूले भी लगाए गए हैं। लिफ्ट की भी सुविधा उपलब्ध कराई गई है। निर्माण कार्य के शुभम तिवारी ने बताया कि भवन निर्धारित समय पर बनकर तैयार हो गया है और तीन दिन के भीतर हैंडओवर कर दिया जाएगा। इसके बाद बच्चों का इलाज स्वास्थ्य विभाग द्वारा शुरू किया जाएगा। सिविल सर्जन डॉ. प्रवीण कुमार संथालिया ने शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया कि दो कमरों में दरवाजे पूर्ण रूप से नहीं लगे हैं और दरवाजों पर वार्ड का नाम नहीं लिखा गया है। उन्होंने दो दिन के भीतर इन खामियों को दुरुस्त करने का निर्देश दिया। इसके बाद केंद्र का हैंडओवर किया जाएगा। आरबीएसके के पांच चिकित्सक करेंगे इलाज: शीघ्र हस्तक्षेप केंद्र में पांच चिकित्सक बच्चों का इलाज करेंगे। सीएस ने बताया कि आरबीएसके के तहत होम्योपैथ और आयुर्वेद पद्धति से भी इस केंद्र में इलाज किया जाएगा। यदि होंठ कटे या अत्यधिक कुपोषण के शिकार बच्चे आते हैं तो उन्हें यहां से रेफर कर उचित इलाज कराया जायेगा।

समाजसेवी शक्ति नाथ अमन के नेतृत्व में हुआ रक्तदान शिविर का आयोजन

बरहरवा : रविवार को समय 10:30 बजे समाजसेवी शक्ति नाथ अमन के नेतृत्व में महा रक्तदान शिविर नगर पंचायत बरहरवा के पटवारी धर्मशाला में आयोजित किया गया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, बरहरवा थाना प्रभारी बरहरवा ने फीता काटकर किया। समाजसेवी अमन ने कहा रक्तदान महादान है आपके दिए हुए रक्त से कई लोगों का जीवन बचाया जा सकता है। वही झामुमो नगर अध्यक्ष धर्मवीर कुमार महतो ने कहा रक्तदान सेवा मानवता के लिए सबसे अच्छी सामाजिक सेवा है इससे किसी का भी जीवन को बचाने का अवसर मिलता है। शिविर में पहुंचकर रक्तदान करने वाले नीलकंठ साहा, मोहम्मद इकबाल हुसैन, दिनेश सेन, कृष्ण कुमार, बपन कुमार साहा,प्रकाश मंडल, सुशील सेन, उज्जवल दास, छोटू कुमार, वरुण मंडल, फिरोज खान, मनोज कुमार साहा, सहित शामिल रहे।

मनुष्य के मौलिक सृजन को संरक्षित करना बड़ी चुनौती

रचनात्मकता, सृजनात्मकता और संरचनात्मकता मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है, मानव की इन मौलिक विशेषताओं एवं उपलब्धियों को उचित सम्मान मिले, उचित प्रोत्साहन एवं पारिश्रमिक मिले, ऐसे नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए ही हर साल 26 अप्रैल को विश्व बौद्धिक संपदा दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य बौद्धिक संपदा (आईपी) के बारे में जागरूकता बढ़ाना है और नवाचार तथा रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में आईपी की भूमिका को उजागर करना है। कृत्रिम बौद्धिकता के दौर में मानव की स्वतः स्फूर्त बौद्धिकता का संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रोत्साहन ज्यादा जरूरी है। 2025 की थीम ह्यआईपी और संगीतः आईपी की धड़कन महसूस करेंह्न है। यह संगीत उद्योग में बौद्धिक संपदा (आईपी) की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है, इस थीम का उद्देश्य आईपी के माध्यम से संगीत रचनाकारों की रचनाओं की रक्षा करना और उन्हें उनके काम के लिए उचित मान्यता दिलाना है। 26 अप्रैल को विश्व बौद्धिक संपदा दिवस के लिए इसलिए चुना गया क्योंकि इसी दिन 1970 में विश्व बौद्धिक संपदा संगठन की स्थापना करने वाला कन्वेंशन लागू हुआ था। यह दिन बौद्धिक संपदा अधिकारों जैसे पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क आदि के महत्व को उजागर करता है, जो नवाचार और रचनात्मकता को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। बौद्धिक संपदा दिमाग की रचनाओं से संबंधित है, जैसे आविष्कार, साहित्यिक सृजन, संगीत, कला और कलात्मक कार्य, डिजाइन और व्यापार में उपयोग किए जाने वाले प्रतीक, नाम और चित्र आदि। ऐसे रचनात्मक काम जो पहले नहीं किया गया हो, ये हमारी बौद्धिक संपदा है। इस रचनात्मक सम्पदा का कोई दूसरा अनाधिकृत उपयोग नहीं सके, इसके लिए हमें अपनी बौद्धिक संपदा को सुरक्षित एवं संरक्षित करवाना चाहिए। इसी उद्देश्य से यह दिवस बौद्धिक संपदा संरक्षण के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है, दुनियाभर में बौद्धिक संपदा संरक्षण के प्रभाव को विस्तार देता है, देशों से बौद्धिक संपदा संरक्षण कानूनों और विनियमों को प्रचारित और लोकप्रिय बनाने का आग्रह करता है, बौद्धिक संपदा अधिकारों के बारे में सार्वजनिक कानूनी जागरूकता बढ़ाता है। इसके साथ ही इसका बड़ा उद्देश्य है विभिन्न देशों में आविष्कार-नवाचार गतिविधियों को प्रोत्साहित करना और बौद्धिक संपदा क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान को मजबूत करना है। भारत भी विश्व बौद्धिक संपदा संगठन का सदस्य है। इस संगठन की स्थापना 14 जुलाई 1967 को हुई थी, जिसका मुख्यालय जिनेवा, स्विट्जरलैंड में है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के उद्भव एवं प्रचलन का बौद्धिक संपदा (आईपी) ढांचे पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है, जो एक बड़ी चुनौती है। हमें एआई जैसे नवाचार प्रोत्साहनों के उभरते परिदृश्य और मौजूदा आईपी ढांचे के लिए इसके द्वारा उत्पन्न चुनौतियों पर मंथन करना होगा। पेटेंट योग्यता दुविधाओं से लेकर कॉपीराइट पहेली तक, हम पाते हैं कि तेजी से तकनीकी प्रगति के बीच नवाचार को बढ़ावा देने और सामाजिक हितों की रक्षा करने के बीच एक नाजुक संतुलन है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के साथ हमारे संपर्क के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है। जैसे-जैसे एआई अभूतपूर्व गति से आगे बढ़ रहा है, इसका बौद्धिक संपदा के संरक्षण पर चुनौतीपूर्ण गहरा प्रभाव पड़ रहा है। चैटजीपीटी जैसे एआई चैट बॉट अविश्वसनीय रूप से परिष्कृत मानव-जैसे लिखित उत्तर दे सकते हैं, क्योंकि भाषा मॉडल की प्रश्नों और कार्यों को समझने और उन टेक्स्ट और डेटा के आधार पर प्रतिक्रियाएं देने की क्षमता है, जिन पर इसे प्रशिक्षित किया गया है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता अन्य क्षेत्रों में भी भी जैसे कला, लेखन, युद्ध, व्यापार, प्रबंधन, संगीत, फिल्म-निर्माण आदि में भी दखल बढ़ रहा है। एआई सार्वजनिक क्षेत्र में पहले से कहीं ज्यादा है और व्यवसाय में इसकी भूमिका दिनोंदिन बढ़ रही है। इसी के साथ बौद्धिक सम्पदा के सम्मुख सोशल मीडिया भी एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि सोशल मीडिया के दौर में हर कोई दूसरों की रचनात्मकता एवं मौलिक सृजन को अपना बता कर पेश कर रहा है। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी बौद्धिक संपदा के लिए जागरूक होना होगा। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ अलग और रचनात्मक एवं मौलिक काम करने की क्षमता होती है।

सूडोकु नवताल- 7414

★☆☆☆☆ सरल

5	9		1		2		3	8
			4		5			
2								5
		3		5		4	8	
	7						1	
	5	8		6		9		
8								1
			2		9			
3	4		6		7		5	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7413 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

भारत के लिये स्थाई सिरदर्द बन चुका आतंक पोषक पाकिस्तान

तनवीर जाफ़री

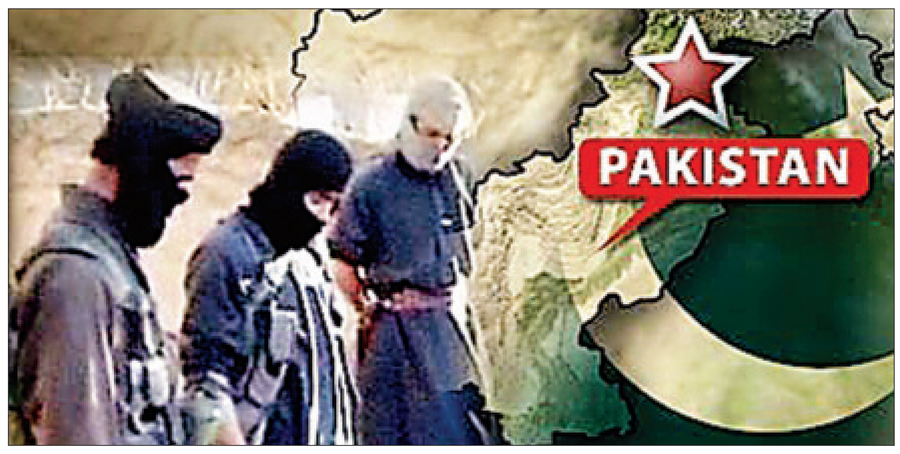

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में गत 22 अप्रैल को हुए बर्बरतापूर्ण व अमानवीय आतंकी हमले को देश जल्दी भुला नहीं पायेगा। इसमें 27 बेगुनाहों की जान चली गई जिनमें अधिकांश देश के विभिन्न राज्यों से आये हुये पर्यटक शामिल थे। इस अमानवीय घटना की जितनी भी निंदा की जाये वह कम है। इस घटना के बाद राजनीति,भारतीय मीडिया,सोशल मीडिया, पक्ष और विपक्ष से जुड़े कई ऐसे पहलू थे जिनपर चर्चा होनी स्वभाविक थी और वह हुई भी। जैसे इस त्रासदी को मुख्य धारा के कहे जाने वाले टी वी चैनल्स ने एक बार फिर 'एजेंडा रिपोटिंग ' की तर्ज पर पेश कर देश में विभाजनकारी माहौल बनाने की पूरी कोशिश की। और इस आतंकी हमले को हिंदू बनाम मुस्लिम के रूप में पेश करने का भरसक प्रयास किया। इन टी वी चैनल्स को हमले के बाद कश्मीर सहित पूरे देश में इस हमले के विरुद्ध उपजी सहानुभूति, एकजुटता, पर्यटकों को बचाने, उन्हें पनाह देने व आतंकियों का बहादुरी से मुकाबला करते हुये स्थानीय कश्मीरी की जान देने व पर्यटकों के प्रति मानवता से पेश आने के दृश्य नजर नहीं नजर आये। न ही सुरक्षा एजेंसियों की लापरवाही न ही 'आपदा में अवसर ' ढूंढने वाली विमानन कंपनियों द्वारा आतंकी हमले की दहशत के परिणामस्वरूप पर्यटकों की वापसी की भारी भीड़ को देखते हुये उनसे आठ से दस गुना तक अधिक किराया वसूल किया जाना दिखाई दिया।

बहरहाल 22 अप्रैल से लेकर अब तक इस विषय को लेकर दोनों देशों की ओर से कई कदम उठाये जा चुके हैं। भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध जो अहम फैसले लिए हैं उनमें मुख्य रूप से भारत-पाकिस्तान के बीच हुये सिंधु जल समझौते को स्थगित करना,अटारी बॉर्डर को बंद करना,भारत आए पाकिस्तानी नागरिकों को इसी मार्ग से लौटने के लिए 1 मई तक की समय सीमा निर्धारित करना, पाकिस्तानी नागरिकों को भारत का वीजा न देना,भारत में मौजूद पाकिस्तानी नागरिकों को भारत छोड़ने के लिए 48 घंटे का समय देना, सभी पाकिस्तानी नागरिकों के वीजा रद्द करना, नई दिल्ली स्थित पाकिस्तानी हाईकमीशन में तैनात पाकिस्तानी डिफेन्स एडवाइजर्स को भारत छोड़ने के लिए एक हफ़्ते का समय देना, तथा दोनों हाई कमीशन में तैनात कर्मचारियों की संख्या 55 से घटाकर 30 तक किया जाना शामिल है। इसके जवाब में पाकिस्तान ने भी भारत के विरुद्ध कई फैसले लिये हैं जिनमें भारत के साथ हुआ शिमला समझौता स्थगित करना,वाघा बॉर्डर से व्यापार पूरी तरह बंद करना,30 अप्रैल तक जिन लोगों ने वैध कागजों के साथ इस रास्ते से पाकिस्तान प्रवेश किया है, उन्हें वापस लौटने का निर्देश देना,सार्क वीजा छूट योजना के तहत भारतीय नागरिकों को दी गई वीजा छूट खत्म करना (सिख तीर्थयात्रियों को छोड़कर), भारतीय हाई कमीशन में काम कर रहे सैन्य सलाहकारों झ्र डिफेंस, नेवी और एयर अटैची को अवांछित व्यक्ति(स्त्री१२ङ्गल्लं ल्लङ्गल्ल ॅ१ं३) घोषित करना और उन्हें व उनके सहायक स्टाफ को 30 अप्रैल तक पाकिस्तान छोड़ने का निर्देश देना,इस्लामाबाद में भारतीय हाई कमीशन के कर्मचारियों की संख्या घटाकर 30 करना,पाकिस्तानी एयरस्पेस को अब भारतीय स्वामित्व या संचालन वाली सभी एयरलाइंस के लिए बंद करना तथा हर प्रकार का व्यापार चाहे वह सीधे भारत से हो या किसी तीसरे देश के जरिए, तत्काल प्रभाव से बंद कर देना जैसी घोषणायें शामिल हैं।

उधर दोनों देशों द्वारा एक दूसरे के विरुद्ध उठाये जा रहे इन कदमों के बीच पाकिस्तान की ओर से की गयी एक ऐसी स्वीकारोक्ति ने भारत द्वारा पाकिस्तान के विरुद्ध लगभग चार दशकों से लगाये जा रहे इन आरोपों को सच साबित कर दिया है कि पाकिस्तान आतंकवाद की नर्सरी भी है और पनाहगाह भी। गौरतलब है कि स्काई न्यूज के संवाददाता ने पहलगाम में आतंकी हमले के सन्दर्भ में जब पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख़्वाजा आसिफ से पूछा कि- ₹क्या आप मानते हैं कि पाकिस्तान का इन आतंकी संगठनों को समर्थन देने, प्रशिक्षण देने और धन मुहैया कराने का लंबा इतिहास रहा है? तो ख़्वाजा आसिफ ने स्वीकार किया कि पाकिस्तान आतंकी समूहों को धन मुहैया कराने के साथ-साथ उन्हें हर तरह से समर्थन करता रहा है। ख़्वाजा आसिफ ने एक बातचीत के दौरान कहा कि - ₹हम अमेरिका और ब्रिटेन समेत पश्चिमी देशों के लिए करीब तीन दशकों से यह गंदा काम कर रहे हैं।₹ इसे दूसरे शब्दों में कहा जाये तो पाकिस्तान अमेरिका व ब्रिटेन जैसे पश्चिमी देशों की कठपुतली बनकर आतंकवाद की पनाहगाह व आतंकवादियों का 'मुख्य उत्पादक देश' बना हुआ है। रक्षा मंत्री ख़्वाजा आसिफ ने यह भी कहा कि -'यदि हम सोवियत संघ के विरुद्ध युद्ध में और बाद में 9/11 के बाद के युद्ध में शामिल नहीं होते, तो पाकिस्तान का ट्रैक रिकॉर्ड बेदाग होता।'

परन्तु सच पूछिये तो धर्म के आधार पर भारत से विभाजित होकर 1947 में ही अलग अस्तित्व में आने वाले पाकिस्तान में शुरू से ही अधर्म, जोर जबरदस्ती, कट्टरपंथ, हिंसा व आतंकवाद का बोल बाला रहा है। और समय के साथ से यह और भी बढ़ता ही गया है। पाकिस्तानी नेताओं व शासकों द्वारा पोषित व प्रायोजित आतंकवाद का पहला निशाना तो पूर्वी पाकिस्तान (तत्कालीन) के लोग ही बने। बड़े पैमाने पर हत्यायें बलात्कार क्या नहीं किया गया बंगाली मुसलमानों के साथ ? तब कहाँ चला गया था इनका 'इस्लामी राष्ट्र '? क्यों 24 वर्षों में ही पाकिस्तान से अलग होकर बांग्लादेश वजूद में आया ? उसके बाद पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों विशेषकर हिन्दुओं, सिखों, शिया व अहमदिया मुसलमानों पर अत्याचार करने व उनकी हत्याओं का सिलसिला भी कोई केवल तीन दशक की कहानी नहीं है बल्कि यह सब घिनौनी हरकतें पाकिस्तान के वजूद में आते ही शुरू हो गयी थीं। स्वयं राष्ट्रपति जियाउलहक के दौर में पाकिस्तान में कट्टरपंथ व आतंकवाद खूब फला फूला। इसी पाकिस्तान में धर्म के नाम पर आत्मघातियों की भर्ती की गयी जिन्होंने मस्जिदों, दरगाहों, इमाम बारगाहों व अनेक धार्मिक जुलूसों में अब तक हजारों लोग मारे। उसके बाद इसी पाकिस्तान ने तालिबानों को शुरूआती दौर में पूरा संरक्षण दिया। उनके कार्यालय तक खोले गये और ओसामा बिन लादेन व मुल्ला उमर के समय में तालिबानी प्रवक्ता पाकिस्तान में बैठकर पत्रकार वार्ता करता तथा तालिबानी नीतियों को सार्वजनिक करता था। अफगानिस्तान की कट्टरपंथी तालिबानी सरकार को मान्यता देने वाला पहला देश पाकिस्तान ही था। पाकिस्तान में पोषित तालिबानी ही आगे चलकर कट्टरपंथी व आतंकी गिरोह तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान के नाम से जाने गये।

सामुदायिक हिंसा का बढ़ता खतरा

प्रभुनाथ शुक्ल

भारत में हिन्दुओं पर सामुदायिक हिंसा की बढ़ती घटनाओं ने सरकार और देश की सुरक्षा व्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। अपने ही देश में बहुसंख्य हिन्दू हिंसक घटनाओं का शिकार हो रहा है। वैसे सामुदायिक और नस्लीय हिंसा पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है। लेकिन भारत के आसपास पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफ हमले और हिंसा बढ़ गई हैं। नेपाल जैसे देश में भी रामनवमी जुलूस पर हिंसा को अंजाम दिया गया। भारत के पड़ोसी इस्लामिक देश में हिन्दुओं की स्थिति बद से बदतर है, जबकि ये कभी भारत के हिस्सा थे। यहाँ हिन्दुओं पर लगातार धार्मिक उत्पीड़न और हिंसा की घटनाएं भारत की चिंता को बढ़ा दिया है। आतंकवाद से लड़ रहे भारत के सामने सामुदायिक हिंसा की घटनाएं बड़ी चुनौती बन रहीं हैं। सबसे अहम मुद्दा यह है कि अपने देश में ही हिन्दू बाहुल्य होने के बाद भी वह सामुदायिक हिंसा का शिकार बन रहा है। जबकि चीन में उइगर मुसमानों का दमन किसी से छुपा नहीं है, लेकिन चीन के खिलाफ पाकिस्तान, बांग्लादेश खामोश हैं। कश्मीर के पहलगाम में हुआ नरसंहार इसका ताजा उदाहरण है। भारत में इस तरह की हिंसा के पीछे वोट बैंक के लिए राजनीतिक तुष्टिकरण सबसे बड़ी समस्या है।

भारत में हिन्दुओं पर हिंसक हमले इस्लामिक आतंकवाद की एक सोची समझी रणनीति है। पाकिस्तान, बांग्लादेश में हिंदुओं का सफाया हो रहा है, जबकि अफगानिस्तान में हिन्दुओं की आबादी गिनती पर आ गई है। भारत में इस तरह के सामुदायिक और धार्मिक दंगे भड़काने के लिए पाकिस्तान मूल रूप से जिम्मेदार है। लेकिन हम इस तरह की बात कर अपनी जिम्मेदारी से बच भी नहीं सकते हैं। भारत इस्लामिक आतंकवाद से तो हमेशा से पीड़ित रहा है। लेकिन हाल के वर्षों में राजनैतिक कारणों और उसके फैसलों से देश में सामुदायिक हिंसा, प्रदर्शन और पत्थरबाजी की घटनाएं बढ़ गईं हैं। दोनों समुदायों में एक दूसरे के प्रति नफरत और डर का माहौल पैदा हुआ है। इस तरह की सामुदायिक हिंसा के पीछे सामाजिक, आर्थिक, राजनीति, सोशलमीडिया और धार्मिक कारण मुख्य हैं, जिसकी वजह से ऐसी घटनाएं देश के धार्मिक और सांप्रदायिक तानेबाने को विभाजित करती दिखती हैं।

जम्मू -कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को पाकिस्तानी आतंकवादियों ने जिस तरह निर्दोष पर्यटकों का नरसंहार किया, वह मानवता के खिलाफ है। इस हिंसा में 26 लोगों की मौत हुई और कई घायल हुए। आतंकवादियों ने सिर्फ हिन्दुओं को निशाना बनाया और उनका धर्म पूछ कर उन्हें गोली मारीं । हालांकि की कश्मीर में इस नरसंहार को लेकर काफी गुस्सा देखा जा रहा है। इस बात पर भी गुस्सा है कि हमले में सिर्फ हिन्दू मारे गए। लोगों का कहना है कि पर्यटकों की जान बचाने के लिए एक मुस्लिम भी मारा गया। अब पूरा कश्मीर पीड़ित परिवारों के साथ है। देश के कई हिस्सों में मुस्लिम संस्थाओं ने प्रदर्शन कर पाकिस्तान के खिलाफ नारेबाजी भी की है।

इस साजिश के पीछे हाल में पाकिस्तान आर्मी चीफ जनरल कियानी की तरफ दिया गया वह उकसाऊ बयान भी अहम माना जा रहा है, जिसमें उन्होंने भारत व हिन्दुओं के खिलाफ भड़काने वाला बयान दिया था। कियानी के बयान के ठीक कुछ दिन बात पहलगाम में आतंकी हमला हुआ है, जिसमें पर्यटकों का धर्म पूँछ कर नरसंहार किया गया। यह पाकिस्तान की सोची समझी रणनीति है, क्योंकि वह भारत से सीधी जंग में कभी नहीं जीत सकता है। ऐसी स्थिति में वह हिन्दुओं को निशाना बनाकर भारतीय मुसलमानों का मसीहा बनना चाहता है। खैबर पख्तून में बलोच आर्मी की तरफ से किए ट्रेन हाईजैक के पीछे वह भारत का हाथ मानता है। जिसकी वजह से वह बौखलाया था और बदले के लिए बेताब था।

उधर कश्मीर में धारा 370 खत्म होने के बाद कश्मीर आहिस्ता-आहिस्ता विकास की मुख्यधारा में लौट रहा है। आतंकी घटनाएं कम हुईं हैं। पर्यटकों की आमद बढ़ने लगी है। सेबों की खेती लहलाहने लगी है। यह सब देख पाकिस्तानी फौज में बौखलाहट है जिसकी वजह से वह इस तरह की सामुदायिक हिंसा की साजिश रच रहा है। कश्मीर में सामुदायिक हिंसा की यह पहली घटना नहीं है। आतंकवादियों ने पुलवामा जैसी घटनाओं को अंजाम दिया है। कश्मीर में साल 2019 के बाद धारा 370 लागू होने के बाद यह पहली सबसे बड़ी आतंकी नरसंहार की घटना है। दूसरा अहम कारण ये कि कश्मीर के राजनैतिक और अलगाववादी कभी शान्ति और विकास नहीं चाहते हैं। क्योंकि धारा 370 खत्म होने के बाद उनकी तमाम स्वतंत्रता जहाँ बाधित हुईं, वहीं आर्थिक नुकसान हुआ है। वहां के राजनेताओं और अलगाववादियों का पाकिस्तान प्रेम दुनिया में जगजाहिर है। इसके बावजूद धारा 370 का खात्मा, तीन तलाक कानून और वक्फ संशोधन जैसे राजनैतिक फैसले इस आग में घी का काम किया है। हालांकि यह आम मुसलमानों और कश्मीरियों की सोच नहीं है। यह सिर्फ अलगाववादियों की सोच है। इस घटना में केंद्र और राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकतीं। जब वहां काफी तादात में पर्यटकों की आमद हो रहीं थी तो पर्यटकों की सुरक्षा के लिए सेना और राज्य पुलिस के जवानों की तैनाती क्यों नहीं की गईं। कियानी के विभाजनकारी संदेश को हमारी सरकार, खुफिया एजेंसिया और सुरक्षा एजेंसिया नहीं समझ पाईं। ऐसे संवेदनशील पर्यटक स्थलों पर सुरक्षा के सख्त इंतजाम होने चाहिए थे। राज्य में इस तरह की घटनाएं पर्यटन उद्योग और उसकी संभावनाओं पर पानी फेरती हैं। हम अपनी चूक और नाकामियों से नहीं बच सकते। यह गंभीर मंथन का विषय है। कश्मीर के पर्यटन स्थलों पर हमें सुरक्षा व्यवस्था को सख्त रखना होगा। भविष्य में ऐसी स्थिति से बचने के लिए वहां सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होंगे। यह हमला भारत की आत्मा पर है यह राजनीति का वक्त नहीं है। सारा देश गुस्से में है। रणनीति बनाकर पाकिस्तान और आतंकवाद को सबक सिखाने की जरूरत है। कश्मीर के पूर्व बंगाल के मुर्शिदाबाद में वक्फ संशोधन कानून के विरोध में हिन्दुओं को जिस तरह निशाना बनाया गया, वह किसी से छुपा नहीं है। इसके अलावा रामनवमी जुलूस पर महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश भी सुनियोजित तरीके से हिन्दुओं पर हमले हुए। उत्तर प्रदेश में संभल किसी से छुपा नहीं है। वहां किस तरह हिन्दुओं का उत्पीड़न हुआ, उसे कौन नहीं जानता। हिंसक हमलों में उनकी संपत्तियों और मंदिरों को नष्ट किया गया। पश्चिम बंगाल राज्य में हिन्दुओं को पलायित होना पड़ा। पीड़ित हिन्दू बंगाल पुलिस की मदत के लिए चिल्लाते रहे, लेकिन कोई सुरक्षा नहीं मिली। बाद में बंगाल उच्च न्यायालय के आदेश के बाद हिंसा प्रभावित इलाके में केंद्रीय बल पंहुचा। यही हाल बांग्लादेश का है। भारत ने पाकिस्तान से अलग कराया उसी बांग्लादेश में पाकिस्तान की सह पर अतिवाद पांव पसार रहा है। बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार के पतन के बाद हिन्दुओं के घरों, व्यवसायों और मंदिरों पर बड़े पैमाने पर हमले हुए। यूएन की एक रिपोर्ट में बताया गया कि हिन्दुओं को लक्षित कर हमले किए, जिसमें 1400 लोगों की मौत हुईं। मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि बांग्लादेश में साल 2024 की हिंदुओं के खिलाफ 2200 हिंसक घटनाएं दर्ज की गईं। भारत -पाकिस्तान के विभाजन के बाद पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी 23 फीसदी थी, अब 3.7 फीसदी रह गईं। लगातार वहां हिंदुओं की आबादी घट रहीं है। हालांकि भारत में मुसलमानों के खिलाफ कुछ लिंचिंग की घटनाएं हुईं, लेकिन जैसा हिन्दुस्थान में हिन्दुओं के साथ हो रहा है, वैसा नहीं हुआ। वैसे अमेरिका में भी हिन्दुओं और सिखों के खिलाफ नस्लीय हिंसा हुईं है। हिंदुओं के मंदिरों को भी निशाना बनाया गया है। नस्लीय टिप्पणीयां हुईं हैं, लेकिन पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसी नहीं। हमें इस तरह की सामुदायिक हिंसा से बचना होगा। राजनैतिक लाभ लेने के लिए देश को हिंदू -मुसलमान में बांटना ठीक नहीं। इससे देश की एकता, अखंडता कमजोर होगी। साम्प्रदायिक हिंसा को किसी भी तरीके का राजनैतिक संरक्षण नहीं मिलाना चाहिए।

पहलगाम की घाटी में इंसानियत की हत्या

डॉ. सत्यवान सौरभ

जम्मू-कश्मीर के पहलगाँव में हुए आतंकी हमले में जहाँ हिन्दू पर्यटकों को उनका नाम गोली मार दी गई। ये हमला सिर्फ एक हत्या नहीं, बल्कि धार्मिक पहचान के आधार पर की गई घृणा और आतंक का प्रतीक है तो है ही, वहीं इंसानियत की भी हत्या है। यह घटना भारत की एकता, नागरिक सुरक्षा और धार्मिक सहिष्णुता पर चोट बताकर चेतावनी देती है कि यदि अब भी ठोस कदम नहीं उठाए गए तो अगला शिकार कोई और होगा। यह घटना शोक प्रकट करने की बजाय जवाबदेही, निर्णायक कार्रवाई और सामाजिक चेतना की मांग करती है, ताकि आतंक के आगे इंसानियत बार-बार न मरे।

22 अप्रैल की सुबह के कुछ शांत लम्हे। जम्मू-कश्मीर के पहलगाँव में बफीर्ली वादियाँ पर्यटकों का स्वागत कर रही थीं। नवविवाहित जोड़े, बच्चे, बुजुर्ग झ्र सबको उम्मीद थी कि कश्मीर की हवा में सुकून मिलेगा, तनाव से कुछ राहत मिलेगी। लेकिन तभी आतंक की आहट हुई। बंदूकें गरजीं। और उस वादी में जहाँ बर्फ गिरती है, अब खून बहा। राजस्थान से आया एक नवविवाहित दंपत्ति भी उन्हीं पर्यटकों में था। दोनों ने अभी पांच दिन पहले ही शादी की थी। वो अपने हनीमून के लिए कश्मीर आए थे। लेकिन शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। आतंकियों ने गाड़ी रोकी, नाम पूछा, पहचान की और फिर गोली मार दी। युवक हिन्दू था। बस यही उसके मरने की वजह बन गई। सिर में गोली लगी। मौके पर ही दम तोड़ दिया। उसकी पत्नी, जिसके हाथों की मेंहदी अभी भी गीली थी, स्तब्ध खड़ी थी। शोक से ज्यादा वो एक अनकहे डर में जमी हुई थी-जैसे समय वहीं थम गया हो।

यह सिर्फ एक आतंकी हमला नहीं था। यह योजनाबद्ध नरसंहार था। एक सोच के तहत, एक धर्म के आधार पर। आज आतंकवाद महज क्षेत्रीय या वैचारिक लड़ाई नहीं रह गया है। यह अब धार्मिक पहचान को मिटाने का एक उपकरण बन चुका है। यह हत्या बताती हैं कि कुछ तत्व अब यह तय कर चुके हैं कि कौन जिएगा, कौन मरेगा और यह फैसला नाम पूछकर किया जाएगा। क्या यही इंसानियत है, क्या यही कश्मीरियत है, जिसके नाम पर हम वर्षों से शांति की दुहाई दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर उस पत्नी की तस्वीर वायरल हुई, जो अपने पति के शव को निहार रही थी। न चीख, न रोना, न प्रतिरोध। बस एक स्थिर मौन- जो पूरी व्यवस्था पर सबसे कठोर आरोप बन गया। उस मौन में एक सवाल छुपा है ह्लहमने क्या गलत कियाह्न क्या एक जोड़े का कश्मीर आना, उसकी सुंदरता देखना, उसकी वादियों से प्यार करना अब गुनाह बन चुका है। हमें समझना होगा कि इस तस्वीर में केवल एक महिला नहीं थी, बल्कि उस पूरे राष्ट्र की आत्मा थी, जख़्मी, असहाय और शर्मसार। हर हमले के बाद सरकार की ओर से एक तैयार स्क्रिप्ट आती है- निंदा, मुआवजा, जाँच। लेकिन जवाबदेही कहीं नहीं होती। क्या यह सवाल नहीं पूछा जाना चाहिए कि घाटी में आतंकियों को खुलेआम चलने-फिरने की छूट कैसे मिलती है। वे नाम पूछकर कैसे किसी को गोली मार सकते हैं और फिर बच निकलते हैं। क्या पर्यटन सीजन में अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती नहीं होनी चाहिए। क्या जम्मू-कश्मीर प्रशासन को यह नहीं पता कि ऐसे हमले पर्यटन, अर्थव्यवस्था और भारत की एकता झ्र तीनों पर हमला करते हैं।

जब भी भारत आतंक के खिलाफ सख़्ती दिखाता है तो मानवाधिकार की दुकानें खुल जाती हैं। दिल्ली, लंदन, न्यूयॉर्क झ्र हर जगह के तथाकथित बुद्धिजीवी अचानक ह्यसंवेदनाह्न से भर जाते हैं। लेकिन जब किसी हिंदू नागरिक को सिर्फ उसके नाम के कारण सिर में गोली मारी जाती है, तब यही आवाजें खामोश हो जाती हैं। क्यों? क्या एक विशेष समुदाय के पीड़ितों के लिए ही संवेदना है। क्या हिन्दू होना अब मानवाधिकार के चश्मे से अदृश्य हो जाना है। पहलगाँव हमला केवल एक व्यक्ति की हत्या नहीं है, यह भारत की आत्मा पर हमला है। यह संदेश देने की कोशिश है कि ह्लयहाँ तुम्हारी जगह नहीं हैह्व। यह भारत की एकता, समरसता और धर्मनिरपेक्षता को चुनौती है। यदि हमने इस चुनौती को केवल ट्वीट और मोमबत्तियों से उत्तर दिया, तो अगला निशाना कोई और शहर, कोई और नाम, कोई और नवविवाहित होगा।

हमेशा की तरह, इस हमले के पीछे जिस आतंकी संगठन का नाम आया - ह्यद रेजिस्टेंस फ्रंट झ्र वह लश्कर-ए-तैयबा का ही नया अवतार है। इसकी जड़ें पाकिस्तान में हैं। लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंच पर पाकिस्तान अभी भी ह्यआतंकवाद का शिकार देश बना बैठा है। संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका, यूरोप सभी को यह साफ-साफ कहना चाहिए कि धार्मिक आधार पर नागरिकों की हत्या केवल एक देश का नहीं, बल्कि वैश्विक मानवता का संकट है। भारत को अब दो टूक निर्णय लेने की जरूरत है। कश्मीर में आतंक का सामना केवल पुलिस नहीं कर सकती, इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति चाहिए। अलगाववाद की नर्म परतों को उखाड़ फेंकना होगा। धार्मिक पहचान के नाम पर फैलाई जा रही नफरत को सामाजिक स्तर पर भी चुनौती देनी होगी। इसके साथ-साथ, हमें यह तय करना होगा कि कश्मीर में पर्यटन केवल स्वर्ग दिखाने का सौदा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता का सेतु है।

दैनिक पंचांग

28 अप्रैल 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

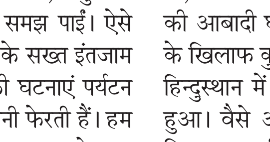

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मेष में	वृष	06.29 बजे से
चंद्र	मेष में	मिथुन	08.27 बजे से
मंगल	कर्क में	कर्क	10.40 बजे से
बुध	मीन में	सिंह	12.56 बजे से
गुरु	वृष में	कन्या	15.08 बजे से
शुक्र	मीन में	तुला	17.19 बजे से
शनि	मीन में	वृश्चिक	19.34 ब.से
राहु	मीन में	धनु	21.50 बजे से
केतु	कन्या में	मकर	23.55 बजे से
राहुकाल 7.30 से 9.00 बजे तक		कुंभ	01.41 बजे से
		मीन	03.14 बजे से
		मेष	04.45 बजे से

सोमवार 2025 वर्ष का 118 वा दिन
दिशाशूल पूर्व ऋतु ग्रीष्म।
विक्रम संवत् 2082 शक संवत् 1946
मास वैशाख पक्ष शुक्ल
तिथि प्रतिपदा 21.11 बजे को समाप्त।
नक्षत्र भरणी 21.38 बजे को समाप्त।
योग आयुष्मान 20.02 बजे को समाप्त।
करण किस्तुघ्न 11.06 बजे तदनन्तर बव 21.11 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 0.2 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 14° 10'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872328
जूलियन दिन 2460793.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना सव्वाल
तारीख 29
विशेष चंददर्शन।

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
अमृत	05.53 से	07.22 बजे तक	चर	05.43 से	07.14 बजे तक
काल	07.22 से	08.50 बजे तक	रोग	07.14 से	08.45 बजे तक
शुभ	08.50 से	10.19 बजे तक	काल	08.45 से	10.17 बजे तक
रोग	10.19 से	11.48 बजे तक	लाभ	10.17 से	11.48 बजे तक
उद्वेग	11.48 से	01.17 बजे तक	उद्वेग	11.48 से	01.19 बजे तक
चर	01.17 से	02.45 बजे तक	शुभ	01.19 से	02.51 बजे तक
लाभ	02.45 से	04.14 बजे तक	अमृत	02.51 से	04.2 बजे तक
अमृत	04.14 से	05.43 बजे तक	चर	04.22 से	05.53 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, मध्यम चर, अशुभ उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

गंगा में खड़े होकर पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए

मेरठ में आतंकवाद की अर्थी बनाकर नाले में फेंकी, आगरा के होटल में लगे पाकिस्तानी नॉट अलाउड

लखनऊ। जम्मू-कश्मीर में पहलगाम के बैसरन घाटी में 22 अप्रैल को आतंकियों ने 27 पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाकर हत्या कर दी थी। इसके बाद से देशभर में आतंकवाद और पाकिस्तान के खिलाफ विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। यूपी के वाराणसी में नमामि गंगे से जुड़े सदस्यों ने गंगा में उतरकर मृतकों की आत्मा शांति के लिए प्रार्थना की। नमामि गंगे गंगा विचार मंच के स्वच्छता अभियान के बाद श्रद्धालुओं ने टीम सदस्यों के साथ मिलकर आतंकवाद के खात्मे के लिए सरकार के कदम को सराहा। साथ ही कहा कि यथाशीघ्र और भी कड़े कदम उठाएं जाएं। नेतृत्व कर रहें नमामि गंगे गंगा विचार मंच के जिला संयोजक शिवम अग्रहरि ने कहा कि गंगाजल में खड़े होकर पाकिस्तान में सिंधू नदी के जल के प्रवाह को रोकने के लिए सरकार द्वारा लिए गए फैसले का स्वागत करते हैं। इस दौरान मंच के शिवम अग्रहरि, रेनू जायसवाल, जय विश्वकर्मा, भावना गुप्ता, सपना वर्मा, रीता बजाज, सरिता मेहरोत्रा, रेखा अग्निहोत्री, शौर्य गुप्ता, अविरल अग्निहोत्री, राजेश कुमार अग्निहोत्री शामिल थे। सामने घाट पर रविवार को भगवान सूर्य नारायण के उदित होते ही नमामि गंगे ने आमजन के साथ मां गंगा की आरती उतारकर कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले में बलिदान देने वाले हिन्दुओं को श्रंद्धाजलि दी। सामने घाट पर सैकड़ों नागरिकों द्वारा दो मिनट का मौन रख कर बाबा विश्वनाथ व मां गंगा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत मृतकों के परिवारजनों को आत्मिक बल प्राप्त हो और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का जड़-मूल से विनाश हो। प्रार्थना के दौरान सभी ने 'आतंकवाद भारत छोड़ो' का गगनभेदी उद्घोष किया। सरकार से आतंकवाद के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की और मृतकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। प्रार्थना के बाद नमामि गंगे के स्वयंसेवकों ने गंगा तट पर स्वच्छता अभियान चलाया। पर्यावरण संरक्षण का संदेश देकर गंगा किनारे एवं तलहटी में बिखरी हुई अनेक प्रदूषित सामग्रियों को समेटकर कूड़ेदान के हवाले किया गया। दशाश्वमेध घाट पर गंगा में खड़े होकर आतंकवाद के जड़मूल से विनाश के लिए एकजुटता दिखाई। भारत माता की जय-जयकार के साथ पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। आगरा में होटल कारोबारियों ने पाकिस्तानियों को होटल में रूम न देने के पोस्टर लगाए हैं। मेरठ में छात्रों ने पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। आतंकवाद की अर्थी बनाकर नाले में फेंका। वाराणसी शहर मुफ्ती अब्दुल बातिन नोमानी ने पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा किया। कहा- आतंकवाद का इस्लाम से लेना-देना नहीं है। पाक क्या, कोई भी मुल्क ऐसी हरकत करेगा तो सरकार जवाब देगी। अयोध्या में स्वामी राजकुमार दास बोले- आतंक के आकाओं के खिलाफ निर्णय लेने का ये सही वक्त है। सर्जिकल स्ट्राइक दोहराया जाए, पाक को सरकार कड़ा सबक सिखाए। हाथरस और पीलीभीत में भी विरोध-प्रदर्शन हुआ। मेरठ में छात्रों ने रविवार सुबह प्रदर्शन किया। छात्रों ने आतंकवाद की शवयात्रा निकाली और अर्थी को नाले में बहा दिया। चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी के छात्रों ने मिलकर आतंकवाद का पुतला फूंककर विरोध जताया। छात्रनेता विनीत चपराणा के नेतृत्व में सीसीएसयू के गेट पर जमा हुए। छात्रों ने पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। 'आतंकवाद का इस्लाम से कोई लेना देना नहीं। सिर्फ इस्लाम ही नहीं, कोई भी मजहब आतंकवाद नहीं सिखाता। हर मजहब में शान्ति और एकता की बात की गई है। ऐसे में मजहब से जोड़कर पहलगाम आतंकी हमले को नहीं देखना चाहिये। क्योंकि इस हमले में मुस्लिम भी शहीद हुए हैं।' ये कहना है बनारस के शहर मुफ्ती मौलाना अब्दुल बातिन नोमानी का; इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान पर सरकार को सख्त कार्रवाई करने की बात कही। नमामि गंगे काशी क्षेत्र के संयोजक और नगर निगम के स्वच्छता ब्रांड एम्बेसडर राजेश शुक्ला ने कहा- हिन्दुओं पर हुए आतंकवाद की इस नृशंस घटना की कड़ी निंदा करता हूं। सरकार से आतंक के विरुद्ध कठोर कदम उठाने की मांग करता हूं। उन्होंने कहा कि जब तक राष्ट्र एकजुट होकर इस चुनौती का सामना नहीं करेगा, तब तक ऐसी घटनाएं निरंतर मासूमों की जान लेती रहेंगी। कई लोगों ने पहलगाम में मारे गए नागरिकों की आत्मा शांति के लिए गंगा आरती की। वाराणसी में नमामि गंगे से जुड़े सदस्यों ने गंगा में उतरकर मृतकों की आत्मा शांति के लिए प्रार्थना की। दशाश्वमेध घाट पर गंगा में खड़े होकर आतंकवाद के जड़मूल से विनाश के लिए एकजुटता दिखाई। भारत माता की जय-जयकार के साथ पाकिस्तान मुदार्बाद के नारे लगाए। आतंकी हमले पर अयोध्या के संतों ने नाराजगी जताई है। स्वामी राजकुमार दास बोले- आतंक के आकाओं के खिलाफ निर्णय लेने का ये सही वक्त है। सर्जिकल स्ट्राइक दोहराया जाए, पाक को सरकार कड़ा सबक सिखाए। उदासीन ऋषि आश्रम रानोपाली के महंत डॉक्टर भरत दास ने कहा- आतंक और उनके आकाओं पर इतनी बड़ी कार्यवाही हो, जिससे दुबारा आतंकी भारत की ओर देखने का साहस न कर सकें। आचार्य पीठ लक्ष्मण किला के महंत मैथिली रमण शरण ने कहा- भारत शांतिपूर्ण देश है। हम पूरे विश्व में शांति और सद्भाव चाहते हैं। धर्म के आधार पर गोली मारकर नृसंश हत्या हो, यह बर्दाश्त नहीं है। पाकिस्तान दुष्ट देश है और उसके साथ अब बेहद कठोरता से पेश आना होगा। संभल के गौरी सहाय मंदिर में रविवार को विशेष हवन का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार और वैश्य महासभा ने संयुक्त रूप से इस कार्यक्रम का आयोजन किया। कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में मारे गए लोगों की आत्मशांति के लिए वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां दी गईं। वैश्य महासभा के संजय गुप्ता पोली ने कहा कि पहलगाम में हुए नरसंहार के पीड़ितों की आत्मशांति के लिए वैदिक सनातन परंपरा के अनुसार प्रार्थना की गई है। उन्होंने इस घटना के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। हाथरस में राष्ट्रीय हनुमान दल ने तालाब चौराहे पर प्रदर्शन किया। पाकिस्तान का पुतला फूंका। उन्होंने प्रधानमंत्री से पाकिस्तान के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। वहीं, सादाबाद तहसील के कस्बा सहपऊ में मुस्लिम संगठनों ने भी विरोध प्रदर्शन किया।

जेई ने महिला अफसर का नाम लेकर गाना गाया, सस्पेंड

बुलंदशहर। जेई ने महिला एसडीओ का नाम लेकर गाना गाया। वीडियो देखते ही महिला अफसर भड़क गईं। उन्होंने एमडी से शिकायत कर दी। एमडी ने शनिवार को जांच के बाद जेई को सस्पेंड कर दिया। 8 अप्रैल को बुलंदशहर से बिजली विभाग के 30 जेई प्रदर्शन के लिए लखनऊ गए थे। बस में बिजली कर्मचारियों ने 'दे दे प्यार दे' गाने पर डांस किया। जेई संजीव कुमार ने भी ठुमके लगाए। इस दौरान संजीव ने महिला अफसर का नाम लेकर डांस किया।कर्मचारियों ने इसका वीडियो बना लिया और महिला अफसर को भेज दिया। इसके बाद महिला अफसर ने मेरठ जाकर एमडी से शिकायत की। महिला एसडीओ और जेई संजीव दोनों एक ही ऑफिस में काम करते हैं। संजीव महिला एसडीओ के अधीनस्थ जेई है। महिला एसडीओ का पति भी बुलंदशहर में कृषि विभाग में तैनात है। 8 अप्रैल को लखनऊ में निजीकरण के खिलाफ बिजली विभाग के कर्मचारियों ने धरना-प्रदर्शन किया था। इसमें बुलंदशहर से 30 जेई बस बुक कर लखनऊ गए थे। रास्ते में बस में गाने पर डांस किया। वीडियो में दिख रहा है कि जैसे ही बस में 'दे दे प्यार दे' गाना बजता है, एक जेई सीट से उठकर डांस करने लगता है। वह जेई संजीव को भी खींच लेता है और दोनों डांस करने लगते हैं। इसके बाद 4-5 जेई और डांस में शामिल हो जाते हैं। इसी बीच संजीव सीट पर बैठ जाता है। वह महिला एसडीओ का नाम लेकर हाथ उठाकर डांस करने लगा, लेकिन किसी ने उसे रोका नहीं, बल्कि तालियां बजाकर उसका साथ दिया।

एक देश, एक चुनाव से आयेगी स्थिरता : धर्मेन्द्र सिंह

संवाददाता

कुशीनगर। एक देश, एक चुनाव विकसित भारत की आधारशिला है और यह एक मजबूत और स्थित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण कारक साबित होगा। एक देश एक चुनाव संविधान की मूल भावना को दोबारा स्थापित करने वाला कदम है। यह केवल चुनाव खर्च और आचार संहिता तक सीमित विषय नहीं बल्कि यह देश की राजनीतिक स्थिरता, सुशासन और विकास को नई दिशा देने का माध्यम है। उक्त बातें भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष व सदस्य विधान परिषद डॉ धर्मेंद्र ने रविवार को पडरौना के एक होटल में आयोजित एक देश एक चुनाव प्रबुद्ध सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद 1952 से लेकर साल 1967 तक लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ ही होते आए। कांग्रेस परिवार में जब अस्थिरता के बादल छाने लगे तो पार्टी ने उस अस्थिरता को देश पर भी थोप दिया। संविधान को दरकिनार करते हुए साल 1972 में

होने वाला चुनाव 1971 में करवा दिया। श्री सिंह ने कहा कि एक देश एक चुनाव को लेकर बड़े पैमाने पर जन जागरण की जरूरत है। राजनीतिक स्थिरिता के लिए इसे जरूरी बताते हुए उन्होंने बताया कि बार-बार होने वाले चुनाव से देश की जनता पर पर 3.5 से 4.5 लाख करोड़ रुपये का बोझ पड़ता है । आर्थिक बोझ के साथ साथ विकास कार्य भी प्रभावित होते हैं। पडरौना विधायक विधायक मनीष जायसवाल ने कहा कि वर्तमान चुनाव प्रणाली में देश में वर्ष में पांच से छह चुनाव कराए जा रहे हैं। बार-बार चुनाव कराने से देश चुनावी मोड़ में रहता है। इससे देश पर आर्थिक बोझ बढ़ता है। यूएनपीजी की प्राचार्या डॉ ममता मणि त्रिपाठी ने कहा कि एक देश एक चुनाव व्यवस्था बेहद कारगर साबित होगी। बार-बार चुनाव पर होने वाले अंधाधुंध खर्च में कटौती करके उस पैसे को देश के विकास और लोगों के कल्याण पर खर्च किया जा सकेगा। इसमें प्रबुद्ध वर्ग अहम भूमिका निभा सकते हैं।अध्यक्षता करते हुए जिलाध्यक्ष दुर्गेश राय ने कहा कि कुछ राजनीतिक दल एक साथ चुनाव स्वीकार नहीं कर रहे हैं, जिसके चलते यह विषय जनता के बीच में आ गया है। हम जनता से अपील करते हैं कि अगर वें एक देश एक चुनाव के पक्ष में हैं और पैसे की बबार्दी से बचना चाहते हैं, तो राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री तक अपना समर्थन भेजें।सम्मेलन को पूर्व जिलाध्यक्ष लल्लन मिश्र, अभियान संयोजक पूर्व विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी, रामकोला विधायक विनय प्रकाश गोंड, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष प्रदीप जायसवाल ने सम्बोधित किया। संचालन जिलामंत्री विवेकानंद शुक्ल द्वारा किया गया। इस अवसर पर दीपनारायण अग्रवाल, शिवकुमारी देवी, आनन्द उर्फ बासुकी गुप्ता, जगदम्बा अग्रवाल, मीनू जिंदल, अजय सर्राफ, संजय टिबड़ेवाल, अंशुमान बंका, अमन बंका, अतुल टिबड़ेवाल, डॉ मृगेन्द्र राव, डॉ शैलेन्द्र तिवारी सहित प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।

कुशीनगर में दिवंगत सपा नेताओं को राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दी श्रद्धांजलि, परिजनों को दी सांत्वना

संवाददाता

कुशीनगर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव कुशीनगर पहुंचे और सपा के दिवंगत पूर्व विधायक पूर्णमासी देहाती और जिलाध्यक्ष रहे मरहूम शुकरुल्लाह अंसारी को श्रद्धांजलि अर्पित की और शोक संतप्त परिजनों से मिलकर सांत्वना दी। रविवार को सपा सुप्रीमों गोरखपुर एयरपोर्ट से कुशीनगर हाटा सड़क मार्ग से पहुंचे और मदनी मस्जिद के पक्षकार मरहूम हाजी शाकिर अली खां निधन के बाद उनके घर पहुंचकर परिजनों को सांत्वना दी। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नेबुआ नौरंगिया के पूर्व विधायक पूर्णमासी देहाती के

ब्रह्मभोज में पहुंचकर उनके चित्र पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी क्रम जिलाध्यक्ष रहे मरहूम शुकरुल्लाह अंसारी के चालीसवीं के अवसर पर उनके गांव सखवनिया खुर्द झुंगवा पहुंचकर श्री अंसारी के चित्र पर फूल चढ़ाकर श्रद्धांजलि दी। मरहूम सपा नेता की पत्नी और बेटे को सांत्वना दी और बेटी रुबीना की पढ़ाई में सहयोग का वादा किया। इस दौरान पूर्व मंत्री ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, पूर्व मंत्री राधेश्याम सिंह, पूर्व कैबिनेट मंत्री ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, कुशीनगर विधानसभा के पूर्व सपा प्रत्याशी राजेश प्रताप राव उर्फ बंटी राव, इलियासअंसारी, पथरदेवा से प्रत्याशी रहे परवेज आलम, ब्लॉक प्रमुख अमरजीत यादव, विक्रमा यादव, पुरंदर प्रताप यादव, रणविजय सिंह मोहन, ब्लॉक प्रमुख दिग्विजय सिंह लक्ष्मण, शाहिद लारी, अधिवक्ता सभा के अध्यक्ष एडवोकेट उदयभान यादव, बबलू गाजी, आशिक अली कन्हैया कुमार मौर्य, एके बादल, पूर्व ब्लॉक प्रमुख हसमुद्दीन अंसारी, डॉ पीके राय, कलामुद्दीन अंसारी, अजय सिंह पटेल, मुन्ना यादव, वाजिद अली, जाकिर हुसैन, डॉ परशुराम कुमार पटेल, हैदर अली, नितेश वर्मा, हीरालाल यादव, चंद्रजीत यादव, सनौउवर अंसारी, रौनक सिंह, अभिषेक ठाकुर सहित भारी संख्या में सपाई मौजूद रहे।

स्वस्थ्य नागरिक ही कर सकता है सशक्त भारत का निर्माण: राकेश जायसवाल

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। बीएड विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर के द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षुओं का दो दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्यअतिथि नगर पालिका परिषद कुशीनगर अध्यक्ष प्रतिनिधि राकेश जायसवाल ने कहा कि योगासन के निरंतर अभ्यास से तन और मन स्वस्थ्य रहता है। स्वस्थ्य नागरिक ही सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास से 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। स्वस्थ्य रहने के लिए योग का अत्यंत महत्व है। समारोप सत्र की शुरूआत मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन और पुष्पांजलि के साथ हुई। अतिथियों का परिचय और स्वागत बीएड विभागाध्यक्ष प्रो विभ्राट चंद कौशिक ने किया। बीएड प्रशिक्षुओं के योग प्रशिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि यह प्रशिक्षण बीएड पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग है। कार्यक्रम का संचालन डॉ निगम मौर्य ने किया जबकि आभार ज्ञापन प्रशिक्षण शिविर के संयोजक डॉ दुर्ग विजय पाल सिंह ने किया। इस अवसर मुख्य प्रशिक्षक डॉ राकेश सोनकर, सहायक प्रशिक्षक बिंदु गुप्ता समेत प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

स्वस्थ्य नागरिक ही कर सकता है सशक्त भारत का निर्माण: राकेश जायसवाल

संवाददाता

कसया, कुशीनगर। बीएड विभाग, बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय कुशीनगर के द्वितीय सेमेस्टर के प्रशिक्षुओं का दो दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्यअतिथि नगर पालिका परिषद कुशीनगर अध्यक्ष प्रतिनिधि राकेश जायसवाल ने कहा कि योगासन के निरंतर अभ्यास से तन और मन स्वस्थ्य रहता है। स्वस्थ्य नागरिक ही सशक्त भारत का निर्माण कर सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रयास से 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जाता है। स्वस्थ्य रहने के लिए योग का अत्यंत महत्व है। समारोप सत्र की शुरूआत मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन और पुष्पांजलि के साथ हुई। अतिथियों का परिचय और स्वागत बीएड विभागाध्यक्ष प्रो विभ्राट चंद कौशिक ने किया। बीएड प्रशिक्षुओं के योग प्रशिक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि यह प्रशिक्षण बीएड पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग है। कार्यक्रम का संचालन डॉ निगम मौर्य ने किया जबकि आभार ज्ञापन प्रशिक्षण शिविर के संयोजक डॉ दुर्ग विजय पाल सिंह ने किया। इस अवसर मुख्य प्रशिक्षक डॉ राकेश सोनकर, सहायक प्रशिक्षक बिंदु गुप्ता समेत प्रशिक्षु उपस्थित रहे।

एक शाम शहीदों के नाम उर्स मुबारक: सम्मेलन में आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता पर दिया जोर

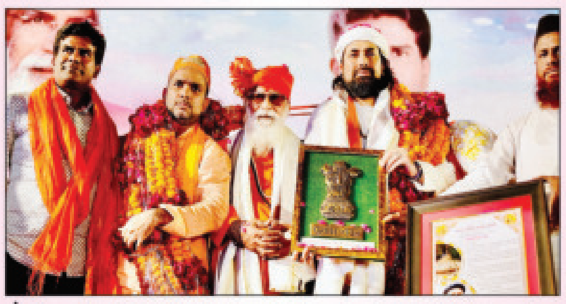

संवाददाता

गोरखपुर। महा नगर स्थित मुबारक दरगाह शरीफ पर हजरत मुबारक खान रहमतुल्लाह अलैह के सालाना उर्स मुबारक के अवसर पर एक शाम शहीदों के नाम का विशेष आयोजन बड़े जोश, श्रद्धा और राष्ट्रीय एकता के संदेश के साथ संपन्न हुआ। इस मौके पर अजमेर शरीफ दरगाह के गद्दीनशीन और चिश्ती फाउंडेशन के चेयरमैन हाजी सैयद सलमान चिश्ती ने अजमेर दरगाह शरीफ से मुबारक गिलाफ पेश किया और मुल्क में अमन, भाईचारे और तरक्की के लिए दुआ की। इस भव्य कार्यक्रम में पीठाधीश्वर श्री गोस्वामी सुशील महाराज जी, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री लल्लेश रेड्डी जी, और दरगाह कमेटी अध्यक्ष श्री इकरार अहमद जी ने विशेष सहभागिता निभाई। देशभर से आए हजारों जाइरीन और श्रद्धालुओं ने एकजुट होकर आतंकवाद और दहशतगर्दी के खिलाफ आवाज बुलंद की और पहलगाम, कश्मीर में हाल ही में हुए आतंकी हमले में शहीद हुए भारतीय नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की। घायल और उनके परिवारों के लिए विशेष दुआ की गई। हाजी सैयद सलमान चिश्ती ने अपने संदेश में कहा ह्लभारत की रूह मोहब्बत, अमन और भाईचारे में बसती है। अजमेर शरीफ से यही पैगाम है कि हम सभी को इंसानियत और आपसी मुहब्बत को अपना मिशन बनाना है। आतंकवाद और नफरत के खिलाफ हमें एकजुट होकर अपने वतन की हिफाजत करनी है। शहीदों की कुबार्नी हमारे दिलों में हमेशा ज़िंदा रहेगी और हमें अपनी आने वाली नस्लों को अमन का सच्चा पैगाम देना है। पीठाधीश्वर श्री गोस्वामी सुशील महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा भारत विश्व में अध्यात्म, प्रेम और सह-अस्तित्व का सबसे बड़ा संदेशवाहक रहा है। आज इस पावन मंच से हम यह संकल्प लेते हैं कि जाति, धर्म और भाषा के भेद को भुलाकर हम सब एकजुट रहेंगे और आतंकवाद जैसी बुराइयों का डटकर मुकाबला करेंगे। शहीदों के बलिदान से हमें प्रेरणा मिलती है कि वतन से बढ़कर कुछ नहीं है। श्री लल्लेश रेड्डी ने अपने विचार रखते हुए कहा गोरखपुर की इस मुबारक सरजमीं से हम वादा करते हैं कि भारत की गंगा-जमुनी तहजीब को और मजबूत करेंगे। आतंक और हिंसा की ताकतों के खिलाफ हमारा प्रेम, हमारी एकता, सबसे बड़ी जवाबी ताकत बनेगी। शहीदों की कुबार्नी हमें यह सिखाती है कि असली ताकत आपसी भाईचारे और राष्ट्रप्रेम में है। श्री इकरार अहमद, अध्यक्ष, दरगाह कमेटी, ने कहा हजरत मुबारक खान दरगाह शरीफ ने हमेशा अमन और सौहार्द का संदेश दिया है। आज जब मुल्क को एकजुटता की सबसे ज्यादा जरूरत है, तब इस दरगाह से उठी दुआएं और इरादे पूरे देश को नफरत के खिलाफ एक नई रौशनी देंगे। हर नागरिक को शहीदों के इस बलिदान को अपने जीवन में सम्मान और प्रेरणा के रूप में आत्मसात करना चाहिए। कार्यक्रम के समापन पर समस्त उपस्थित जनसमूह ने जय हिंद और हिंदुस्तान ज़िंदाबाद के नारों के साथ देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का जश्न मनाया।एक शाम शहीदों के नामह्व कार्यक्रम भारत की साझा संस्कृति, अध्यात्मिकता और अमन के साझा संकल्प का जीवंत उदाहरण बनकर इतिहास में दर्ज हो गया।

लखनऊ में 1090 चौराहे के पास मां-बेटी से छेड़छाड़

लखनऊ । 1090 चौराहे के पास शुक्रवार रात देवर के साथ घूमने निकली महिला और उसकी बेटी के साथ कार सवार युवकों ने छेड़छाड़ की। बीच-बचाव में महिला के कपड़े फट गए। पीड़िता का आरोप है कि आरोपियों ने कार ओवरटेक कर घटना को अंजाम दिया। लोगों के एकत्र होने पर कार चढ़ाने की कोशिश की। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर आरोपी दोनों युवकों को गिरफ्तार कर कर लिया। बताया जा रहा है मारपीट दोनों पक्षों में कार टकराने को लेकर हुई थी। मुलायमनगर निवासी महिला ने पुलिस को बताया कि शुक्रवार रात पॉलिटेक्निक होते हुए बेटी और देवर के साथ 1090 चौराहे की तरफ घूमने निकली थीं। रास्ते में तकरोही निवासी अधिवक्ता अभिषेक और उसके दोस्त अश्वनी ने उनकी कार ओवरटेक कर रोक ली। कुछ समझ पाती कि उससे पहले ही वह लोग देवर को पकड़ कर पीटने लगे। वह करीब 10 लोग थे। उन्होंने बेटी के साथ कार से उतरकर इसका विरोध किया। इस पर उन दोनों से अश्लीलता करते हुए कपड़े फाड़ दिए। आसपास के लोगों के जुटने पर कार चढ़ाने की कोशिश की। इंस्पेक्टर राजेश त्रिपाठी ने बताया कि विवाद की सूचना पर पुलिस पहुंची। अभिषेक और अश्वनी को हिरासत में लेकर थाने लाई। वहां भी आरोपी उग्र हो गए। जांच में गाड़ी टकराने को लेकर विवाद होने की बात सामने आई है। जिसके चलते मारपीट हुई। महिला की तहरीर पर छेड़छाड़ और मारपीट की धारा में मुकदमा दर्ज कर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

महिंद्रा कर रही है एसएमएल इसुजु लिमिटेड का टेकओवर, हिस्सेदारी खरीदने का किया ऐलान

नई दिल्ली।

महिंद्रा एंड महिंद्रा लिमिटेड ने एसएमएल इसुजु लिमिटेड में 58.96 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदने का ऐलान किया है। महिंद्रा एंड महिंद्रा इस डील के तहत 650 रुपये प्रति शेयर के हिसाब से कुल 555 करोड़ रुपये खर्च करेगी। इसके अतिरिक्त, महिंद्रा एंड महिंद्रा, सेबी के नियमों के अनुसार, टेकओवर के लिए ओपन ऑफर भी लाएगी।

यह जानकारी महिंद्रा एंड महिंद्रा ने शनिवार को साझा की है। महिंद्रा एंड महिंद्रा, एसएमएल इसुजु लिमिटेड के प्रमोटर सुमितोमो कॉर्पोरेशन से 43.96 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदेगी, जबकि 15 प्रतिशत हिस्सेदारी कंपनी के सार्वजनिक शेयरधारकों से खरीदी जाएगी। इसके बाद, महिंद्रा को 26 प्रतिशत और हिस्सा खरीदने के लिए ओपन ऑफर लाना होगा, जो सेबी के नियमों के अनुसार आवश्यक है। यह अधिग्रहण महिंद्रा एंड महिंद्रा की 3.5 टन कॉमर्शियल सेगमेंट में स्थिति को और मजबूत करेगा। वर्तमान में महिंद्रा का इस सेगमेंट में 3 प्रतिशत हिस्सा है। 3.5 टन एलसीवी (लाइट कॉमर्सियल व्हीकल) सेगमेंट में महिंद्रा की हिस्सेदारी 52 प्रतिशत है, और इस अधिग्रहण के बाद उनका मार्केट शेयर 6 प्रतिशत तक बढ़ जाएगा। एसएमएल इसुजु लिमिटेड एक स्थापित और लोकप्रिय ब्रांड है और भारत भर में इसकी मजबूत पकड़ बनी हुई है। कंपनी आइएलसीवी (इंटरमीडिएट एंड लाइट कॉमर्सियल व्हीकल) सेगमेंट में प्रमुख खिलाड़ी है और बस सेगमेंट में इसका 16 प्रतिशत का बाजार हिस्सा है। वित्त वर्ष 2024 में, एसएमएल इसुजु लिमिटेड का ऑपरेटिंग रेवेन्यू 2,196 करोड़ रुपये था, जबकि इसका इबीआईटीडीए 179 करोड़ रुपये रहा था।

यह अधिग्रहण महिंद्रा एंड महिंद्रा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, जो उसकी कॉमर्शियल व्हीकल सेगमेंट में स्थिति को और मजबूत करेगा। महिंद्रा का यह कदम भारतीय ऑटोमोटिव बाजार में अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाने और अपनी प्रतिस्पर्धा को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर हो सकता है।

शुरुआती बुकर्स को बुकिंग राशि वापस कर रही टेस्ला, जाने क्यों

मुंबई।

टेस्ला इंक के भारतीय कार्यालय ने देश में अपने मॉडल 3 के शुरुआती बुकर्स को बुकिंग राशि वापस करनी शुरु की है। रिपोर्ट के मुताबिक, कंपनी ने 2016 में किए गए रिजर्वेशन को रिफंड करना शुरू किया है। इससे अटकलें तेज हैं कि टेस्ला अब भारत में अपनी गाड़ियों की बिक्री शुरू करने को तैयार है। टेस्ला की ओर से ग्राहकों को भेजे ईमेल में कहा गया है, हम फिलहाल आपकी बुकिंग राशि वापस करना चाहते हैं। जब हम भारत में अपने ऑफर्स को अंतिम रूप देने के बाद फिर आपसे संपर्क करने वाले है। एलन मस्क के नेतृत्व वाली टेस्ला इंक पुराने मॉडल 3 वर्जन के बंद होने के कारण यह रिफंड दे रही है।

कंपनी की ओर से ये ईमेल संकेत देते हैं कि टेस्ला भारत में उच्च इम्पोर्ट ड्यूटी को लेकर वर्षों से चली आ रही अड़चनों के बाद अब भारतीय बाजार में आने को तैयार है। मस्क ने हाल ही में पोस्ट करते हुए कहा कि वह इस साल के अंत तक भारत का दौरा करुंगा। यह ऐलान तब हुआ जब भारत और अमेरिका के बीच एक नए व्यापार समझौते पर बातचीत चल रही है, जिसमें कारों पर टैरिफ घटाने पर भी चर्चा हो रही है। अगर भारत में टैरिफ स्ट्रक्चर को ज्यादा अनुकूल बनाया गया, तब यह टेस्ला की दीर्घकालिक योजनाओं को नया आकार दे सकता है।

गौरतलब है कि बीते साल टेस्ला की वैश्विक वाहन डिलीवरी में एक दशक से ज्यादा समय में पहली बार गिरावट दर्ज की गई, जबकि चीन की बीवॉयडी कंपनी टेस्ला के लिए बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। भारत के लिए टेस्ला कारों की सड़क पर मौजूदगी बढ़ती समृद्धि वाले अपर मिडिल क्लास को आकर्षित कर सकती है। हालांकि, इसका खतरा भी है कि इससे देशी कार निर्माताओं पर असर पड़ेगा, जो देश भर में हजारों लोगों को रोजगार देते हैं।

व्हाट्सऐप का नया फीचर एडवांस्ड चैट प्राइवेसी लॉन्च

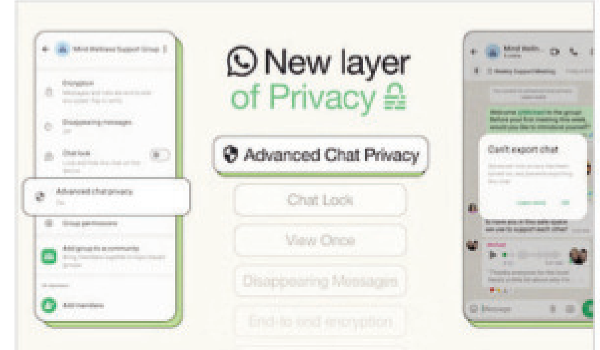

नई दिल्ली।

प्राइवेसी सेटिंग्स को और मजबूत करते हुए व्हाटसऐप ने एक नया फीचर एडवांस्ड चैट प्राइवेसी लॉन्च किया है। यह नया अपडेट पर्सनल और ग्रुप चैट दोनों पर लागू होगा। यह फीचर खासतौर पर यूजर्स की निजी बातचीत की सुरक्षा को और बेहतर बनाने के लिए लाया गया है।

यूजर को यह फीचर भरोसा देगा कि उनकी बातचीत ऐप के अंदर ही पूरी तरह सुरक्षित रहे। व्हाटसऐप ने स्पष्ट किया है कि उनकी प्राइवेसी की नींव अब भी एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन पर टिकी है, जो पहले से ही यह सुनिश्चित करता है कि मैसेज और कॉल्स केवल भेजने और प्राप्त करने वाले ही देख या सुन सकें। लेकिन अब 'एडवांस्ड चैट प्राइवेसी' फीचर इस सुरक्षा लेयर को और मजबूत करता है। इस फीचर को ऑन करने के बाद चैट्स को एक्सपोर्ट नहीं किया जा सकेगा और मीडिया फाइल्स ऑटोमैटिक डाउनलोड नहीं होंगी। यह फीचर उन लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित होगा जो अपनी प्राइवेट बातचीत को और भी ज्यादा सुरक्षित रखना चाहते हैं। यह नया फीचर व्हाटसऐप के लेटेस्ट वर्जन के साथ सभी यूजर्स के लिए धीरे-धीरे जारी किया जा रहा है। जिन यूजर्स को अभी यह सेटिंग नहीं दिख रही है, वे गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से व्हाटसऐप को अपडेट कर सकते हैं और इस नए प्राइवेसी फीचर का लाभ उठा सकते हैं। व्हाटसऐप का कहना है कि इस फीचर से यूजर्स को यह यकीन मिलेगा कि उनकी चैटिंग की दुनिया पूरी तरह से ऐप तक ही सीमित है और किसी भी बाहरी माध्यम में उसकी कोई झलक नहीं जाएगी।

ट्रेड वॉर के बीच एप्पल की बदली रणनीति से चीन को लगा बड़ा झटका

नई दिल्ली।

अमेरिका और चीन के बीच चल रहे व्यापारिक तनाव (ट्रेड वॉर) के बीच एप्पल ने अपनी रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। कंपनी ने योजना बनाई है कि अगले साल तक अमेरिका में बिकने वाले तमाम आईफोन भारत में ही बनाए जाएं। यह कदम चीन से आयात पर बढ़े हुए टैरिफ और व्यापारिक तनाव को देखते हुए उठाया गया है। एप्पल कंपनी वर्तमान में चीन और भारत दोनों ही जगह आईफोन का उत्पादन करवा रही है, लेकिन चीन से आयात महंगा होने के कारण अब कंपनी भारत में अपने उत्पादन को बढ़ा रही है।

कंपनी के प्रमुख कॉन्ट्रैक्ट मैन्युफैक्चरर्स, जैसे फॉक्सकॉन, बेंगलुरु में अपने प्लांट की क्षमता को बढ़ा रहे हैं। फॉक्सकॉन का नया प्लांट इस महीने के अंत तक शुरू होने की उम्मीद है, जिसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता 20 मिलियन आईफोन तक हो सकती है। सूत्रों के अनुसार, यदि यह रणनीति सफल होती है, तो 2026 तक भारत में सालाना आईफोन उत्पादन 60 मिलियन यूनिट तक पहुंच सकता है, जो वर्तमान उत्पादन का लगभग दोगुना होगा। एप्पल की ग्लोबल बिक्री में अमेरिका का हिस्सा लगभग 28 प्रतिशत है, इसलिए यह कदम कंपनी की लॉजिस्टिक्स रणनीति और प्रॉफिट मार्जिन पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। एप्पल का यह कदम व्यापारिक रणनीति में महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है, जो न केवल भारत को एक प्रमुख मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में स्थापित कर सकता है, बल्कि चीन के प्रति कंपनी की निर्भरता को भी कम कर सकता है।

पोर्टफोलियो में अल्ट्रोज सीएनजी फेसलिफ्ट वर्जन जोड़ने की योजना

नई दिल्ली।

स्वदेशी टाटा मोटर्स कंपनी अपने पोर्टफोलियो में अल्ट्रोज सीएनजी फेसलिफ्ट वर्जन जोड़ने की योजना बना रही है। हाल ही में इस कार को टेस्टिंग के दौरान देखा गया और पुणे में रोड टेस्ट के दौरान इसकी स्पाई फोटोज भी सामने आई हैं।

इसे इस साल के अंत तक लॉन्च किए जाने की उम्मीद है। अल्ट्रोज सीएनजी फेसलिफ्ट में कई बदलाव देखने को मिल सकते हैं। फ्रंट फेसिया में प्रमुख अपडेट हैं, जैसे शार्प लाइटिंग सेटअप और ग्रिल-बम्पर में बदलाव। इन अपडेट्स से यह हैचबैक और भी स्पोर्टी नजर आएगी। टेस्टिंग व्हीकल में स्टील व्हील का उपयोग किया गया है, जो निचले वैरिएंट को दर्शाता है। वहीं, पिछले हिस्से में रिफ्रेश की गई एलईडी टेल लाइट और अपडेटेड बंपर होने की संभावना है।

इंटीरियर्स में भी बदलाव किए गए हैं, जैसे कि एसी वेंट्स पर पियानो ब्लैक फिनिश और नया टू-स्पोक स्टीयरिंग व्हील जिसमें इल्यूमिनेटेड टाटा लोगो है।सीएनजी मोड में यह इंजन 73.5 पीएस पावर और 103 एनएम टॉर्क जनरेट करता है। यह 5-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ उपलब्ध रहेगा। पेट्रोल और डीजल वेरिएंट्स में भी वही इंजन ऑप्शंस रहेंगे।

अल्ट्रोज सीएनजी फेसलिफ्ट, मारुति बलेनो सीएनजी वेरिएंट को टक्कर देती रहेगी, जिसमें 1.2-लीटर डुअल-फ्यूल इंजन है।

इसके अलावा, फेसलिफ्ट में वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स, नई 10.2-इंच इंस्ट्रूमेंट स्क्रीन, अपडेटेड एम्बिएंट लाइटिंग, और पावर्ड ड्राइवर सीट जैसी सुविधाएं मिल सकती हैं। सुरक्षा के मामले में सभी वैरिएंट्स में 6 एयरबैग और कैमरा-बेस्ड अडास फीचर्स स्टैंडर्ड हो सकते हैं। टाटा अल्ट्रोज सीएनजी में वही 1.2-लीटर डुअल-फ्यूल इंजन रहेगा, जो मौजूदा मॉडल में है।

नियमों में बदलाव, 10 लाख रुपये से अधिक की कीमत वाले सामानों पर देना होगा अतिरिक्त टैक्स

नई दिल्ली।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) ने 10 लाख रुपये से अधिक कीमत वाले कई लग्जरी सामानों पर अब टैक्स कलेक्टेड एप सोर्स (टीसीएस) लगाने का दायरा बढ़ाया है। नई व्यवस्था मंगलवार को अधिसूचित की गई थी और यह आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 206सी(1एफ) में किए गए संशोधन के तहत लागू होगी। इसके तहत 10 लाख रुपये से ज्यादा कीमत वाले विशेष हाई-वैल्यू आइटम्स पर 1 फीसदी टीसीएस अनिवार्य किया गया है। पहले यह प्रावधान केवल 10 लाख रुपये से अधिक कीमत वाले मोटर वाहनों पर लागू होता था। लेकिन अब वित्तीय (संशोधन) अधिनियम, 2024 के तहत इस दायरे में अन्य महंगे सामानों को भी शामिल किया गया है। अगर आप 10 लाख से ज्यादा कीमत वाले लग्जरी सामान खरीदने की सोच रहे हैं, तब अब आपको अतिरिक्त टैक्स देना पड़ सकता है। वित्त (संशोधन) अधिनियम, 2024 के तहत इनकम टैक्स एक्ट 1961 की धारा 206सी(1एफ) में बड़ा बदलाव किया गया है। इस बदलाव के जरिए अब सिर्फ महंगी कारों पर ही नहीं, बल्कि कुछ और महंगे सामानों पर भी टैक्स कलेक्शन एट सोर्स (टीसीएस) लगाया जाएगा।

ग्राहकों के लिए खास ऑफर्स लेकर आई मारुति सुजुकी

नई दिल्ली। चालू महीने में मारुति सुजुकी ने अपनी बलेनो कार पर ग्राहकों के लिए खास ऑफर्स लेकर आई है। बलेनो, हयूंदै आई20, टाटा अल्ट्राज और टोयोटा ग्लाझा जैसी कारों से प्रतिस्पर्धा करती है और लंबे समय से इस श्रेणी में सबसे ज्यादा बिकने वाली कार रही है। बलेनो की कीमत रुपए 6,70,000 से रुपए 9,92,000 (एक्स-शो रुम) तक है और इस पर कुल रुपए 57,100 तक के ऑफर्स उपलब्ध हैं। इनमें रिगल किट रुपए 42,280 और अतिरिक्त रुपए 27,100 के ऑफर्स शामिल हैं। मारुति ने एफवाय25 में बलेनो की 1,67,161 यूनिट्स बेचीं, जबकि पिछले वित्तीय वर्ष (एफवाय24) में यह आंकड़ा 1,95,607 यूनिट्स था। हालांकि, हाल ही में लॉन्च हुई बलेनो पर आधारित मारुति सुजुकी फ्रॉन्स ने कुछ हद तक बलेनो की बिक्री को प्रभावित किया है। इन दोनों कारों में समान पावरट्रेन और इंटीरियर्स का इस्तेमाल किया गया है। बलेनो में 1.2-लीटर ड्यूल-जेट ड्यूल-वीवीटी पेट्रोल इंजन है, जो 89.73 पीएस की पावर और 113एनएम का टॉर्क उत्पन्न करता है। इसके अलावा, इसमें 5-स्पीड मैन्युअल और 5-स्पीड एएमटी ट्रांसमिशन के विकल्प भी हैं। बलेनो का सीएनजी विकल्प भी उपलब्ध है, जो 77.5पीएस और 98.5 एनएम के साथ आता है।

भारतीय मादक पेय पदार्थों के लिए वैश्विक बाजारों में काफी मौकेदेव

नई दिल्ली।

एपीडा (एग्रीकल्चर एंड प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्ट एक्सपोर्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी) के चेयरमैन अभिषेक देव ने इस संभावनाओं पर जोर दिया है और कहा कि भारतीय मादक पेय पदार्थों के लिए वैश्विक बाजारों में काफी मौके हैं। भारत में बनने वाली शराब की दुनियाभर में मांग तेजी से बढ़ने की उम्मीद जताई जा रही है, और इसका निर्यात 37 करोड़ डॉलर से बढ़कर 2030 तक एक अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। उन्होंने बताया कि भारत के पास जिन, बीयर, वाइन और रम जैसे उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद मौजूद हैं, जिनकी मांग वैश्विक स्तर पर बढ़ रही है। देव ने भारतीय मादक पेय कंपनियों के परिसंघ (सीआईएबीसी) द्वारा आयोजित एल्कोबेव इंडिया सम्मेलन में कहा, हमारे पास विभिन्न प्रकार के जिन, बीयर, वाइन और रम जैसे अच्छे उत्पाद हैं, जिनकी निर्यात संभावनाएं बहुत अधिक हैं। उन्होंने उद्योग को यह भी सलाह दी कि वे निर्यात को बढ़ावा देने के लिए नए बाजारों की तलाश करें और घरेलू बाजार से संतुष्ट न रहें। एपीडा के चेयरमैन ने यह भी बताया कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच जैविक उत्पादों के लिए आपसी मान्यता समझौता फाइनल होने के करीब है, और इसमें जैविक वाइन भी शामिल है, जो निर्यात के अवसरों को और बढ़ाएगी। इस अवसर पर खाद्य प्रसंस्करण सचिव सुब्रत गुप्ता ने भी उद्योग से आग्रह किया कि वह मूल्यवर्धित उत्पादों पर ध्यान केंद्रित करें और फलों तथा सब्जियों की बर्बादी को रोकने के उपायों को बढ़ावा दें। गुप्ता ने कहा, भारत कृषि उत्पादों का प्रमुख उत्पादक है, लेकिन प्रसंस्करण की क्षमता में हम पीछे हैं। इसके साथ ही उन्होंने मादक पेय पदार्थों के निर्यात को बढ़ाने के लिए जोर दिया और कहा कि इससे भारत को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होगी।

भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव, टाटा समूह की इस कंपनी ने रचा इतिहास

मुंबई।

पिछले हफ्ते भारतीय शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव दिखाई दिया। सेंसेक्स 659.33 अंक बढ़ा, वहीं एनएसई निफ्टी में भी 187.7 अंक वृद्धि हुई। इस तेजी के चलते देश की शीर्ष कंपनियों की मार्केट वैल्यू में बढ़ोतरी देखी गई। जिसमें टाटा समूह की कंपनियों ने प्रमुख स्थान हासिल किया। खासतौर पर टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) ने रिलायंस और इंफोसिस जैसी बड़ी कंपनियों को पछाड़ दिया। भारत की टॉप-10 सबसे मूल्यवान कंपनियों के मार्केट वैल्यूएशन में पिछले हफ्ते 1,18,626.24 करोड़ रुपये की वृद्धि हुई। इसमें सबसे बड़ी बढ़त टीसीएस को मिली, टीसीएस का मार्केट कैप 53,692.42 करोड़ बढ़कर 12,47,281.40 करोड़ रुपये हो गया। इसके बाद रिलायंस इंडस्ट्रीज ने 34,507.55 करोड़ की बढ़ोतरी की, जिससे उसकी कुल वैल्यूएशन 17,59,276.14 करोड़ रुपये हो गई। रिलायंस अभी भी देश की सबसे मूल्यवान कंपनी बनी हुई है।

इंफोसिस ने भी बीते हफ्ते अच्छा प्रदर्शन किया और कंपनी की मार्केट वैल्यू 24,919.58 करोड़ रुपये बढ़कर 6,14,766.06 करोड़ रुपये हो गई। एचडीएफसी बैंक ने 2,907.85 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ अपनी वैल्यूएशन को 14,61,842.17 करोड़ रुपये तक पहुंचाया। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) को 1,472.57 करोड़ रुपये का फायदा हुआ, इससे उसकी वैल्यू 7,12,854.03 करोड़ रुपये हो गई। आईटीसी ने भी 1,126.27 करोड़ रुपये की वृद्धि हासिल की, जिससे उसका मार्केट कैप 5,35,792.04 करोड़ रुपये हो गया।

हालांकि, इस दौरान कुछ कंपनियों को नुकसान भी हुआ। भारती एयरटेल का मार्केट वैल्यू 41,967.5 करोड़ से कम होकर 10,35,274.24 करोड़ रुपये हो गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 10,114.99 करोड़ रुपये घटकर 5,47,830.70 करोड़ रुपये पर आ गया। बजाज फाइनेंस और आईसीआईसीआई बैंक को भी क्रमशः 1,863.83 करोड़ रुपये और 1,130.07 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। इस समय, भारत की सबसे मूल्यवान कंपनियों की लिस्ट में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर है, उसके बाद एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, एसबीआई, इंफोसिस, बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर और आईटीसी का नंबर आता है।

अनंत अंबानी रिलायंस इंडस्ट्रीज के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर बने

1 मई से संभालेंगे पद, अभी रिलायंस जियो, रिटेल और एनर्जी वर्टिकल के बोर्ड मेंबर

मुंबई। देश की सबसे बड़ी प्राइवेट कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने अनंत अंबानी को कंपनी का एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त किया है। अनंत 1 मई से अगले 5 साल के लिए इस पद पर रहेंगे। वे मुकेश अंबानी के छोटे बेटे हैं। 2023 से वे कंपनी में नॉन एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं। रिलायंस ने एक्सचेंज फाइलिंग में इसकी जानकारी दी। कंपनी ने बताया कि रिलायंस के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने 25 अप्रैल को अपनी बैठक में ह्यूमन रिसोर्स, नोमिनेशन एंड रिम्यूनरेशन कमेटी की सिफारिश पर विचार किया और नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अनंत एम. अंबानी को होल टाइम एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर नियुक्त किया। अनंत को अगस्त 2022 में कंपनी के एनर्जी वर्टिकल की कमान सौंपी गई थी। इसके अलावा अनंत मार्च 2020 से जियो प्लेटफॉर्म्स लिमिटेड, मई 2022 से रिलायंस रिटेल वेंचर्स लिमिटेड और जून 2021 से रिलायंस न्यू एनर्जी लिमिटेड के साथ-साथ रिलायंस न्यू सोलर एनर्जी लिमिटेड के बोर्ड मेंबर हैं। वे सितंबर 2022 से रिलायंस की फिलैंथरोपिस्ट आर्म- रिलायंस फाउंडेशन के बोर्ड में भी हैं।

विराट लीजिंग लिमिटेड का ऐलान, शेयरों को 2 हिस्सों में बांटा जाएगा

मुंबई। विराट लीजिंग लिमिटेड ने शेयरों के बंटवारे की घोषणा की है। इसके मुताबिक कंपनी के शेयरों को 2 हिस्सों में बांटा जाएगा। इस स्टॉक स्प्लिट के लिए कंपनी ने रिकॉर्ड डेट का ऐलान किया है। कंपनी के शेयरों का भाव 100 रुपये से कम का है। मार्केट एक्सचेंज को दी जानकारी में विराट लीजिंग लिमिटेड ने बताया है कि 10 रुपये के फेस वैल्यू वाले एक शेयर को 2 टुकड़ों में बांटा जाएगा। इस स्टॉक स्प्लिट के बाद कंपनी के शेयरों की फेस वैल्यू घटकर 5 रुपये होगी। विराट लीजिंग लिमिटेड ने जानकारी देकर बताया है कि स्टॉक स्प्लिट के लिए रिकॉर्ड डेट 16 मई 2025 तय होगा है। यह पहली बार है जब कंपनी के शेयरों का बंटवारा हुआ है। बीएसई के आंकड़ों के मुताबिक कंपनी ने अभी तक एक बार भी बोनस शेयर या डिविडेंड भी नहीं दिया है। शुक्रवार को विराट लीजिंग लिमिटेड के शेयरों में 2 प्रतिशत का लोअर सर्किट लगा था। इसके बाद कंपनी के शेयर मार्केट क्लोजिंग के टाइम पर 74.73 रुपये पर ट्रेड कर रहे थे। इससे पहले कंपनी के शेयरों में 21, 23 और 24 अप्रैल को कंपनी के शेयरों में लोअर सर्किट लगा है। बीते एक साल में कंपनी के शेयरों की कीमतों में 40 प्रतिशत की तेजी आई है। बता दें, कंपनी का 52 सप्ताह का हाई 142.10 रुपये और 52 सप्ताह का लो 53 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 97 करोड़ रुपये का है। 5 साल में कंपनी ने पोजीशनल निवेशकों को 267 प्रतिशत का रिटर्न दिया है।

अश्विनी वैष्णव ने इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण बनाने वाली कंपनियों को सरकार की प्रोत्साहन योजना का लाभ उठाने डिजायन टीम बनाने की दी सलाह

नई दिल्ली।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को कहा कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाने वाली कंपनियों को सरकार की प्रोत्साहन योजना का लाभ उठाने के लिए डिजायन टीम बनानी होगी और अपने उत्पादों की गुणवत्ता को उच्चतम स्तर तक पहुंचाना होगा।

मंत्री ने यह भी कहा कि इलेक्ट्रॉनिक्स कल-पुर्जों की विनिर्माण योजना (ईसीएमएस) के तहत कंपनियों की मंजूरी देने से पहले इन दोनों कारकों पर ध्यान दिया जाएगा, हालांकि इसे औपचारिक मानदंड के रूप में नहीं रखा जाएगा। वैष्णव ने कहा, मैं इस योजना में भाग लेने वाली हर कंपनी से डिजायन टीम बनाने का अनुरोध करता हूं। हालांकि, इसे औपचारिक मानदंड नहीं बनाया गया है, यह एक अनौपचारिक मानदंड के रूप में देखा जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि कुछ कंपनियों ने अपनी डिजायन टीम में 5,000 इंजीनियर शामिल किए हैं। मंत्री ने स्पष्ट किया, यदि आपके पास डिजायन टीम नहीं है और आप सभी आवश्यक मापदंडों को पूरा कर रहे हैं, तब भी हम आपको मंजूरी नहीं देंगे। डिजायन टीम बनानी ही होगी। इसके साथ ही मंत्री ने उत्पादों की गुणवत्ता पर भी जोर दिया। उन्होंने कंपनियों से आग्रह किया कि वे सिक्स सिग्मा गुणवत्ता स्तर हासिल करें, जो उच्चतम गुणवत्ता और दक्षता को दर्शाता है। उन्होंने कहा, सिक्स सिग्मा से कम कुछ भी बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हम केवल विनिर्माण की मात्रा पर नहीं, बल्कि उत्पादों की गुणवत्ता पर भी आपकी प्रगति का मूल्यांकन करेंगे।

सिक्स सग्मा से आशय?

सिक्स सिग्मा से आशय है एक ऐसी गुणवत्ता प्रक्रिया, जिसका उद्देश्य त्रुटियों को न्यूनतम करना, विविधताओं को दूर करना और गुणवत्ता एवं दक्षता को बढ़ाना है। मंत्री अश्विनी वैष्णव का यह बयान कंपनियों को यह संदेश देता है कि सिर्फ मापदंडों को पूरा करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उच्च गुणवत्ता और बेहतर डिजायन प्रक्रिया पर भी ध्यान देना आवश्यक होगा, यदि वे सरकार की प्रोत्साहन योजना का लाभ उठाना चाहती हैं।

नोकिया सॉल्यूशंस ने कर्ज में डूबी वोडाफोन आइडिया में एक प्रतिशत हिस्सेदारी 786 करोड़ रुपए में बेची

नई दिल्ली। नोकिया सॉल्यूशंस एंड नेटवर्क्स इंडिया ने कर्ज में डूबी दूरसंचार कंपनी वोडाफोन आइडिया लिमिटेड (वीआईएल) में अपनी करीब एक प्रतिशत हिस्सेदारी शुक्रवार को 786 करोड़ रुपए में बेच दी है। एनएसई (नेशनल स्टॉक एक्सचेंज) पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, नोकिया सॉल्यूशंस एंड नेटवर्क्स इंडिया ने 102.70 करोड़ शेयर बेचे, जो वोडाफोन आइडिया में लगभग 0.95 प्रतिशत हिस्सेदारी के बराबर हैं। इन शेयरों को औसतन 7.65 रुपए प्रति शेयर की कीमत पर बेचा गया, जिससे कुल सौदे की कीमत 785.67 करोड़ रुपए हुई। इस बीच, गोल्डमैन सैक्स, जो एक वैश्विक निवेश कंपनी है, ने वोडाफोन आइडिया में 59.86 करोड़ शेयर यानी 0.55 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीदी। वोडाफोन आइडिया के शेयरों के अन्य खरीदारों का विवरण अभी तक सामने नहीं आया है। पिछले साल जून में, वोडाफोन आइडिया ने घोषणा की थी कि वह नोकिया इंडिया और एरिक्सन इंडिया को उनके आंशिक बकाये का भुगतान करने के लिए 2,458 करोड़ रुपए के शेयर आवंटित करेगी। इस सौदे से नोकिया सॉल्यूशंस को वोडाफोन आइडिया में अपनी हिस्सेदारी बेचने के रूप में एक महत्वपूर्ण वित्तीय लाभ हुआ है, जबकि गोल्डमैन सैक्स जैसे निवेशक इस अवसर का लाभ उठाते हुए वोडाफोन आइडिया में निवेश कर रहे हैं।

'इन दो पाकिस्तानी नागरिकों को नहीं छोड़ना होगा भारत'- भोजपुर एसपी ने क्यों कही यह बात

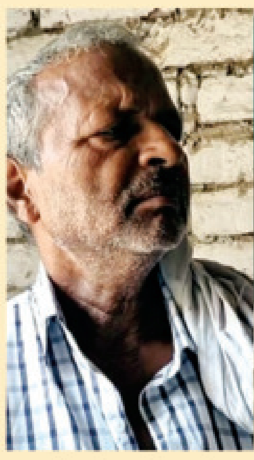

भोजपुर। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने भारत में रह रहे सभी पाकिस्तानियों को यहां से जाने का आदेश जारी कर दिया है। यह आदेश जारी होते ही पाकिस्तान से आये उन सभी लोगों की पहचान करनी शुरू कर दी गई है। भारत में लम्बे समय से रह रहे पाकिस्तान के नागरिकों को पाकिस्तान भेजने का दवाब बनाया जा रहा है। लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आदेश का भोजपुर की दो महिलाओं पर कोई असर नहीं होगा। इस बात की जानकारी भोजपुर के एसपी ने दी है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए एसपी राज ने बताया कि कोईलवर निवासी बसीर अहमद के पुत्र आमिर ने पाकिस्तान के कराची निवासी आंसमा से अक्टूबर 2018 में पाकिस्तान के कराची में निकाह किया था। वह 22 जुलाई 2019 को 60 दिनों के वीजा पर भोजपुर के कोईलवर में पति के साथ पहुंचीं, जिसके बाद सितंबर-2019 को पाकिस्तान चली गईं। 2020 में 45 दिनों के वीजा पर फिर भारत आईं। इसके बाद आसमां नौरी वीजा पर 16 सितंबर 2022 को पाकिस्तान गई और पांच दिसंबर 2022 को पाकिस्तान से भारत आईं। इसके बाद से वह यहीं हैं। आसरी बेगम का वर्ष 2032 तथा और आसमां का वर्ष 2027 तक का वीजा है। वहीं दूसरी ओर, शाहपुर में रह रहीं पाकिस्तानी नागरिक आसरी बेगम शाहपुर प्रखंड के शिवपुर पंचायत अंतर्गत वार्ड नंबर तीन कनैला गांव निवासी आलमगीर कुरैशी की पत्नी हैं और करीब 30 वर्षों से वीजा बढ़ा-बढ़ा कर यहां रह रहीं हैं। आसरी बेगम की कुल पांच संतान हैं, जिसमें चार लड़की और एक लड़का है। दो बेटियों का निकाह भी भारत में ही हो चुका है। इस संबंध में जानकारी देते हुए एसपी राज ने बताया कि दोनों के निकाह की दिलचस्प कहानी है। वर्ष 1947 में भारत-पाकिस्तान बंटवारे के समय रानीसागर एवं कनैला से कुछ परिवार पाकिस्तान चले गए थे। उनमें से कुछ परिवार 1995 के आसपास एक शादी में शामिल होने के लिए यहां पर आए थे। सभी लोग दो महीने के वीजा पर पाकिस्तान आए हुए थें। इसी दो महीने के वीजा के दौरान ही आसरी बेगम एवं आलमगीर कुरैशी का निकाह हो गया था। तब से लेकर आज तक कई बार आसरी बेगम एवं उनके पति द्वारा गृह मंत्रालय में अपनी नागरिकता को लेकर आवेदन दिया जाता रहा है, लेकिन नागरिकता नहीं मिली, लेकिन वीजा की अवधि बढ़ती चली गई। इस मामले में भोजपुर पुलिस अधीक्षक मिस्टर राज ने बताया कि इन दोनों पाकिस्तानी महिलाओं के पास लंबे अवधि तक का वीजा है। इसलिए वह यहां रह सकती हैं। ऐसे में भारत सरकार के द्वारा पाकिस्तानी नागरिकों के सारे वीजा को रद्द कर तीन दिनों में भारत खाली करने का आदेश दिया गया था। लेकिन भोजपुर पुलिस अधीक्षक मिस्टर राज के ने कहा कि ये दोनों पाकिस्तानी महिलाएं यहां रह सकती हैं।

स्कूल बसों का सीसीटीवी फुटेज 60 दिन तक सुरक्षित रखना होगा

पटना। स्कूल बसों के सीसीटीवी फुटेज को 60 दिन तक संरक्षित रखना अनिवार्य है। यह जिम्मेवारी स्कूल प्रबंधन की होगी। 14 सीटों से अधिक के स्कूली वाहनों में सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य है। प्रमंडलीय आयुक्त मयंक बरवड़े ने कहा कि कि बच्चों की सुरक्षा से खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं होगा। स्कूलों वाहनों के लिए निर्धारित मानकों का शत-प्रतिशत अनुपालन होना चाहिए। वे शनिवार को पटना प्रमंडल के सभी छह जिलों के जिला परिवहन पदाधिकारियों के साथ बैठक कर रहे थे। उन्होंने डीएम की अध्यक्षता में होने वाली जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में स्कूली बच्चों के सुरक्षित परिवहन से संबंधित समीक्षा करने, सभी डीटीओ को स्कूलों में बाल परिवहन समिति की नियमित बैठक कराने का निर्देश दिया। संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में स्कूली वाहनों की नियमित सघन जांच करने, आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। प्रमंडलीय आयुक्त ने कहा कि बच्चों की पाठ्य-सामग्री में सड़क सुरक्षा से संबंधित विषय अनिवार्य रूप से रहना चाहिए।

प्रखंडों के होंगे अपने भवन, बीडीओ को गाड़ी समेत सभी सुविधाएं : मंत्री श्रवण कुमार

पटना। राज्य के सभी 534 प्रखंडों के अपने भवन होंगे। कई प्रखंडों के भवन का निर्माण हो गया है, लेकिन जिनके भवन नहीं बने हैं, वहां जल्द इसका निर्माण कराया जाएगा। यह घोषणा ग्रामीण विकास विभाग मंत्री श्रवण कुमार ने की। वे शनिवार को शास्त्रीनगर स्थित ऊर्जा ऑडिटोरियम में आयोजित प्रखंड विकास अधिकारियों के एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम सह प्रखंडों के लिए सरकारी वाहन वितरण कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सभी बीडीओ से कहा कि नया भवन मिल रहा है, नई गाड़ी समेत अन्य सभी सुविधाएं मिल रही हैं। अब योजनाओं का क्रियान्वयन पूरा मन लगाकर करें, ताकि आम लोगों को इससे लाभ मिले। गांव के गरीबों का इस विभाग पर बहुत भरोसा है। इस कार्यक्रम में मंत्री ने बचे हुए 422 प्रखंडों के बीडीओ को नई गाड़ी की चाबी सौंपी। गौरतलब है कि पहले चरण में इस वर्ष 1 मार्च को 112 प्रखंडों के बीडीओ को गाड़ी की चाबी दी गई थी। दूसरे चरण में बचे हुए प्रखंडों को वाहन उपलब्ध कराए गए हैं। साथ ही प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में उल्लेखनीय कार्य करने वाले बीडीओ को सम्मानित किया। इसमें मंच पर बुलाकर टॉप-10 बीडीओ के अलावा विभाग के अन्य स्तर के पदाधिकारियों और कर्मियों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया। मंत्री ने मंच पर 7 अलग-अलग प्रखंड के बीडीओ को सम्मानित किया। ऐसे उल्लेखनीय कार्य के लिए सम्मानित होने वाले बीडीओ की संख्या 38 है। यानी प्रत्येक जिले के एक प्रखंड के बीडीओ को सम्मानित किया गया है। समस्तीपुर के विभूतिपुर प्रखंड के चंद्रमोहन पासवान, वैशाली के अंजनी कुमार, औरंगाबाद के रफीगंज के उपेंद्र कुमार दास, अररिया के रानीगंज के उत्तम कुमार चौहान, किशनगंज के पोठिया के मो. आसिफ, नवादा के अकबरपुर की गीता, शिवहर के तरयानी की जूली कुमारी, सुपौल के त्रिवेणीगंज प्रखंड के अभिनव भारती के अलावा अन्य शामिल हैं। रानीगंज, कलेर, नवीनगर, अमरपुर, मटिहानी, पीरपैंती, कोईलवर, ब्रहमपुर, बिरौल, इमामगंज, कोचायकोट, खैरा, काको, भभुआ, बरारी, खगड़िया, पोठिया, सूर्यगढ़ा, मधेपुरा, बेनीपट्टी, धरहरा, पारू, नूरसराय, अकबरपुर, चनपटीया, पंडारक, चिरैया, कसबा, दिनारा, मेहसी, कल्याणपुर, दरियापुर, शेखपुरा, तरियानी, परिहार, बड़हिया, त्रिवेणीगंज और पातेपुर।

रंगदारी मांगने के मामले में पुलिस को मिली बड़ी सफलता, मुख्य आरोपी गिरफ्तार

सीवान। जिले में लक्ष्मी नर्सिंग होम के मैनेजर को धमकी देकर 25 लाख रुपये की रंगदारी मांगने के मामले में सीवान पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल की है। 22 अप्रैल 2025 को दोपहर करीब 2:48 बजे, नर्सिंग होम के मैनेजर चंदन कुमार सिंह को अज्ञात अपराधी ने मोबाइल नंबर 9005945009 से कॉल कर 25 लाख रुपये की रंगदारी मांगी थी और न देने पर जान से मारने की धमकी दी थी। इस मामले के उद्भेदन के लिए पुलिस अधीक्षक, सीवान के निर्देश पर पुलिस उपाधीक्षक, साइबर थाना, सीवान के नेतृत्व में एक विशेष छापामारी दल का गठन किया गया था। तकनीकी शाखा के सहयोग से पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 26 अप्रैल 2025 को कांड का सफल उद्भेदन कर लिया। इस मामले में मुख्य आरोपी धर्मेंद्र कुमार यादव, पिता अमरनाथ यादव, निवासी मदेशीलापुर, थाना आंदर, जिला सिवान को गिरफ्तार किया गया। आरोपी के पास से रंगदारी मांगने में इस्तेमाल किया गया वीवो कंपनी का एंड्रॉयड मोबाइल भी बरामद किया गया। पूछताछ में धर्मेंद्र ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है। धर्मेंद्र कुमार यादव का आपराधिक इतिहास भी सामने आया है। वह पहले भी कई आपराधिक मामलों में शामिल रहा है, जिनमें नगर थाना कांड संख्या 287/25, आंदर थाना कांड संख्या 111/25, चकिया थाना कांड संख्या 307/24 और उत्पाद थाना कांड संख्या 676/23 शामिल हैं। इन मामलों में उस पर भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं, आईटी एक्ट, और बिहार मधनिषेध अधिनियम के तहत आरोप दर्ज हैं। छापामारी दल में पुलिस उपाधीक्षक, साइबर थाना, सिवान, पुलिस निरीक्षक सह थानाध्यक्ष, नगर थाना, सिवान, सहित अन्य पुलिस कर्मी शामिल थे। सिवान पुलिस की इस कार्रवाई से क्षेत्र में अपराधियों के बीच दहशत का माहौल है, और आम जनता में पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ा है। पुलिस ने आगामी कार्रवाई के लिए जांच को और गहरा करने का निर्णय लिया है।

साले ने जीजा की चाकू से गोदकर की हत्या

मधुबनी । बेनीपट्टी थाना क्षेत्र के विशनपुर गांव के धोबीघाट पुल के पास रविवार सुबह एक युवक का खून से लथपथ एक शव मिला है। मृतक की पहचान साहरघाट थाना क्षेत्र के त्रिमुहान गांव निवासी नुधो यादव (36) के रूप में हुई है। पुलिस को मौके से मृतक की बाइक, घड़ी और मोबाइल बरामद हुआ है। मृतक के परिजनों ने बताया कि नुधो जयपुर में काम करता था और हाल ही में गांव लौटा था। उसकी शादी सीतामढ़ी जिला के चोरौत थाना क्षेत्र के बलसा गांव में हुई थी। शनिवार शाम करीब 6 बजे वह घर पर भूसा भर रहा था। इसी दौरान अगरोपट्टी गांव निवासी उसका ममेरा साला बौआजी उसे बुलाकर उसके ससुराल ले गया। फिर वह देर रात तक वह घर नहीं लौटा और उसका मोबाइल स्विच ऑफ मिला। बताया कि बउआ यादव और उसके खुद के साले नवीन यादव उसे घर से बुलाकर ले गया और कुछ लोगों के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी। रविवार की सुबह 6 बजे के आसपास बेनीपट्टी थाना क्षेत्र के मकिया बिशनपुर गांव के धोबी घाट में उसका शव मिलने से सनसनी फैल गई। इसकी सूचना के बाद आक्रोशित परिजनों व ग्रामीणों ने मिलकर मृतक के साले नवीन यादव को पकड़ कर साहरघाट थाना पुलिस के हवाले कर दिया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि शनिवार शाम विशनपुर चौक पर नुधो का अपने साले और ममेरे साले के साथ विवाद हुआ था। इस दौरान मारपीट भी हुई थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए बेनीपट्टी थानाध्यक्ष शिवशरण साह और डीएसपी निशिकांत भारती मौके पर पहुंचे। पुलिस ने मृतक के साले नवीन यादव को त्रिमुहान से हिरासत में ले लिया है।

संक्षिप्त डायरी

भीषण सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत, एक की हालत गंभीर, तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने बाइक को मारी टक्कर

कैमूर। भीषण सड़क हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। वहीं एक की हालत गंभीर है। उसे बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर किया गया है। घटना परसिया गांव के पास रविवार सुबह हुई। बताया जा रहा है कि चारों युवक एक ही बाइक सवार होकर भभुआ से अपने गांव की ओर लौट रहे थे। इसी दौरान मोहनिया की ओर से आ रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने इनकी बाइक में टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। इधर, हादसे के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों की भीड़ जमा हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से घायल हुए दोनों युवकों को अस्पताल में भर्ती करवाया लेकिन एक को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं दूसरी युवक का इलाज चल रहा है। पुलिस ने तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया। पुलिस का कहना है कि तेज रफ्तार स्कॉर्पियो की चपेट में आने से तीन युवकों की मौत हो गई है। मरने वालों और घायल भभुआ थाना इलाके के बारे गांव के बताए जा रहे हैं। वहीं ग्रामीणों का कहना है कि चारों युवक एक ही बाइक पर सवार होकर लौट रहे थे। इसी दौरान तेज रफ्तार स्कॉर्पियो की चपेट में आ गए। हादसे के बाद स्कॉर्पियो चालक गाड़ी लेकर फरार हो गया। पुलिस से अपील है कि वह इस मामले को गंभीरता से ले और चालक की गिरफ्तारी करे। इधर, घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। गांव में मातम पसरा हुआ है। लोगों का कहना है कि एक ही पल में तीन लोगों की जिंदगी छिन गई।

संदिग्ध परिस्थितियों में फंदे से लटका मिला विवाहिता का शव, परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

मुजफ्फरपुर। जिले के सकरा थाना क्षेत्र के समस्तपुर गांव में शनिवार को एक विवाहिता का शव संदिग्ध परिस्थितियों में उसके कमरे में फंदे से लटका मिला। मृतका की पहचान 24 वर्षीय रूबीना खातून, पिता मो. लाल बाबू के रूप में हुई है। रूबीना की शादी दो साल पहले सकरा थाना क्षेत्र के समस्तपुर वार्ड-5 निवासी मो. इस्लाम के पुत्र अली मोहम्मद से हुई थी। मृतका की एक छोटी बेटी भी है। कमरे में शव मिलने की खबर फैलने के बाद बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए। सूचना मिलते ही सकरा थाने की पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की।मृतका के मायके वालों ने आरोप लगाया है कि शादी के बाद से ही रूबीना को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था। उन्होंने बताया कि शादी के समय दहेज भी दिया गया था, लेकिन इसके बावजूद आए दिन उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता था। परिजनों का आरोप है कि ससुराल वालों ने उसे मारकर फंदे से लटका दिया। मामले की जानकारी देते हुए सकरा पुलिस के सब-इंस्पेक्टर शिवजतन कुमार ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए एसकेएमसीएच मेडिकल कॉलेज भेजा गया है। प्रारंभिक जांच में मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है, लेकिन मृतका के शरीर पर चोट के निशान भी पाए गए हैं इसलिए फॉरेंसिक टीम से भी जांच कराई जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल सकेगा। पुलिस मृतका के परिजनों के बयान के आधार पर आगे की कार्रवाई कर रही है।

पति की मौत से सदमे में आई पत्नी ने भी दम तोड़ा, एक साथ उठी दंपति की अर्थी

मुजफ्फरपुर । एक शख्स की अचानक मौत हो गई। पति की मौत की खबर सुनते ही उनकी पत्नी की भी इस सदमे से मौत हो गई। फिर दोनों पति-पत्नी की एक साथ अर्थी उठी और फिर एक ही चिता पर दोनों का अंतिम संस्कार किया गया। मामला कुढ़नी थाना क्षेत्र के किशुनपुर मधुवन गांव का है। कैलाश बैठा (55) और उनकी पत्नी गुजरी देवी (50) थी।घटना के संबंध में स्थानीय लोगों ने बताया कि शुक्रवार की देर रात को कैलाश बैठा की अचानक तबीयत बिगड़ गई। बीमार होने पर स्थानीय लोग उन्हें अस्पताल ले गये, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। उनकी मौत की खबर सुनते ही कैलाश बैठा की पत्नी गुजरी देवी भी बेहोश गई। आननफानन में उन्हें भी उसी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनकी मौत हो गई। ग्रामीण कैलाश और उनकी पत्नी की अर्थी सजाई गई।

कथावाचक प्रदीप मिश्रा पर भड़के लालू के विधायक प्रो. चन्द्रशेखर

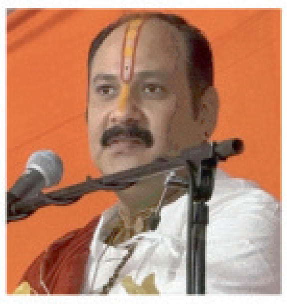

मधेपुरा। जिले के सिंहेश्वर में आयोजित शिव महापुराण में पंडित प्रदीप मिश्रा के कथावाचन कार्यक्रम पर विवाद छिड़ गया है। मधेपुरा सदर विधायक प्रो. चंद्रशेखर ने प्रदीप मिश्रा के बयानों पर तीखा प्रहार करते हुए आरोप लगाया कि धर्म और आस्था की आड़ में समाज में नफरत फैलाने की साजिश हो रही है। उन्होंने ऐसे कथावाचकों से लोगों को सतर्क रहने की अपील की। प्रो. चंद्रशेखर ने कहा कि प्रदीप मिश्रा जैसे कथावाचकों से देशवासियों को कोई अपेक्षा नहीं करनी चाहिए.उन्होंने मिश्रा पर ज्ञान की कमी का आरोप लगाते हुए कहा कि उनके प्रवचन में मौनता और चुपता जैसे शब्दों का उल्लेख किया गया, जबकि ये शब्द किसी भी मान्य शब्दकोश में नहीं पाए जाते। विधायक ने यह भी आरोप लगाया कि मिश्रा एक तड़ीपार व्यक्ति को भगवान शिव का अवतार बता रहे हैं, जो धर्म का अपमान है। विधायक ने आगे कहा कि आज कई कथावाचक धर्म प्रचारक न रहकर एक विशेष राजनीतिक दल के प्रचारक बन चुके हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि धर्म के नाम पर कारोबार चल रहा है और जनता की आस्था के साथ छलावा किया जा रहा है। प्रदीप मिश्रा के उस बयान पर भी विधायक ने निशाना साधा जिसमें मिश्रा ने कहा था कि बच्चों को शास्त्र पढ़ें या न पढ़ें, लेकिन शस्त्र चलाना आना चाहिए। इस पर चंद्रशेखर ने सवाल उठाया कि आखिर देश की तरक्की शास्त्र से होगी या शस्त्र से? उन्होंने कहा कि ज्ञान और विज्ञान ही किसी भी देश की वास्तविक शक्ति है, हथियार नहीं।चुनावी मौसम में कथावाचकों की बढ़ती गतिविधियों पर भी सवाल उठाते हुए विधायक ने कहा कि धार्मिक भावनाओं का राजनीतिक लाभ उठाने के लिए अब कथावाचकों को भी बिहार में सक्रिय किया जा रहा है। उन्होंने जनता से अपील की कि वे सजग रहें और ऐसे लोगों के बहकावे में न आएं। प्रो. चंद्रशेखर ने कहा कि भगवान राम ने स्वयं अयोध्या में बीजेपी को पराजित कर यह संदेश दिया है कि जो लोग भगवान के नाम पर राजनीति करते हैं, उन्हें जनता करारा जवाब देती है।

बस इस वजह से पहलगाम में बच गई बिहार के 2 दंपती और 3 बच्चों की जान

मुजफ्फरपुर। धरती पर स्वर्ग का अहसास दिलाने वाले कश्मीर में हुई आतंकी घटना ने सभी को झकझोर दिया है। पर्यटक भी सुरक्षित नहीं हैं। बैरिया पुराना मोतिहारी रोड निवासी राहुल कुमार पत्नी अंजली वर्मा व चार साल के बेटे दर्श राज के साथ कश्मीर घूमने गए थे। आठ दिनों के टूर में पांच दर्शनीय स्थल घूमने का कार्यक्रम था। उनके दोस्त देव प्रयाग निवासी डॉ.अर्जुन कोटियाल, उनकी पत्नी डा.मेघा मिश्रा, दो छोटे-छोटे बच्चों संग 27 को शादी की सालगिरह मनाने पहुंचे थे।आतंकी घटना जिस दिन हुई उस वक्त 22 अप्रैल को दोपहर में श्रीनगर एयरपोर्ट से उतरकर सीधे पहलगाम पहुंचे थे। नाइट स्टे के लिए वहां दो दिनों का होटल बुक था। पहलगाम होटल से आधा किलोमीटर रास्ते में एक रिसोर्ट नजर आया। वहीं पर खाना खाने के लिए रुक गए। खाना खाकर जैसे ही बाहर निकले, सड़क पर एबुलेंस, सेना, सीआरपीएफ की तेजी से गाड़ियों दौड़ रही थीं। सभी की आंखों में खौफ नजर आ रहा था। लोग कश्मीर की तरफ भाग रहे थे। किसी तरह एक व्यक्ति को रोककर पूछा तो घटना की जानकारी मिली। उसने बताया कि आगे मत जाओ, आतंकवादी हमला हुआ है। इसमें बहुत सारे लोग मारे गए हैं, तुम भी यहां से भागो। इसपर हम लोगों ने ईश्वर को धन्यवाद देते हुए गाड़ी से कश्मीर आ गए। वहां आने पर देखा कि पूरा श्रीनगर बंद हो गया था। कश्मीर में ग्रांड कौशर होटल बुक था, उसमें आ गए। कश्मीर टाउन के अलावा पहलगाम में दो दिन, सोनमर्ग में एक, गुलमर्ग में एक व दूध पथरी की सौंदर्यवादियों में एक दिन नाइट हाल्ट के लिए वहां के होटलों व घूमने के लिए डेढ़ लाख में बुकिंग कराई थी। सारा टूर छोड़कर दोगुना भाड़ा देकर एयर इंडिया के हवाई जहाज से भागकर दिल्ली पहुंचे। टूर का सारा पैसा डूब गया। कहा कि आठ दिनों के कश्मीर टूर के बाद माता वैष्णो देवी दर्शन के लिए भी जाना था। जम्मू से दो मई को फ्लाइट से पटना वापसी थी। कश्मीर से दूसरे दिन दिल्ली आ गए। श्रीनगर एयर पोर्ट पर हजारों लोग खड़े थे। इसको लेकर फ्लाइट के फेरे भी बढ़ाए गए। 10 की बजाय 20 हजार प्रति व्यक्ति से किराया लिया गया। सुरक्षित आ गए। दिल से बैठा डर अभी खत्म नहीं हुआ। पहलगाम से लौटकर कश्मीर स्थित होटल में आए। बच्चे का दूध लाने के लिए बाहर निकले। इस पर वहां की पुलिस बोली, कहां घूम रहे हो, दिल्ली का चांदनी चौक समझ लिए हो। जहां से भी आए हो जल्दी वापस हो जाओ। पुलिस का ऐसा रूखा व्यवहार देख दिल और घबराने लगा। 23 अप्रैल को रात 11 बजे फ्लाइट का टिकट लेकर अगले दिन वहां से निकल आए।

हर रिश्ता बड़ी ही ईमानदारी से निभाया भगवान श्रीकृष्ण ने

भगवान श्रीकृष्ण ने हर रिश्ता बड़ी ही ईमानदारी से निभाया और हर रिश्तों को उन्होंने महत्व दिया। आओ जानते हैं कि इस संबंध में कुछ खास जानकारी।

मित्रता का रिश्ता

भगवान श्रीकृष्ण के हजारों सखा या कहें कि मित्र थे। श्रीकृष्ण के सखा सुदामा, श्रीदामा, मधुमंगल, सुबाहु, सुबल, भद्र, सुभद्र, मणिभद्र, भोज, तोककृष्ण, वरूथप, मधुकंड, विशाल, रसाल, मकरन्द, सदानन्द, चन्द्रहास, बकुल, शारद, बुद्धिप्रकाश, अर्जुन आदि थे। श्रीकृष्ण की सखियां भी हजारों थीं। राधा, ललिता आदि सहित कृष्ण की 8 सखियां थीं।
ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार सखियों के नाम इस तरह हैं- चन्द्रावली, श्यामा, शैव्या, पद्या, राधा, ललिता, विशाखा तथा भद्रा। कुछ जगह ये नाम इस प्रकार हैं- चित्रा, सुदेवी, ललिता, विशाखा, चम्पकलता, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और सुदेवी। कुछ जगह पर ललिता, विशाखा, चम्पकलता, चित्रादेवी, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और कृत्रिमा (मनेली)। इनमें से

गई सभी महिलाएं कृष्ण की सखियां थीं। द्रौपदी भी श्रीकृष्ण की सखी थीं। श्रीकृष्ण ने सभी के साथ अंत तक मित्रता का संबंध निभाया।

प्रेमी कृष्ण

कृष्ण को चाहने वाली अनेक गोपियां और प्रेमिकाएं थीं। कृष्ण-भक्त कवियों ने अपने काव्य में गोपी-कृष्ण की रासलीला को प्रमुख स्थान दिया है। पुराणों में गोपी-कृष्ण के प्रेम संबंधों को आध्यात्मिक और अति श्रांगारिक रूप दिया गया है। महाभारत में यह आध्यात्मिक रूप नहीं मिलता, लेकिन पुराणों में मिलता है। उनकी प्रेमिका राधा, रुक्मिणी और ललिता की ज्यादा चर्चा होती है।

पति कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण की 8 पत्नियां थीं- रुक्मिणी, जाम्बवंती, सत्यभामा, मित्रवंदा, सत्या, लक्ष्मणा, भद्रा और कालिंदी। इनसे श्रीकृष्ण को लगभग 80 पुत्र हुए थे।

भाई कृष्ण

कृष्ण की 3 बहनें थीं- एकानंगा (यह यशोदा की पुत्री थीं), सुभद्रा और द्रौपदी (मानस भगिनी)। कृष्ण के भाइयों में नेमिनाथ, बलराम और गद थे।

श्रीकृष्ण के माता पिता

श्रीकृष्ण के माता पिता वसुदेव और देवकी थे, परंतु उनके पालक माता पिता नंदबाबा और माता यशोदा थीं। श्रीकृष्ण ने इन्हीं के साथ अपनी सभी सौतेली माता रोहिणी आदि सभी के सात बराबरी का रिश्ता रखा।

अन्य रिश्तों में श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण ने अपनी बुवाओं से भी खूब रिश्ता निभाया था। कुंती और सुतासुभा से भी रिश्ता निभाया। कुंती को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्रों की रक्षा करूंगा और सुतासुभा को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्र शिशुपाल के 100 अपराध क्षमा करूंगा। इसी प्रकार सुभद्रा का विवाह कृष्ण ने अपनी बुआ

पुत्र साम्ब का विवाह दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा से किया था। श्रीकृष्ण के रिश्तों की बात करें तो वे बहुत ही उलझे हुए थे। श्रीकृष्ण ने अपने भांजे अभिमन्यु को शिक्षा दी थी और उन्होंने ही उसके पुत्र की गर्भ में रक्षा की थी।

शत्रुता का रिश्ता

इसी तरह श्रीकृष्ण ने अपनी शत्रुता का रिश्ता भी अच्छे से निभाया था। उन्होंने कंस, जरासंध, शिशुपाल, भौमासुर, कालय यवन, पौंड्रक आदि सभी शत्रुओं को सुधरने के भरपूर मौका दिया और अंत में उनका वध कर दिया।

रक्षक कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण ने किशोरावस्था में ही चाणूर और मुष्टिक जैसे खतरनाक मल्लों का वध किया था, साथ ही उन्होंने इंद्र के प्रकोप के चलते जब वृंदावन आदि ब्रज क्षेत्र में जलप्रलय हो चली थी, तब गोवर्धन पर्वत अपनी अंगुली पर उठाकर सभी ग्रामवासियों की रक्षा की थी।

शिष्य कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण के गुरु सांदीपनी थे। उनका आश्रम अवंतिका (उज्जैन) में था। कहते हैं कि उन्होंने जैन धर्म में 22वें तीर्थंकर नेमीनाथजी से भी ज्ञान ग्रहण किया था। श्रीकृष्ण गुरु दीक्षा में सांदीपनी के मृत पुत्र को यमराज से मुक्ति कराकर ले आए थे।

चंद्र की उत्पत्ति कैसे हुई? क्या कहते हैं पुराण? चंद्रमा की जन्म कथा

सुंदर सलोने चंद्रमा को देवताओं के समान ही पूजनीय माना गया है। चंद्रमा के जन्म की कहानी पुराणों में अलग-अलग मिलती है। ज्योतिष और वेदों में चंद्र को मन का कारक कहा गया है। वैदिक साहित्य में सोम का स्थान भी प्रमुख देवताओं में मिलता है। अग्नि, इंद्र, सूर्य आदि देवों के समान ही सोम की स्तुति के मंत्रों की भी रचना ऋषियों द्वारा की गई है।

पुराणों के अनुसार चंद्र की उत्पत्ति

मत्स्य एवं अग्नि पुराण के अनुसार जब ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचने का विचार किया तो सबसे पहले अपने मानसिक संकल्प से मानस पुत्रों की रचना की। उनमें से एक मानस पुत्र ऋषि अत्रि का विवाह ऋषि कर्दम की कन्या अनुसुइया से हुआ जिससे दुर्वासा, दत्तात्रेय व सोम तीन पुत्र हुए। सोम चंद्र का ही एक नाम है। पद्म पुराण में चंद्र के जन्म का अन्य वृतांत दिया गया है। ब्रह्मा ने अपने मानस पुत्र अत्रि को सृष्टि का विस्तार करने की आज्ञा दी। महर्षि अत्रि ने अनुत्तर नाम का तप आरंभ किया। तप काल में एक दिन महर्षि के नेत्रों से जल की कुछ बूंदें टपक पड़ी जो बहुत प्रकाशमय थीं। दिशाओं ने स्त्री रूप में आकर पुत्र प्राप्ति की कामना से उन बूंदों को ग्रहण कर लिया जो उनके उदर में गर्भ रूप में स्थित हो गया। परंतु उस प्रकाशमान गर्भ को दिशाएं धारण न रख सकीं और त्याग दिया।
उस त्यागे हुए गर्भ को ब्रह्मा ने पुरुष रूप दिया जो चंद्रमा के नाम से प्रख्यात हुए। देवताओं, ऋषियों व गंधर्वों आदि ने उनकी स्तुति की। उनके ही तेज से पृथ्वी पर दिव्य औषधियां उत्पन्न हुईं। ब्रह्मा जी ने चंद्र को नक्षत्र, वनस्पतियों, ब्राह्मण व तप का स्वामी नियुक्त किया।
स्कंद पुराण के अनुसार जब देवों तथा दैत्यों ने क्षीर सागर का मंथन किया था तो उस में से चौदह रत्न निकले थे। चंद्रमा उन्हीं चौदह रत्नों में से एक है जिसे लोक कल्याण हेतु, उसी मंथन से प्राप्त कालकूट विष को पी जाने वाले भगवान शंकर ने अपने मस्तक पर धारण कर लिया। पर ग्रह के रूप में चंद्र की उपस्थिति मंथन से पूर्व भी सिद्ध होती है। स्कंद पुराण के ही माहेश्वर खंड में गर्गाचार्य ने समुद्र मंथन का मुहूर्त निकालते हुए देवों को कहा कि इस समय सभी ग्रह अनुकूल हैं। चंद्रमा से गुरु का शुभ योग है। तुम्हारे कार्य की सिद्धि के लिए चंद्र बल उत्तम है। यह गोमंत मुहूर्त तुम्हें विजय देने वाला है।
अतः यह संभव है कि चंद्रमा के विभिन्न अंशों का जन्म विभिन्न कालों में हुआ हो। चंद्र का विवाह दक्ष प्रजापति की नक्षत्र रूपी 27 कन्याओं से हुआ जिनसे अनेक प्रतिभाशाली पुत्र हुए। इन्हीं 27 नक्षत्रों के भोग से एक चंद्र मास पूर्ण होता है।

इस मंदिर में मूर्तियों से निकलती हैं आवाजें

पत्थर की होती है, लेकिन जिस भी देवी या देवता की यह मूर्ति बनाई गई है उन देवी या देवताओं के अस्तित्व और उनकी शक्ति को नहीं नकारा जा सकता। आए दिन देवी या देवता अपने होने का अहसास कराते रहते हैं। इसी अहसास को चमत्कार कहा जाता है। ऐसा ही एक चमत्कार बिहार के बक्सर में स्थित देवी के एक मंदिर में देखने को मिला। यहां आकर आपको दुर्गा शक्ति के होने पर यकीन हो जाएगा क्योंकि यहां की मूर्तियां आपसे बात करती हैं। जब वैज्ञानिकों ने इसकी खोज की तो उन्होंने भी इस बात से इनकार नहीं किया। यह मंदिर 400 वर्ष पुराना है। प्रसिद्ध तांत्रिक भवानी मिश्र ने करीब 400 वर्ष पहले इस मंदिर की स्थापना की थी। तब से आज तक इस मंदिर में उन्हीं के परिवार के सदस्य पुजारी बनते रहे हैं। तंत्र साधना से ही यहां माता की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। दरअसल, तंत्र साधना के लिए प्रसिद्ध बिहार के इस इकलौते राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर मे यहा पर किसी के नही होने पर आवाजें सुनाई तेती हैं। इस मंदिर में दस महाविद्याओं काली, त्रिपुर भैरवी, धुमावती, तारा, छिन्न मस्ता, षोडसी, मातंगड़ी, कमला, उग्र तारा, भुवनेश्वरी की मूर्तियां स्थापित हैं। इसके अलावा यहां

काल भैरव व मातंगी भैरव की प्रतिमा स्थापित की गई है। यहां साधना करने वाले हर साधकों की हर तरह की मनोकामना पूर्ण होती है। देर रात तक साधक इस मंदिर में साधना में लीन रहते हैं। मंदिर में प्रधान देवी राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी है। तांत्रिकों की आस्था इस मंदिर के प्रति अटूट

तरह की आवाजें सुनाई देती हैं। राज राजेश्वरी त्रिपुर सुंदरी मंदिर की सबसे अनोखी मान्यता यह है कि निस्तब्ध निशा मे यहा स्थापित मूर्तियों से बोलने की आवाजें आती हैं। मध्य-रात्रि में जब लोग यहा से गुजरते हैं तो उन्हें आवाजें सुनाई पड़ती हैं। वैज्ञानिकों की मानें, तो यह कोई वहम नहीं है। इस

पर शब्द भ्रमण करते रहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह भी मान लिया है कि हा पर कुछ न कुछ अजीब घटित होता है, जिससे कि यहां पर आवाज आती है। मानो या न मानो यह एक चमत्कार ही है कि यहां अजीब तरह के आवाजें आती है जो कि किसी मानव की आवाजों की तरह की है। माना जाता है कि संपूर्ण अखंड भारत में जहां भी माता के शक्तिपीठ हैं वे सभी जागृत और सिद्ध शक्तिपीठ हैं।

क्या गाय, कुत्ते और पक्षियों को पानी पिलाने से खुल जाते हैं किस्मत के दरवाजे

हिन्दू धर्म में कुछ पशु और पक्षियों को बहुत ही शुभ माना जाता है। मान्यता के अनुसार इन्हें अन्न और जल देने से जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। प्रत्येक हिन्दू घर में जब भोजन बनता है तो पहली रोटी गाय के लिए और अंतिम रोटी कुत्ते के लिए होती है। भोजन करने के पूर्व अग्नि को उसका कुछ भाग अर्पित किया जाता है जिसे अग्निहोत्र कर्म कहते हैं। प्रत्येक हिन्दू को भोजन करते वक्त थाली में से 3 ग्रास (कोल) निकालकर अलग रखना होता है। यह तीन कोल ब्रह्मा, विष्णु और महेश के लिए या मन कथन के अनुसार गाय, कौए और कुत्ते के लिए भी रखा जा सकता है।

गाय - गाय को पत्ते पर भोजन परोसकर जल देने से भाग्य जागृत होता है। गाय में सकारात्मक ऊर्जा का भंडार होता है, जो भाग्य को जागृत करने की क्षमता रखती है। गाय को अन्न और जल देने से सभी तरह के संकट दूर होकर घर में सुख, शांति और समृद्धि के द्वारा खुल जाते हैं। प्रतिदिन गाय को रोटी खिलाने गुरु और शुक्र बलवान होता और धन-समृद्धि बढ़ती है।

कुत्ता - कुत को पत्ते पर भोजन परोसकर जल पिलाने से भैरव महाराज प्रसन्न होते हैं और हर तरह के आकस्मिक संकटों से वे भक्त की रक्षा करते हैं। कुत्ता आपकी राहु, केतु के बुरे प्रभाव और यमदूत, भूत प्रेत आदि से रक्षा करता है। कुत्ते को प्रतिदिन भोजन देने से जहां दुश्मनों का भय मिट जाता है वही व्यक्ति निडर हो जाता है। ज्योतिषी के अनुसार केतु का प्रतीक है कुत्ता। कुत्ता पालने या कुत्ते की सेवा करने से केतु का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है। पितृ पक्ष में कुत्तों को मीठी रोटी खिलानी चाहिए।

कौवा- कौए के लिए छत या भूमि पर भोजन परोसकर सकोरे में उसके लिए जल रखा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कौआ को यमदूत, पितर और देवपुत्र भी माना गया है। कौए को भविष्य में घटने वाली घटनाओं का पहले से ही आभास हो जाता है। कहते हैं कि यदि कौआ आपका भोजन ग्रहण कर ले तो समझो आपके पितर आपसे प्रसन्न और तृप्त हैं और यदि नहीं करें तो समझो कि आपके पितर आपसे नाराज और अतृप्त हैं।

चींटी - चींटियों के लिए पत्ते पर भोजन परोसा जाता। उनके बिल हों, वहां चूरा कर भोजन डाला जाता है। इससे सभी तरह के संकट मिट जाते हैं और घर परिवार में सुख एवं समृद्धि आती है।

देवता - देवबलि अर्थात पत्ते पर देवी देवतों और पितरों को भोजन परोसा जाता है। बाद में इसे उठाकर घर से बाहर उचित स्थान रख दिया जाता है।

पक्षी - पक्षियों को जल अर्पित करने से पुण्य की प्राप्ति होती है और साथ ही हमारे जीवन के संकट मिट जाते हैं। नियमित जल पिलाने से भाग्य जागृत हो जाते हैं और किसी कार्य में आ रही रुकावट दूर होती है। हर कार्य आसानी से होने लगते हैं।

कुंडली की जांचे पन्ना पहनने के नुकसान भी है

पन्ना बुध ग्रह का रत्न है। बुध ग्रह वाणी, व्यापार, बहन, बुआ, मौसी आदि का कारक है। यह रत्न गहरे से हल्के हरे रंग का होता है। पन्ना मुख्यतः 5 रंगों में पाया जाता है। तोते के पंख के समान रंग वाला, पानी के रंग जैसा, सरेस के पुष्प के रंगों वाला, मयूरपंख जैसा और हलके संदुल पुष्प के समान होता है। पन्ना रत्न किसे पहनना चाहिए और किसे नहीं यह जानना भी जरूरी है, क्योंकि कुंडली की जांच किए बगैर इसे पहनने के नुकसान भी है।

किसे पन्ना धारण करना चाहिए

- लग्न कन्या या मिथुन है तो पन्ना रत्न धारण किया जा सकता है, लेकिन यह भी देखना जरूरी है कि लग्न में कौनसा ग्रह है या लग्न के सामने सप्तम भाव में कौनसा ग्रह है।
- कुंडली को देखकर यदि किसी रोगी को पन्ना पहनाया जाता है तो उसके बल में वृद्धि होती है आरोग्य का सुख मिलता है।
- मिथुन लग्न वाले यदि पन्ना धारण करे तो पारिवारिक परेशानी कम होती है।
- कन्या लग्न यदि पन्ना धारण करे तो राज्य, व्यापार, पिता, नौकरी, शासकीय कार्यों में लाभ पा सकते हैं।
- यदि बुध की महादशा या अंतरदशा चल रही हो और बुध 8वें या 12वें भाव में नहीं हो तो पन्ना पहनने से लाभ मिलेगा।
- यदि बुध, मंगल, शनि, राहु या केतु के साथ स्थित हो या उस पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि हो तो पन्ना पहना जा सकता है। इससे नौकरी व्यवसाय में रुकावट दूर होगी।
- लाल किताब अनुसार यदि किसी घर में कोई ग्रह सोया हुआ हो तो उस घर को और उस ग्रह के प्रभाव को जाग्रत करने के लिए उस घर का रत्न धारण करें। जैसे यदि तीसरे में बुध नही है तो तीसरे के लिए बुध का रत्न धारण करें। इससे बुध के अच्छे प्रभाव मिलना प्रारंभ होंगे।
- यदि आपकी कुंडली में बुध मीन राशि का होकर बुरा प्रभाव दे रहा है तो पन्ना पहन सकते हैं।

पन्ना किसे धारण नहीं करना चाहिए

- लाल किताब के अनुसार बुध तीसरे या 12वें हो तो पन्ना नहीं पहनना चाहिए इससे नुकसान होगा।
- ज्योतिष के अनुसार 6, 8, 12 का बुध स्वामी हो तो पन्ना पहनने से अचानक नुकसान हो सकता है। इसलिए पहले किसी ज्योतिष को कुंडली दिखाएं फिर ही पहनें।
- यदि बुध की महादशा चल रही है और बुध 8वें या 12वें भाव में बैठा है तो भी पन्ना धारण करने से समस्या उत्पन्न हो सकती है।
- नकली, अशुद्ध, टूटा-फूटा, धब्बेदार, चमकदार, स्वर्ण रंग का या अन्य रंग का पन्ना धारण करने से धन, समृद्धि और संतान पक्ष का नाश हो जाता है।
- उचित धातु, नक्षत्र, दिन और ग्रहों की स्थिति देखे बगैर पन्ना धारण किया है तो वह भी नुकसानदायक सिद्ध हो सकता है।

पन्ना पहनने के फायदे

- पन्ना धारण करने से स्मरण शक्ति बढ़ती है। इससे बुद्धि तेज होने लगती है।
- हाजमा अच्छा करने के लिए भी इसे धारण करते हैं।
- नौकरी और व्यापार में उन्नति के लिए भी इसे धारण करने की सलाह दी जाती है।
- पन्ना धारण करने से वाणी प्रभावशाली हो जाती है।
- पन्ना धारण करने से अधूरी तमन्नाएं पूरी होने लगती हैं।
- घर में पन्ना रत्न उचित स्थान पर रखने से अन्न-धन्न आदि में वृद्धि होती है, सुयोग्य संतान का सुख मिलता है।
- पन्ना पहनने से यदि बुद्ध उत्तम प्रभाव देने लगता है तो जातक की बहन की जिंदगी में भी परेशानियां कम हो जाती है।

मुंबई इंडियंस ने लखनऊ सुपर जायंट्स को दी पटखनी, जसप्रीत बुमराह की शानदार गेंदबाजी

वानखेड़े (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस ने जीत का पंजा मारा है। एमआई ने रविवार को आईपीएल 2025 के 45वें मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स को 54 रनों से शिकस्त दी। एमआई ने मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में 216 का टारगेट दिया और लखनऊ टीम 161 रनों पर सिमट गई। एलएसजी के लिए आयुष बडोनी ने सबसे ज्यादा रन बनाए। उन्होंने 22 गेंदों में दो चौकों और दो सिक्स की बदौलत 35 रन जुटाए। धाकड़ पेसर जसप्रीत बुमराह ने बेहतरीन गेंदबाजी की। उन्होंने चार ओवर के स्पेल में 22 रन देकर चार विकेट चटकाए।

लक्ष्य की लक्ष्य का पीछा करते हुए शुरुआत अच्छी नहीं रही। एडेन मार्करम (9) तीसरे ओवर में आउट हो गए। जिसके बाद मिचेल मार्श ने निकोलस पूरन के साथ 42 रनों की साझेदारी की। इस दौरान मिचेल मार्श ने 24 गेंदों में 24 रन तो निकोलस ने 15 गेंदों में 27 रन बनाए हैं। वहीं कप्तान ऋषभ पंत (4) एक बार फिर फ्लॉप रहे। मार्श और बडोनी ने चौथे विकेट के लिए 46 रन जोड़कर लखनऊ की पारी संभालने की कोशिश की।

मार्श भी 12वें ओवर में पवेलियन लौट गए और एलएसजी लड़खड़ा गई। बडोनी ने 15वें ओवर में अपना विकेट गंवाया। वहीं जसप्रीत बुमराह ने 16वें ओवर में डेविड मिलर (24), अब्दुल समद (2) और आवेश खान (0) को अपने जाल में फंसाया और लखनऊ को हार की तरफ धकेल दिया। रवि बिश्नोई ने 13 रनों का योगदान दिया। जबकि जसप्रीत बुमराह के अलावा ट्रेंट बोल्ट ने शानदार बॉलिंग की। उन्होंने 20 रन देकर तीन विकेट हासिल किए। विल जैक्स ने दो और कोर्बिन बॉश ने एक शिकार किया।

वहीं इससे पहले मुंबई ने निर्धारित 20 ओवर में सात विकेट गंवाकर 215 रन जुटाए। मुंबई के लिए रयान रिकेल्टन (32 गेंदों में 58) और सूर्यकुमार यादव (28 गेंदों में 54) ने अर्धशतक ठोका। लखनऊ की ओर से मयंक यादव और आवेश खान ने दो-दो विकेट चटकाए। प्रिंस यादव, दिग्वेश राठी और रवि बिश्नोई ने एक-एक विकेट लिया। हालांकि, मुंबई की सधी हुई शुरुआत रही। रोहित शर्मा (12) ने रिकेल्टन के साथ पहले विकेट के लिए 33 रन की पार्टनरशिप की।

इसके बाद लंबे समय बाद क्रिकेट मैदान पर वापसी करने वाले मयंक यादव ने रोहित शर्मा को तीसरे ओवर में पवेलियन भेजा। रिकेल्टन 9वें ओवर में आउट हुए। इस दौरान उन्होंने 6 चौके और 4 छक्के जड़े। उन्होंने विल जैक्स (29) के साथ दूसरे विकेट के लिए 55 रन जोड़े। वह 18वें ओवर में आउट हुए। तिलक वर्मा (6) और कप्तान हार्दिक पंड्या (5) का बल्ला नहीं चला। हालांकि, सूर्या ने बेहतरीन तरीके को एक तरफ से संभाले रखा। वह 18वें ओवर में आउट हुए। उन्होंने चार चौके और इतने ही छक्के लगाए। डेब्यूटेंट कोर्बिन बॉश ने 10 गेंदों में 20 रन बनाए। नमन धीर 11 गेंदों में 25 और दीपक चाहर 1 रन बनाकर नाबाद रहे।

केकेआर/पीबीकेएस मैच बारिश के कारण रद्द, 1-1 अंक बंटा

खेल डैस्क । कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के बीच ईडन गार्डन्स में खेला गया मुकाबला बारिश के कारण रद्द हो गया है। पंजाब किंग्स ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया था। प्रियांश ने 69, प्रभसिमरन सिंह 83 ने शानदार खेल दिखाया और टीम को 201 रन तक पहुंचा दिया। जवाब में कोलकाता ने पहली ओवर ही खेली थी कि बारिश आ गई। इसके बाद बारिश रुकी ही नहीं। रात 11 बजे मैच को ऑफिशियल रद्द घोषित कर दिया गया और दोनों टीमों को 1-1 अंक दे दिया गया। पंजाब इस एक अंक के साथ अंक तालिका में जहां चौथे स्थान पर आ गया है तो वहीं, कोलकाता 7 अंकों कके साथ सातवें स्थान पर ही बनी हुई है।

पंजाब किंग्स - 201/4 (20 ओवर)

पंजाब के लिए ओपनिंग पर प्रियांश आर्य के साथ प्रभसिमरन सिंह आए। दोनों ने पहले 8 ओवर में 71 रन जोड़े। इस सीजन में ऐसा पहली बार हुआ है जब पंजाब ने पावरप्ले में विकेट नहीं गंवाया है। प्रियांश इस दौरान 150 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से रन बनाते दिखे। प्रियांश ने 27 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया। वहीं, प्रभसिमरन भी लय में दिखे। उन्होंने आईपीएल में अपना 1000 रन भी पूरा कर लिया। प्रियांश 12वें ओवर में आंद्रे रसेल की गेंद पर वैभव के हाथों कैप आऊट हो गए। उन्होंने 35 गेंदों पर 8 चौके और 4 छक्कों की मदद से 69 रन बनाए। इसी बीच प्रभसिमरन ने 38 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया। प्रभसिमरन अपना दूसरा आईपीएल शतक लगाने से चूक गए। उन्होंने 49 गेंदों पर 6 चौके और 6 छक्कों की मदद से 83 रन बनाए। मैक्सवेल फिर फ्लॉप रहे। वह चक्रवर्ती की गेंद पर 7 रन बनाकर आऊट हो गए। मार्को येन्सन 3 ही रन बना पाए। अंत में श्रेयस अय्यर ने 16 गेंदों पर 25 तो जोश इंग्लिस ने 6 गेंदों 11 रन बनाकर स्कोर 4 विकेट पर 201 रन तक पहुंचा दिया।

गोयनका खिलाड़ियों को फैसले लेने में आजादी देते हैं: पूरन

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के बल्लेबाज निकोलस पूरन ने फ्रैंचाइजी मालिक संजीव गोयनका का बचाव करते हुए कहा है कि वह खिलाड़ियों को फैसले लेन में आजादी देते हैं। गोयनका टीम की रणनीतियों में शामिल रहते हैं और माना जाता है कि उनका रवैया खिलाड़ियों की ओर सख्त रहता है। पिछले सत्र में कप्तान रहे केएल राहुल के साथ हुई उनकी बहस के बाद खास विवाद भी उठा था। राहुल को इसके बाद रिटेन नहीं किया गया था। इस बार भी वह टीम की हार के बाद कप्तान ऋषभ पंत के साथ हुई बातचीन के लिए निशाने पर रहे हैं। उन पर खेल के मामलों में बिना कारण हस्तक्षेप के आरोप लगते रहे हैं।

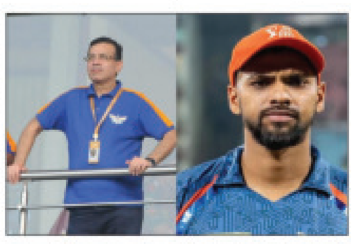

पूरन ने गोयनका के कामकाज की प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करते हैं और उन्हें खेल के आधार पर फैसले लेने की आजादी देते हैं। पूरन ने बताया कि फ्रेंचाइजी ने खिलाड़ियों को कई अवसर प्रदान किए हैं, जिसका प्रभाव पूरी टीम के प्रदर्शन पर नजर आया है। उन्होंने कहा कि इससे खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का अवसर मिला है। पूरन ने उम्मीद जताई कि इससे अब आने वाले मैचों में टीम बढ़े हुए मनोबल से उतरेगी। पूरन इस सत्र में जबरदस्त फॉर्म में हैं। इस कैरेबियाई बल्लेबाज ने 9 मैचों में 47.13 की औसत और 204.89 की प्रभावशाली स्ट्राइक रेट से 377 रन बनाए हैं और वह ऑरेंज कैच की दौड़ में बने हुए हैं।

राजस्थान रायल्स पर जीत के इरादे से उतरेगी गुजरात टाइटंस

जयपुर (एजेंसी)। आईपीएल अंक तालिका में शीर्ष पर चल रही गुजरात टाइटंस की टीम सोमवार को यहां राजस्थान रॉयल्स से खेलेगी। इस मैच में टाइटंस का लक्ष्य जीत हासिल कर नंबर एक पर बने रहना है। टाइटंस ने अब तक आठ मैचों में से छह में जीत के साथ ही अंक तालिका में सबसे अधिक 12 अंक हासिल किये है। वहीं राजस्थान रॉयल्स की टीम 4 अंकों के साथ 9वें नंबर पर है। ऐसे में इस मैच में टाइटंस की टीम जीत की प्रबल दावेदार है हालांकि रॉयल्स को घरेलू मैदान का लाभ जरुर मिलेगा पर इसके बाद भी वह काफी कमजोर है। टाइटंस की बल्लेबाजी और गेंदबाजी काफी अच्छी है। उसके बल्लेबाज साई सुदर्शन ने अब तक सबसे अधिक रन बनाये हैं और वह ऑरेंज कैप के सबसे बड़े दावेदार के तौर पर उभरे हैं। वहीं प्रसिद्ध कृष्णा सबसे अधिक विकेटों के साथ ही पर्पल कैप के नंबर एक दावेदार हैं। इसके अलावा टीम के पास कप्तान शुभमन और और जोस बटलर जैसे बल्लेबाज भी हैं। दूसरी ओर राजस्थान रॉयल्स इस सप्ताह की शुरुआत में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) से मिली हार के बाद ही प्लेऑफ की रैस से बाहर हो गयी थी। नौ मैचों में सातवीं हार के साथ ही वह अंक तालिका में नौवें स्थान पर हैं। रॉयल्स की टीम इस सत्र में करीब तीन मैचों में जीत के करीब पहुंचकर भी उसे हासिल नहीं कर पायी है। पिछले तीन मैचों में जीत के करीब पहुंची लेकिन करीबी मैचों को अपने पक्ष में मोड़ने में नाकाम रही। टीम के नियमित कप्तान संजू सैमसन चोटिल होने के कारण टीम से बाहर हैं ऐसे में रॉयल्स की कप्तानी रियान पराग करेंगे। पिछले मैच में भी पराग ही कप्तान थे। टीम की बल्लेबाजी यशस्वी जायसवाल के अलावा नितीश राणा और वैभव सूर्यवंशी पर आधारित रहेगी।

रॉयल्स की गेंदबाज वानिंदु हसरंगा, जोफ्रा आर्चर पर आधारित रहेगी जबकि गुजरात की गेंदबाजी कृष्णा के अलावा मो सिराज पर निर्भर करेगी।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं

राजस्थान रॉयल्स: रियान पराग (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, नितीश राणा, ध्रुव जुरेल, शिमरोन हेटमायर, वानिंदु हसरंगा, जोफ्रा आर्चर, महेश तीक्षाना, संदीप शर्मा, तुषार देशपांडे, शुभम दुबे, कुमार कार्तिकेय, युद्धवीर सिंह चरक, कुणाल सिंह राठौड़, आकाश मधवाल, फजलहक फारूकी, केवेना मफाका, अशोक शर्मा, वैभव सूर्यवंशी, संजू सैमसन (चोटिल)

गुजरात टाइटस: शुभमन गिल (कप्तान), जोस बटलर (विकेटकीपर), बी साई सुदर्शन, शाहरुख खान, शेरफेन रदरफोर्ड, राहुल तेवतिया, राशिद खान, कागिसो रबाडा, रविश्रीनिवासन साई किशोर, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, ईशांत शर्मा, वाशिंगटन सुंदर, ग्लेन फिलिप्स, अनुज रावत, महिपाल लोमरोर, अरशद खान, जयंत यादव, निशांत सिंधु, कुलवंत खेजरोलिया, गेराल्ड कोएट्जी, मानव सुथार, कुमार कुशाग्र, गुरनूर बराड़ और करीम जनत।

मनोज तिवारी बोले कोच पोंटिंग के कारण खिताब नहीं जीत सकेगी पंजाब

कोलकाता ।आईपीएल के इस सत्र में श्रेयस अय्यर की कप्तानी में पंजाब किंग्स ने अब तक काफी अच्छा प्रदर्शन किया है और वह खिताब की प्रबल दावेदार है। वहीं अब भारतीय टीम के पूर्व क्रिकेटर मनोज तिवारी ने पंजाब किंग्स के कोच रिकी पोंटिंग पर सवाल उठाते हुए कहा है कि पंजाब की टीम खिताब नहीं जीत पायेगी। तिवारी पोंटिंग के कोचिंग के तौर तरीके से खुश नहीं हैं। इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा है कि जिस प्रकार से पोंटिंग भारतीय खिलाड़ियों को नजरअंदाज कर रहे हैं उससे पंजाब को नुकसान होगा। तिवारी ने सोशल मीडिया में लिखा, मुझे लगता है कि इस सत्र में भी पंजाब किंग्स आईपीएल खिताब नहीं जीत पाएगी। मैंने देखा कि कोच भारतीय खिलाड़ियों से ज्यादा विदेशी खिलाड़ियों पर भरोसा कर रहे हैं। इसी कारण नेहल वडेरा और शशांक सिंह के बेहतर प्रदर्शन के बाद भी इस सत्र में रन बनाने में विफल रहे ग्लेन मैक्सवेल और मार्को येनसन को को आगे भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा, पोंटिंग भारतीय खिलाड़ियों पर कम भरोसा करते दिखे हैं।अगर वे इसी तरह बने रहे तो शीर्ष दो में जगह बनाने के बावजूद पंजाब की टीम खिताब जीत से दूर

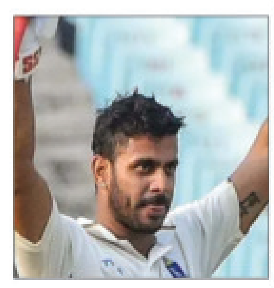

प्रियांश आर्य और अभिषेक से प्रभावित हैं स्टोइनिस

नई दिल्ली । ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट में काफी गहराई है। आईपीएल में पंजाब किंग्स की तरफ से खेल रहे स्टोइनिस ने युवा भारतीय क्रिकेटरों की जमकर प्रशंसा की है। स्टोइनिस ने कहा कि जिस प्रकार से भारतीय युवा खिलाड़ी निडर होकर खेलते हैं वह सराहनीय है। स्टोइनिस के अनुसार इसी कारण भारतीय टीम को टी20 प्रारुप से रोहित शर्मा, विराट कोहली और रविंद्र जडेजा जैसे अनुभवी खिलाड़ियों के एकसाथ संन्यास लेने से भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इनकी जिम्मेदारी बाद तिलक वर्मा, अभिषेक शर्मा और वाशिंगटन सुंदर जैसे खिलाड़ियों ने अच्छी तरह से संभाल ली है। वह पंजाब किंग्स के युवा बल्लेबाज प्रियांश आर्य के प्रदर्शन से भी प्रभावित नजर आये। स्टोइनिस ने कहा, 'भारतीय क्रिकेट में काफी गहराई है। वह हमेशा से रही है। और मेरा मानना है कि आईपीएल से उनके खिलाड़ियों को विश्व स्तर पर अपने कौशल का नमूना पेश करने का अवसर मिल रहा है।

उन्होंने कहा, ' युवा खिलाड़ी आत्मविश्वास से भरे हैं क्योंकि उन्हें अपने करियर की में ही आईपीएल जैसे टूर्नामेंट में दबाव के हालातों से गुजरने का लाभ मिल जाता है। खेल के प्रति उनका आक्रामक रवैया वास्तव में शानदार है।

पूर्व तेज गेंदबाज बोला, इस कारण असफल हो रहे वेंकटेश अय्यर

मुंबई (एजेंसी)। आईपीएल के इस सत्र में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के बल्लेबाज वेंकटेश अय्यर इस सत्र में असफल रहे हैं जबकि उन्हें फ्रैंचाईजी ने नीलामी में 23.75 करोड़ रुपये की मोटी रकम देकर खरीदा था। वह टीम के उपकप्तान होने के बाद भी 8 मैचों में केवल 135 रन ही बना पाये हैं। इस दौरान उनका औसत 22.5 का है और स्ट्राइक रेट 140 रहा है। वहीं पूर्व क्रिकेटर आरपी सिंह ने कहा है कि नीलामी में मिली अधिक मोटी रकम से उनके ऊपर अपने को साबित करने का दबाव है। इसी कारण हो रहे तनाव से वह अब तक असफल रहे हैं।

इस पूर्व गेंदबाज के अनुसार वेंकटेश अपनी बल पर टीम को जीत दिलाना चाहते हैं। सिंह ने कहा, जब किसी खिलाड़ी को नीलामी में इतनी बड़ी कीमत पर चुना जाता है, तो कहीं न कहीं आपके दिमाग में यह बात आती है कि वह या तो आपका मुख्य खिलाड़ी है या फिर कप्तानी के लिए उपयुक्त खिलाड़ी पर यहां तो वह दोनों में से कोई भी नहीं निकला। इसलिए मुझे लगता है कि नीलामी के दौरान और चयन के दौरान केकेआर की ओर से भी कुछ गलती हुई है। उन्होंने आगे कहा, आपने अपने सबसे बेहतरीन कप्तान को जाने दिया और अब वह दूसरी टीम की कप्तानी में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि इस खिलाड़ी को अभी बाहर करना एक बढ़िया विकल्प है, क्योंकि आपने उसे पहले ही कई मैच दे दिए हैं। फॉर्म की समस्या किसी भी खिलाड़ी के साथ हो सकती है पर आमतौर पर, आप जितने ज़्यादा मैच खेलते हैं, आपकी फॉर्म उतनी ही बेहतर होता जाता है। उसे बाहर करना वास्तव में समस्या का कोई समाधान नहीं है।

इस पूर्व तेज गेंदबाज ने कहा, हो सकता है कि जिस रकम में उसे खरीदा गया है, वह उसके दिमाग में चल रही हो। शायद वह सोच रहा हो कि मुझे इतनी बड़ी रकम में खरीदा गया है, मुझे अच्छा प्रदर्शन करना चाहिए और अपनी टीम को खिताब तक ले जाना चाहिए। यह अति-अपेक्षा शायद दबाव पैदा कर रही हो। साथ ही कहा कि उसे पारी की शुरुआत के लिए भेजा जाना चाहिये।

कृष्णा भविष्य में भारतीय टीम के लिए भी बड़ी भूमिका निभाएंगे : रायुडू

नई दिल्ली ।पूर्व भारतीय क्रिकेटर अंबाती रायुडू ने युवा तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा की जमकर प्रशंसा करते हुए कहा है कि वह आने वाले समय में भारतीय टीम की ओर से अहम भूमिका निभाएंगे। कृष्णा ने आईपीएल के इस सत्र में शानदार प्रदर्शन किया है। वह अभी तक सबसे अधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज होने के कारण पर्पल कैप के दावेदार हैं। गुजरात की टीम अभी अंक तालिका में शीर्ष पर है और उसकी ओर से कृष्णा ने अब तक 16 विकेट लिए हैं। कृष्णा पिछले काफी समय से फिटनेस की दिक्कतों के कारण खेल से दूसरे थे पर इस साल की शुरुआत में ही उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सिडनी टेस्ट में छह विकेट लेकर अपनी क्षमताएं दिखायीं थीं। इसके बाद से ही वह लगातार अच्छा प्रदर्शन करते रहे हैं। रायुडू ने कहा, वह शानदार लय में दिख रहे हैं। उनकी ताकत पिच पर जोरदार तरीके से गेंद फेंकना है । उनकी गेंदबाजी में बहुत सारी विविधताएं हैं, उनकी धीमी गेंद भी काफी प्रभावी है। मुझे लगता है कि वह न केवल गुजरात ही नहीं भारतीय टीम के लिए भी भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। वही पूर्व दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी मार्क बाउचर भी रायुडू से सहमत हैं और उनका भी कहना है कि कहा कि कृष्णा अच्छी गति से गेंदबाजी कर रहे हैं और गुजरात को काफी फायदा पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि वह अपनी गेंदबाजी का आनंद लेते हैं। वह विकेट लेने वाले गेंदबाज के रूप में सामने आये हैं जो दबाव हटाता है। उनकी गति बढ़ गई है। उनकी लैंथ के कारण उन्हें अच्छा उछाल मिलता है। जब वह गेंदबाजी करते हैं तो ऑफ स्टंप पर अच्छी और टाइट गेंद डालते हैं। इसलिए गेंद को ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ती।

अजय जडेजा ने केकेआर पर की भविष्यवाणी, उनके पास अभी भी खिताब को बचाने का मौका है

नई दिल्ली (एजेंसी) । भारत के पूर्व ऑलराउंडर अजय जडेजा को लगता है कि अगर कोलकाता नाइट राइडर्स इंडियन प्रीमियर लीग के 18वें संस्करण में अपने बचे हुए मुकाबलों में जीत दर्ज करती है तो उनके पास अभी भी अपने खिताब को बचाने की उम्मीद है। 9 मुकाबलों में सात अंक के साथ नाइट राइडर्स ग्रुप चरण में अपने खिताब की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही है। कोलकाता जीत की लय हासिल करने के लिए अपनी टीम में बदलाव कर रही है क्योंकि ग्रुप चरण अपने अंतिम चरण की ओर बढ़ रहा है।

केकेआर की दो मैचों की हार का सिलसिला उनके घरेलू मैदान ईडन गार्डन में लगातार बारिश के कारण खत्म हो गया और पंजाब किंग्स के खिलाफ उनका मुकाबला धुल गया। पांच मुकाबलों के साथ केकेआर को शीर्ष चार में जगह बनाने के लिए अपने प्रदर्शन को बेहतर करना होगा।

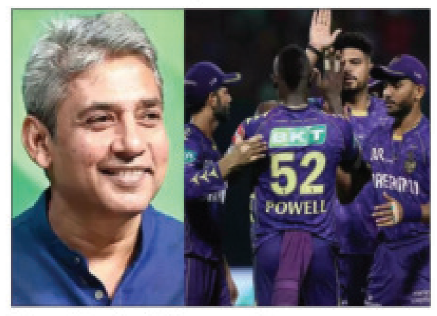

जडेजा ने जियो हॉटस्टार पर कहा, 'मुझे लगता है कि अगर केकेआर चार में से तीन मैच जीत जाता है, तो उन्हें विश्वास होगा कि उनके पास अभी भी मौका है। मुझे लगता है कि कोई भी टीम ऐसा ही करेगी। जब चार में से चार मैच होते हैं, तो इस प्रारूप के कारण यह वास्तव में कठिन हो जाता है। अगर आप बेहतर टीम हैं या आप काफी अच्छा खेल रहे हैं, तो आपको जीतना चाहिए, लेकिन ऐसे दिन भी आते हैं जब कोई आकर आपको हरा देता है। अगर आप उस गेम को जीतना चाहते हैं, तो आपको अपना विश्वास बनाए रखना होगा।'

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि कोलकाता नाइट राइडर्स उस एक अंक से खुश होगी। पंजाब किंग्स के लिए उन्हें इससे कुछ भी नहीं मिल सकता था। पंजाब परेशान होगा, लेकिन खेल ऐसे ही चलता है। कभी-कभी यह आपके पक्ष में जाता है, कभी-कभी यह आपके खिलाफ जाता है यह जानवर की प्रकृति है।'

आरसीबी के कोच द्वारा हेजलवुड की जमकर प्रशंसा

बेंगलुरु । रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के मुख्य कोच एंडी फ्लावर ने अपनी टीम के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की जमकर प्रशंसा की है। फ्लावर ने कहा कि हेजलवुड खेल के किसी भी प्रारूप में आसानी से दबाव का सामना करते हैं और जानते हैं कि कब कैसे गेंदबाजी करनी है। आरसीब के अंक तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंचने में भी हेजलवुड की अहम भूमिका रही है। इस गेंदबाज ने पिछले मैच में राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ अपने अंतिम दो ओवरों में केवल सात रन देकर 4 विकेट लिए थे। फ्लावर ने कहा, 'मैं उनके आखिरी दोनों ओवरों की बात करूंगा क्योंकि उनके दो ओवरों में केवल सात रन गए और उन्होंने तीन विकेट लिए। उन दोनों ओवरों से पता चलता है कि वि किस स्तर का गेंदबाज है। उसके पास किसी भी प्रारूप में खेलने की क्षमता है। मुझे पता है कि उसे एक ही लाइन-लेंथ पर गेंदबाजी के लिए जाना जाता है पर उसके पास हर तरह की गेंदबाजी करने की क्षमता है। वहीं जिम्बाब्वे के इस पूर्व कप्तान ने कहा, 'उसने यॉर्कर, वाइड यॉर्कर और धीमी गेंदों का शानदार मिश्रण किया। उसे पता है कि कब किस तरह की गेंदबाजी करनी है। फ्लावर ने कहा कि तीन अलग-अलग तरह की तेज गेंदबाजी आक्रमण आरसीबी की सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि भुवनेश्वर कुमार का भी प्रदर्शन इस सत्र में अच्छा रहा है।

पंजाब किंग्स के प्रभसिमरन सिंह ने आईपीएल में पूरे किए 1,000 रन

कोलकाता (पश्चिम बंगाल) (एजेंसी) । पंजाब किंग्स के बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह ने अपने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) करियर में 1,000 रन पूरे कर लिए हैं। प्रभसिमरन ने कोलकाता के ईडन गार्डन्स में गत चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ आईपीएल मैच के दौरान यह उपलब्धि हासिल की। मैच के दौरान प्रभसिमरन ने 49 गेंदों में छह चौकों और छह छक्कों की मदद से 83 रनों की शानदार पारी खेली। उन्होंने 169.39 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए। उनकी पारी दो भागों में थी। अपनी पहली 32 गेंदों में उन्होंने 106.25 के स्ट्राइक रेट से 34 रन बनाए। लेकिन इसके बाद अगली 17 गेंदों में उन्होंने 288.23 के स्ट्राइक रेट से 49 रन बनाए। इस सीजन में उन्होंने 9 पारियों में 32.44 के औसत से 292 रन बनाए हैं, जिसमें दो अर्धशतक शामिल हैं और उनके रन 168.78 के स्ट्राइक रेट से आ गया है। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 83 है।

कुल मिलाकर 43 मैचों में उनके 24.37 के औसत और 151.88 के स्ट्राइक रेट से 1,048 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और पांच अर्द्धशतक शामिल हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 103 रहा। 2023 सीजन उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ रहा, जिसमें उन्होंने 14 मैचों में 25.57 की औसत और 150.42 की स्ट्राइक रेट से 358 रन बनाए, जिसमें एक शतक और अर्धशतक शामिल है और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 103 रहा।

मैच की बात करें तो कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के बीच ईडन गार्डन्स में खेला गया मुकाबला बारिश के कारण रद्द हो गया है। पंजाब किंग्स ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया था। प्रियांश ने 69, प्रभसिमरन सिंह 83 ने शानदार खेल दिखाया और टीम को 201 रन तक पहुंचा दिया। जवाब में कोलकाता ने पहली ओवर ही खेली थी कि बारिश आ गई। इसके बाद बारिश रुकी ही नहीं। रात 11 बजे मैच को ऑफिशियल रद्द घोषित कर दिया गया और दोनों टीमों को 1-1 अंक दे दिया गया। पंजाब इस एक अंक के साथ अंक तालिका में जहां चौथे स्थान पर आ गया है तो वहीं, कोलकाता 7 अंकों कके साथ सातवें स्थान पर ही बनी हुई है।

आखिर क्या है शिमला समझौता, जिसे पाकिस्तान तोड़ने की दे रहा धमकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने भारत के साथ 1972 में हुए ऐतिहासिक शिमला समझौते को 'सस्पेंड' (स्थगित) करने की घोषणा कर दी है। यह फैसला पाकिस्तान की राष्ट्रीय सुरक्षा समिति (एनएससी) की आपात बैठक के बाद सामने आया, जिसे जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले और भारत की कड़ी कार्रवाई के जवाब में लिया गया।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शाहबाज़ शरीफ ने बैठक के बाद कहा कि भारत ने अंतरराष्ट्रीय कानून और संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों का उल्लंघन किया है, इसलिए पाकिस्तान अब शिमला समझौते समेत सभी द्विपक्षीय समझौतों को निलंबित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

जानें क्या है शिमला समझौता?

1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद 2 जुलाई 1972 को शिमला में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच यह समझौता हुआ था। इसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच शांति और स्थिरता स्थापित करना था।

इस समझौते के तहत भारत और पाकिस्तान ने सभी मुद्दे आपसी बातचीत से सुलझाने पर सहमति जताई। बल प्रयोग न करने का संकल्प लिया। नियंत्रण रेखा (एलओसी) की पुनः स्थापना की गई। भारत ने 93,000 पाकिस्तानी युद्धबंदियों को बिना शर्त रिहा किया।

भारत की प्रतिक्रिया क्या होगी?

कूटनीतिक सूत्रों के अनुसार, भारत फिलहाल आधिकारिक प्रतिक्रिया देने से बच रहा है, लेकिन यह स्पष्ट है कि अगर पाकिस्तान समझौते को औपचारिक रूप से रद्द करता है, तो भारत भी किसी समझौते या सीमा अनुबंध से बंधा नहीं रहेगा। इससे नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर तनाव और बढ़ सकता है।

रक्षा विश्लेषकों का मानना है कि यह पाकिस्तान की कूटनीतिक हताशा को दर्शाता है। अगर वह शिमला समझौते को रद्द करता है, तो वह यह स्वीकार करेगा कि वह अब कश्मीर मुद्दे को बातचीत से नहीं, बल्कि टकराव से सुलझाना चाहता है। वरिष्ठ सामरिक विश्लेषक के अनुसार, शिमला समझौते का टूटना न केवल द्विपक्षीय वार्ता को समाप्त करेगा, बल्कि यह सीमा पर संघर्ष की संभावनाएं भी बढ़ाएगा। पाकिस्तान खुद को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कमजोर स्थिति में धकेल रहा है।

ऐसे हालात में शिमला समझौते को निलंबित करने की पाकिस्तान की धमकी फिलहाल एक राजनीतिक दबाव की रणनीति प्रतीत हो रही है। बावजूद इसके यदि यह वास्तव में रद्द किया गया, तो इसका असर द्विपक्षीय संबंधों, सीमाई शांति और दक्षिण एशिया की स्थिरता पर गहरा पड़ेगा।

रूस-यूक्रेन जंग में शामिल हुआ केरल का युवक, घायल हो वापस घर लौटा

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। केरल का एक युवक, जैन टी कुरियन, जो रूस की सेना द्वारा यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में भेजे जाने पर मजबूर हुआ था, अंततः अपनी मातृभूमि लौट आया है। 27 वर्षीय जैन, जो रूस के युद्ध में घायल हो गया था की गुरुवार को घर वापसी हुई है। उसकी घर वापसी भारतीय दूतावास की मदद और उनके परिवार द्वारा की गई लगातार कोशिशों से संभव हो सकी है। यहां बताते चलें कि जैन टी कुरियन त्रिशूर जिले के वडक्कनचेरी का निवासी है और रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान जनवरी में एक ड्रोन हमले में गंभीर रूप से घायल हो गए थे। इस हमले में उनके रिश्तेदार बिनिल टी बी (32) की मौत हो गई थी। हालांकि, बिनिल का शव अब तक भारत नहीं पहुंच पाया है। जैन को इलाज के लिए रूस में चार महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा और उन्हें यह डर था कि इलाज के बाद उन्हें फिर से युद्ध में भेज दिया जाएगा। जैन ने बताया कि 6 जनवरी को उन्हें रोस्तोव-ऑन-डॉन के पास चोटें आई थीं, जो मॉस्को से लगभग 1,000 किलोमीटर दूर स्थित है। वहां उनके पेट में गंभीर चोटें आईं, और उन्हें कई सर्जरी से गुजरना पड़ा। जैन को 22 अप्रैल को अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद फिर से युद्ध में भेजने का आदेश दिया गया। इसके बाद उन्होंने भारतीय दूतावास को सूचित किया, जिसके बाद उनकी वापसी सुनिश्चित हो पाई।

पारिवारिक ने ली राहत की सांस

जैन के घर लौटने पर उनके परिजनों ने राहत की सांस ली और उन्हें गले से लगा लिया। उनका परिवार लंबे समय से उनके सुरक्षित घर लौटने की प्रार्थना कर रहा था। जैन और बिनिल उन भारतीयों में शामिल थे, जिन्होंने पिछले साल अप्रैल में रूस में सेना के सहायक कार्यों के लिए नौकरी की उम्मीद में कदम रखा था। बताया जा रहा है कि रूस पहुंचते ही उन्हें भारतीय पासपोर्ट छोड़ने, स्थायी निवास लेने, और सेना में भर्ती होकर युद्ध में जाने के लिए मजबूर किया गया था। जैन और बिनिल ने अपनी जान को खतरे में बताते हुए कई बार मदद की गुहार लगाई थी।

मुंबई में ईडी दफ्तर वाली इमारत में भीषण आग, दस्तावेजों के जलने की आशंका

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में रविवार तड़के एक बड़ी घटना सामने आई जबकि दक्षिण मुंबई के बेलार्ड एस्टेट इलाके में स्थित कैसर-ए-हिंद इमारत में भीषण आग लग गई। इसी बहुमंजिला इमारत में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) का कार्यालय भी स्थित है, जहां कई प्रमुख राजनेताओं और व्यापारियों के खिलाफ जांच से जुड़े अहम दस्तावेज रखे हुए हैं। नगर निगम अधिकारियों के अनुसार, रात करीब 2:31 बजे करिंभॉय रोड पर ग्रैंड होटल के पास स्थित कैसर-ए-हिंद इमारत में आग लगने की सूचना फायर ब्रिगेड को मिली। तुरंत ही फायर ब्रिगेड की दस से अधिक गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने के लिए अभियान शुरू किया। आग धीरे-धीरे बढ़कर लेवल-2 श्रेणी की हो गई, जिसे बड़ी आग माना जाता है। फायर ब्रिगेड अधिकारियों ने बताया कि आग मुख्य रूप से पांच मंजिला इमारत की चौथी मंजिल तक सीमित रही। राहत की बात यह रही कि इस घटना में किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं मिली है। आग पर काबू पाने के लिए आठ दमकल गाड़ियों, छह जंबो टैंकरों, एक एरियल वॉटर टावर टेंडर, एक श्वास तंत्र वैन, एक बचाव वैन और एक त्वरित प्रतिक्रिया वाहन के साथ 108 सेवा की एम्बुलेंस को भी तैनात किया गया। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। अधिकारियों ने बताया कि मामले की जांच जारी है और यह भी देखा जा रहा है कि आग से ईडी दफ्तर के महत्वपूर्ण दस्तावेजों को कितना नुकसान पहुंचा है।

5 साल बाद फिर शुरू होगी कैलाश यात्रा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस साल फिर से कैलाश मानसरोवर की यात्रा शुरू होने जा रही है। भारतीय विदेश मंत्रालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार जून से अगस्त माह के बीच मानसरोवर कैलाश यात्रा शुरू होगी। 5 साल से यह यात्रा बंद थी। चीन और भारत के बीच रिश्ते सुधारने के लिए, सीमा पर तनाव कम करने के लिए एक बार फिर कैलाश यात्रा शुरू करने का निर्णय दोनों देशों द्वारा लिया गया है। मानसरोवर की यात्रा करने वाले यात्रियों को उत्तराखंड के लिपुलेख दर्रे और सिक्किम के नाथुला दर्रे से होकर चीन अधिकृत तिब्बत, कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील तक यात्रियों को जाने की सुविधा होगी। मानसरोवर की यात्रा शुरू होने से एक बार फिर चीन और भारत के संबंध सामान्य होने की दिशा में इस महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

पाकिस्तान सीजफायर तोड़ने से नहीं आ रहा बाज : एलओसी पर तीसरे दिन भी हुई गोलीबारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान की सेना ने एक बार फिर सीजफायर का उल्लंघन करते हुए जम्मू-कश्मीर में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर बिना उकसावे के गोलीबारी की। शनिवार देर रात टुटमारी गली और रामपुर सेक्टर में पाकिस्तान की ओर से छोटे हथियारों से फायरिंग की गई, जिसका भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब दिया। लगातार तीसरे दिन संघर्षविराम का उल्लंघन किया गया है। रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि 26-27 अप्रैल की दरमियानी रात को पाकिस्तान ने कई चौकियों से गोलीबारी की। भारतीय सैनिकों ने प्रभावी ढंग से जवाब देते हुए स्थिति को नियंत्रण में रखा। हाल के दिनों में पाकिस्तान द्वारा 24 अप्रैल को भी इसी तरह की फायरिंग की गई थी। हालांकि, इन घटनाओं में अब तक किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। यहां बताते चलें कि ये घटनाएं ऐसे समय में हो रही हैं जबकि घाटी में पहले से ही तनाव का माहौल है। 22 अप्रैल को पहलगाम की बैसरन घाटी में हुए आतंकी हमले में लश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों ने 26 निर्दोष नागरिकों की नृशंस हत्या कर दी थी, जिससे पूरे देश में आक्रोश फैल गया।

आतंकवादियों को भारत हर संभव सजा देकर रहेगा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस हमले की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि आतंकवादियों, उनके मददगारों और समर्थकों को दुनिया के किसी भी कोने में ढूंढकर सजा दी जाएगी।

जांच में खुलासा : आतंकियों की मदद कर रहे थे 15 कश्मीरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहलगाम के आतंकी हमले को लेकर एजेंसियों का भी दावा है कि इस हमले में कश्मीर के कुछ स्थानीय लोगों की भी मिलीभगत थी। इलेक्ट्रिक सर्विलांस के जरिए कम से कम 15 कश्मीर ओवरग्राउंड वर्कर्स और आतंकियों की पहचान हुई है जो कि पाकिस्तानी आतंकियों की मदद कर रहे थे। एजेंसियों का कहना है कि इन लोगों ने आतंकियों के लिए लॉजिस्टिक की व्यवस्था की। इसके अलावा पाकिस्तान से आए हथियारों को भी अपने पास रखा। आतंकी हमले को ऐसे वीडियो सामने आ रहे हैं जिन्हें देखकर लोगों के दिल दहल गए। सूत्रों का कहना है कि एजेंसियों ने कम से कम पांच मुख्य आरोपियों की धरपकड़ की कोशिश की जिनमें से तीन को उठा लिया गया। पुलिस अन्य दो ओजीडब्लू की तलाश कर रही है। पता चला है कि कश्मीर में स्ट्राइक के दिन वे भी उसी इलाके में मौजूद थे। उनके मोबाइल फोन भी चालू थे। इलेक्ट्रिक सर्विलांस से पता चला है कि सभी मुख्य आरोपी पाकिस्तानी आतंकियों के बारे में आपस में मोबाइल से चैट कर रहे थे। सूत्रों का कहना है कि कम से कम 200 लोगों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया गया है। सूत्रों का कहना है कि इस बात के पुख्ता सबूत मिल रहे हैं कि ये पांच ओवरग्राउंड वर्कर आतंकी हमले में बड़ी भमिका निभा रहे थे। जम्मू-कश्मीर पुलिस, इंटेलिजेंस ब्यूरो रॉ और एनआईए की टीम इनसे पूछताछ कर रही है। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने साउथ कश्मीर के कम से कम 15 लोगों की लिस्ट तैयार की है जो कि आतंकियों का सहयोग करते हैं। कश्मीर में पिछले कुछ सालों में हुए हमलों में भी उनकी सक्रिय भूमिका थी। वे जंगलों में आतंकियों के लिए खाने-पीने का इंतजाम, हथियार और लॉजिस्टिक की व्यवस्था करते हैं।

ममता की ममता- पहलगाम हमले के मृतक कमांडो की पत्नी को दी सरकारी नौकरी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममत बनर्जी ने लंबे समय से पश्चिम बंगाल में जमीनी पकड़ बनाए हैं। इसकी मूल वजह ये है ममता बनर्जी आम लोगों से सीधे रिश्ता बनाए हुए हैं। हाल ही में पहलगाम आतंकी हमले के मृतक परिवारों को 10 लाख रुपये की आर्थिक सहायता देने का उन्होंने ऐलान किया है।

मुख्यमंत्री ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए राज्य के तीन लोगों के परिवारों और उधमपुर मुठभेड़ में मारे गए सेना के हवलदार के परिजनों को 10-10 लाख रुपये का मुआवजा देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार नादिया जिले के तेहट्टा के हवलदार झंटू अली शेख की पत्नी को नौकरी भी देगी। वह कमांडो थे। बनर्जी ने कहा कि राज्य सरकार पहलगाम के पीड़ितों में से एक बितान अधिकारी के पिता को 10,000 रुपये की पेंशन देगी।

ममता बनर्जी ने पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए बितान अधिकारी के पिता को 10 हजार रुपये महीने पेंशन देने का ऐलान किया है। 40 साल के बितान अमेरिका से अपनी पत्नी के साथ भारत घूमन आए थे। बितान टीसीएस में नौकरी करते थे। वह अपनी पत्नी और बच्चे के साथ पहलगाम पहुंचे थे। फ्लोरिडा रहने वाले बितान की पत्नी सोहिनी और तीन साल के बेटे के सामने आतंकियों ने पिता को गोली मारी थी। ममता बनर्जी ने बितान के पिता को पेंशन का ऐलान किया है। ममता बनर्जी ने कहा कि मैं मुर्शिदाबाद जाऊंगा और पीड़ित परिवारों को मुआवजा दूंगी। पहलगाम आतंकी हमले में पश्चिम बंगाल के तीन लोगों की मौत हुई थी। इसमे बितान अधिकारी, समीर गुहा और मनीष रंजन शामिल हैं। पहलगाम आतंकवादी हमले के ठीक बाद गुरुवार की सुबह उधमपुर जिले के डुडु-बसंतगढ़ क्षेत्र में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ हुई थी। इसमें सेना के विशेष बल कमांडो 6 पैरा के हवलदार झंटू अली शेख शहीद हो गए थे। इस ऑपरेशन में उनके दो साथी गंभीर रूप से घायल हो गए।

समाजवादी पार्टी के सांसद रामजी लाल सुमन के काफिले पर फेंके गये टायर, बाल-बाल बचे

लखनऊ (एजेंसी)। मेवाड़ के शासक रहे राणा सांगा के खिलाफ टिप्पणी को लेकर निशाने पर आये समाजवादी पार्टी (सपा) के राज्यसभा सदस्य रामजी लाल सुमन के काफिले पर रविवार को अलीगढ़ और दिल्ली के बीच गभाना टोल बूथ पर करणी सेना के कार्यकर्ताओं ने कथित रूप से टायर फेंके। इसकी वजह से कई वाहन आपस में टकरा गये। इस घटना में सुमन बाल-बाल बच गये।

अधिकारियों ने बताया कि सपा के राज्यसभा सदस्य का काफिला आगरा से बुलंदशहर के सुनहेरा गांव जा रहा था तभी गभाना टोल बूथ पर कुछ प्रदर्शनकारियों ने काफिले पर टायर फेंके जिससे टोल प्लाजा पर धीमी गति से चल रहे कई वाहन आपस में टकरा गये और बड़ी संख्या में मौके पर तैनात पुलिसकर्मियों ने स्थिति को नियंत्रित किया। अपर पुलिस अधीक्षक (नगर क्षेत्र) एम.एस. पाठक ने बताया, सपा राज्यसभा सदस्य रामजी लाल सुमन को इलाके से सुरक्षित निकाल लिया गया। इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ है। कई प्रदर्शनकारियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। टोल बूथ पार करने और बुलंदशहर जिले में प्रवेश करने के बाद पुलिस ने सुमन को आगे बढ़ने से रोक दिया। बुलंदशहर के सुनहेरा गांव में पिछली 21 अप्रैल की रात दो पक्षों के बीच संघर्ष में शीला नामक एक महिला की हत्या कर दी गयी थी। इस घटना में तीन अन्य व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

सुमन ने संवाददाताओं से कहा कि वह बुलंदशहर के सोहाना गांव जा रहे हैं, जहां से पिछले कुछ दिनों में दलितों के खिलाफ कथित अत्याचार की खबरें सामने आई हैं। कानून व्यवस्था की स्थिति पर चिंता जताते हुए सुमन ने कहा, राज्य में कानून व्यवस्था ध्वस्त हो गई है और यह तब तक जारी रहेगी जब तक सरकार ऐसे अपराध करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फैसला नहीं करती। उन्होंने कहा कि उन्हें पता नहीं है कि पुलिस उन्हें प्रभावित क्षेत्र का दौरा करने देगी या नहीं।

भारत-नेपाल सीमा पर हाई अलर्ट, श्रावस्ती में घर घर तलाशी अभियान

श्रावस्ती(ईएमएस)। उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जनपद के भारत नेपाल सीमा पर तैनात सशस्त्र बलों को संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के निर्देश दिए गए हैं। नेपाल से भारत में आवाजाही करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की कड़ी तलाशी ली जा रही है। सुरक्षा बलों के स्तर से सीमा के सभी महत्वपूर्ण रास्तों और चेक पोस्टों पर गहन चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद देशभर में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर सतर्कता बढ़ा दी गई है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश के श्रावस्ती जनपद में स्थित भारत-नेपाल सीमा पर भी हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। सुरक्षा एजेंसियों ने सीमा पर चौकसी और निगरानी बढ़ा दी है। स्थानीय पुलिस प्रशासन भी पूरी तरह सतर्क है और सीमा के आस-पास के गांवों में भी संदिग्ध व्यक्तियों की तलाश जारी है। खुफिया एजेंसियों को भी सक्रिय कर दिया गया है, ताकि किसी भी तरह की अनहोनी को समय रहते रोका जा सके। श्रावस्ती पुलिस अधीक्षक घनश्याम चौरसिया ने बताया कि सीमा पर आने-जाने वालों का पूरा विवरण लिया जा रहा है और हर संदिग्ध गतिविधि की जांच की जा रही है। प्रशासन ने आम जनता से भी अपील की है कि अगर कोई संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि दिखाई दे तो तुरंत पुलिस को सूचित करें। बता दें कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम आतंकी हमले ने देश भर में सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है, जिसके चलते संवेदनशील इलाकों में अतिरिक्त सतर्कता बरती जा रही है।

चारधाम यात्रा: भीड़ के सैलाब को संभालने और व्यवस्था बनाए रखने की योजना तैयार

देहरादून (एजेंसी)। चारधाम यात्रा में आने वाली भीड़ को संभालने और व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तराखंड सरकार ने विशेष योजना तैयार की है। चारधाम यात्रा मार्ग यातायात और यात्री सुविधाओं की पड़ताल के लिए सरकार ने परिवहन अधिकारियों की टीम को उतार दिया। परिवहन सचिव बृजेश संत ने चारधाम यात्रा रूट पर यातायात व्यवस्थाओं की निगरानी और अध्ययन के लिए सरकार ने परिवहन विभाग की तीन सदस्यीय टीम का गठन किया है। उपायुक्त-परिवहन राजीव मेहरा की अगुआई में बनी टीम में चारधाम यात्रा के नोडल अफसर देहरादून के आरटीओ-प्रशासन संदीप सैनी और पौड़ी के आरटीओ द्वारका प्रसाद भी इस टीम में है। शनिवार को टीम केदारनाथ रूट पर रवाना हो गई।

एसएसपी अजय सिंह ने आगामी चारधाम यात्रा में वाहनों का दबाव बढ़ने की स्थिति में रूट डायवर्जन प्वाइंट चिह्नित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने यात्रा मार्गों पर साइन बोर्ड लगाने के लिए भी कहा। एसएसपी ने शनिवार को शिमला बाईपास नया गांव में यात्री रजिस्ट्रेशन सेंटर और होल्डिंग एरिया का निरीक्षण किया। सरकार ने चारधाम यात्रा पर आने वाले यात्रियों और ड्राइवरों के लिए सुझाव पत्र बनाया है। यात्रियों से अपील है कि वह ऐसे वाहनों से यात्रा ना करें, जिनके टायर घिसे या रिट्रेडेड हों। ड्राइवरों को चप्पल पहनकर वाहन नहीं चलाने की सलाह दी है। यह जानकारी यात्रा के नोडल अधिकारी एवं आरटीओ देहरादून संदीप सैनी ने दी है।

इसके साथ ही पार्किंग सहित अन्य सुविधाओं का ब्योरा भी जुटा लिया गया है। बीते वर्षों से सबक लेते हुए इस बार सरकार कोई रिस्क नहीं लेना चाहती है। इस बार ऐसा न हो, इसके लिए सरकार की ओर से पहले से तैयारी कर ली गई है। धामों में अत्यधिक भीड़ बढ़ने और आपात स्थिति में श्रद्धालुओं को चिह्नित हॉल्टिंग प्वाइंट पर रोक दिया जाएगा। भीड़ प्रबंधन का यह कार्य राजधानी देहरादून में पटेल भवन में बनाए गए चारधाम यात्रा कंट्रोल रूम से किया जाएगा। इसको लेकर उत्तराखंड पुलिस विभाग ने अपनी तैयारी पूरी कर ली है। पुलिस महानिदेशक दीपम सेठ ने कहा कि चारधाम यात्रा में भीड़ प्रबंधन को लेकर शासन स्तर पर निर्देश प्राप्त हुए थे। इसके क्रम में पटेल भवन में चारधाम यात्रा कंट्रोल रूम की स्थापना कर ली गई, जो शीघ्र ही काम करने लगेगा। इसके साथ ही भीड़ प्रबंधन को लेकर भी कार्ययोजना तैयार की गई है। कंट्रोम रूम चारधाम यात्रा से जुड़े जिलों से समन्वय बनाते हुए हुए कार्य करेगा।

लोग धैर्य रखें, सरकार पहलगाम हमले के गुनाहगारों पर कर रही कार्रवाई : जनरल वी के सिंह

नई दिल्ली (एजेंसी)। मिजोरम के राज्यपाल जनरल वी के सिंह ने पहलगाम आतंकी हमले को लेकर रविवार को जनता से धैर्य रखने की अपील की और कहा कि सरकार कार्रवाई कर रही है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और पूर्व सेना प्रमुख सिंह विक्रम विश्वविद्यालय में एक समारोह को संबोधित करने के लिए उज्जैन में थे।

सिंह ने पहलगाम में पर्यटकों की नृशंस हत्या के बारे में पूछे जाने पर संवाददाताओं से कहा, ''... सरकार इस पर कुछ कार्रवाई कर रही है। हम सभी को धैर्य रखना चाहिए और भविष्य में सतर्क रहना चाहिए, ताकि अगर हमें कुछ भी असामान्य दिखाई दे, तो हम पहले से ही इसका पता लगा सकें।''

भारत और पड़ोसी देश के बीच तनाव के बीच पाकिस्तान की प्रतिक्रिया के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में सिंह ने कहा, ''आप पाकिस्तान के बारे में बात क्यों कर रहे हैं? हमारे देश के बारे में बात करें।''

विश्वविद्यालय के छात्रों का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि उन्होंने भविष्य में देश को चलाने वाले युवाओं से कहा है कि उन्हें खुद को सशक्त बनाने की जरूरत है। विश्वविद्यालय में कार्यक्रम के बाद उन्होंने प्रसिद्ध महाकालेश्वर मंदिर में पूजा-अर्चना की।

कश्मीर के अनंतनाग जिले के पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने 26 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी थी। इसके बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कदम उठाए हैं, जिनमें 1960 की सिंधु जल संधि को स्थगित रखना भी शामिल है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पिछले दिनों कहा था कि भारत ऐसा बदला लेगा जिसकी पाकिस्तान ने कल्पना भी नहीं की होगी। उन्होंने कहा था, ''पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। आतंकियों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलकर रहेगी। इस हमले में किसी ने अपना बेटा खोया, किसी ने भाई तो किसी ने जीवनसाथी खोया। आज पूरे देश में इस बात का आक्रोश है।

युद्ध के भय से सहमें सीमा करीब के गांव, बंकरों की सफाई और फसलों की कर रहे जल्द कटाई

जम्मू (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान में बढ़ते तनाव के बीच जम्मू-कश्मीर की अंतरराष्ट्रीय सीमा (आईबी) और नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास बसे गांवों में चिंता और भय का माहौल गहरा गया है। सीमा से सटे इलाकों में लोग सतर्क हो गए हैं। कई जगहों पर ग्रामीणों ने अपने बंकरों की सफाई भी करना शुरु कर दी है। यही नहीं गेहूं की फसल को भी समय से पहले काटी जा रही है ताकि किसी भी आपात स्थिति में सुरक्षित रह सकें।

गौरतलब है कि भारत 3,323 किलोमीटर लंबी सीमा पाकिस्तान के साथ साझा करता है, जिसमें जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में 221 किलोमीटर अंतरराष्ट्रीय सीमा और 744 किलोमीटर नियंत्रण रेखा शामिल है। वर्ष 2021 के बाद संघर्षविराम उल्लंघन में गिरावट आई थी, लेकिन हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने फिर से चिंता बढ़ा दी है। इस हमले में दो दर्जन से ज्यादा निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी गई थी, जिससे पूरे देश में आक्रोश व्याप्त है।

सरकार ने पहले ही सीमा के पास रहने वालों की सुरक्षा के लिए व्यापक तैयारी कर रखी है। दिसंबर 2017 में जम्मू, कठुआ और सांबा जिलों में 14,460 व्यक्तिगत और सामुदायिक बंकरों के निर्माण को मंजूरी दी गई थी। इसके बाद 4,000 से अधिक अतिरिक्त बंकरों को भी स्वीकृति दी गई।

आरएसपुरा सेक्टर के त्रेवा गांव की पूर्व सरपंच बलबीर कौर ने स्थानीय मीडिया से कहा, कि कोई नहीं जानता कि आगे क्या होगा। हमने अंडरग्राउंड बंकर तैयार करने का फैसला किया ताकि सीमा पार से गोलाबारी की स्थिति में खुद को सुरक्षित कर सकें। उन्होंने कहा कि हम अपनी भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। बंकर सफाई अभियान की निगरानी कर रहीं बलबीर कौर का कहना है कि हम चाहते हैं कि सरकार सीमा पार बैठे आतंकवादियों और उनके आकाओं के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई करे। जिन्होंने निर्दोषों की हत्या की है, उनका पूरी तरह से सफाया होना चाहिए। वहीं ग्रामीणों ने बताया कि गांवों में गेहूं की कटाई का काम भी तेजी से चल रहा है। महिलाएं बंकरों की सफाई कर रही हैं और पुरुष खेतों में फसल काटने में व्यस्त हैं। हम बिना हथियार के सैनिक हैं और देश की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

सांबा, कठुआ, पुंछ और राजौरी जिलों से भी ऐसी ही रिपोर्ट सामने आ रही हैं, जहां ग्रामीण सतर्कता बरत रहे हैं। पुंछ जिले के सलोत्री गांव के निवासी बताते हैं कि हम हमेशा की तरह अपने सैनिकों के साथ मजबूती से खड़े हैं और पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार हैं। वर्तमान में जम्मू क्षेत्र की सीमाएं शांत हैं, लेकिन घाटी में हाल के दिनों में संघर्षविराम उल्लंघन की घटनाएं बढ़ी हैं।

क्या कहती है खुफिया रिपोर्ट

यहां खुफिया रिपोर्ट की बात करें तो दक्षिण कश्मीर के पहलगाम और अनंतनाग जिलों में आतंकियों की घुसपैठ और आतंकी नेटवर्क को फिर से सक्रिय करने की कोशिशें तेज हो गई हैं। इसी को देखते हुए भारतीय सुरक्षाबलों ने इलाके में गश्त और निगरानी को और अधिक बढ़ा दिया है।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाई पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**